Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 अक्टूबर 2022

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 6 अंक 10, अक्टूबर 2022

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

मेरे प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

इस माह असत्य पर सत्य, अहंकार पर संस्कार और अन्याय पर न्याय की जीत का प्रतीक दशहरा एवं अंधकार पर प्रकाश, उमंग व उत्साह की अभिव्यक्ति का पर्व दीपावली त्योहार है. इस अवसर पर हम अपनी बुरी आदतों को त्याग करें. दीपावली में नये वस्त्र के साथ नई किताबें ले व पढ़ें .आपकी त्रैमासिक परीक्षा भी आने वाली है खूब मन लगाकर तैयारी करें. अपनी पढ़ाई में भाषा के साथ मूलभूत गणितीय कौशल विकास के लिए अतरिक्त प्रयास हेतु अपने साथियों की मदद करें.

किलोल पत्रिका आपकी भाषागत अवधारणा के साथ पढ़ने में रुचि बढ़ाने हेतु एक कुँजी का काम करती है. छोटी छोटी कविता कहानी लिख कर आप किलोल पत्रिका अपनी खुशियां बांटे व बढ़ाये.

और हाँ ! आपके एवं आपके बच्चों के द्वारा लिखे जा रहे आलेखों को नियमित रूप से हमें भेजें.

आपकी अपनी

डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा

- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.

सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

माँ 7

भारत राष्ट्र प्रेम संस्कृति का ख़जाना है 9

प्यारी धूप 11

पंचतंत्र की कथाएँ 12

मेरी बगिया 14

नदिया 15

मोटू भैया 16

अधूरी कहानी पूरी करो 17

चींटी और टिड्डा 17

गौरव पाटनवार 'कान्हा' कक्षा - दूसरी, ग्राम - बिटकुला, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 17

जिज्ञासा वर्मा, कक्षा 11 वीं, रतनपुर, जिला- बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 18

सुधारानी शर्मा मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी 18

अनन्या तंबोली कक्षा सातवीं द्वारा पूरी की गई कहानी 19

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 20

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 21

न्याय 21

कृष्ण जन्म 22

गाय 23

बादल 25

देश भक्त 26

बुजुर्ग 27

अमर दीप 30

विज्ञान हाइकु 31

उपहार 34

बेटी 36

बालकहानी : एहसान 38

चाँद 40

कर लो दुनिया मुट्ठी में 42
खेलें खेल 45
केवट और मछली 47
ऐलोवेरा 48
देखो! मैने बेली रोटी 49
शिक्षक की शिक्षा 50
कोयल और कौवा 52
निराली चिड़िया 53
गुरुवर जलते दीप से 54
बाल गणेश 56
शिक्षक होते हैं महान 57
शिक्षक दिवस पर समर्पित मेरी कलम से 59
शीश झुकाते 61
कभी नहीं वे लड़ते 63
नादान बचपन 64
सतरंगी जीवों की आवाज 66
मैं मैं का विकार अज्ञान का ढारा है 67
सब पढ़े, सब बढ़े 68
बाल हाइकु 69
चल पहल कर 73
हम फरिश्ते से हो जाएं 75
कब तक को अभी मैं बदले 77
वजह-बेवजह रूठना 79
चलो दशहरा का पर्व मनाएंगे 81
लघु कथा मेरे दादा जी 82
साक्षर भारत सक्षम भारत 84
विद्या का मंदिर 86
मेरी शाला 88
जीव दया 89

इठलाती हवा चली 90
ये लालटेन 91
सच होंगे सपन 93
एक दीप उनके नाम 94
चिरैया 96
प्यारे बापू 98
आ गया नवरात्रि 100
दशहरा 101
बंदरिया रानी 102
माँ सरस्वती माता 104
पी पी पी करती मोटर चली 106
दादी तेरी मोरनी को मोर ले गया 107
अखरोट 109
चंदा मामा 110
कर्तव्य पथ पर चल 111
चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे 113
शिक्षा और समाज 115
आओ बच्चों दशहरा मनाएँ 118
दीपों का त्यौहार 119
नदी की दुर्दशा 120
माता-पिता में ही गुरु समाया है 122
भारत का आर्थिक मोर्चे पर दमदार आगाज़ 124
दादा-दादी दिवस 126
हिंदी हृदय गान है 129
हिन्दी माथे की बिंदी 131
साक्षरता 132
दीप 133
आईएनएस विक्रांत 134
बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने की जरूरत 137

तितली 140
चाह गई चिंता मिटी 141
शिक्षक दिवस 144
हिंदी 147
ओजोन परत 149
दीवाली है 152
सूरज 153
चिड़िया और कौवा 154
हिंदी 155
बाल पहेलियाँ 157
बस यूँ ही चलते चलते 159
चप्पलें 162
अनेकता में एकता हमारी शैली है 163
क्या खेल में जीतना ही सब कुछ है? 165
खुशियों की बारिश 168
अज्ञात नहीं रखते 170
पद और पैसा 172
अटकेगा सो भटकेगा 174
मार्ग स्वतः ही बनेगा 176
आलसी बेटा 178
हिंदी दिवस 179
कर्म से किस्मत लिखें हम 182
भारत में बढ़ते साइबर अपराध और बुनियादी ढांचे में कमियां 183
मनुष्य में अनमोल गुणों का भंडार 186
शिक्षक जी 189
विश्व जल सप्ताह 191
परिवार 193
तीजा तिहार 194
मन की प्रसन्नता 196

चित्र देख कर कहानी लिखो 198
संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 198
अनन्या तंबोली कक्षा सातवीं द्वारा भेजी गई कहानी 199
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 200
भाखा जनऊला 201

माँ

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

धरती माँ का बँटवारा क्यों?
एक ही हमारी धरती माँ
एक ही हमारा सूरज
एक ही हमारा चाँद प्यारा
एक ही हमारा आसमान
फिर एक हमारी धरती का,
टुकड़े-टुकड़े में बँटवारा क्यों?

बँटवारा करो पेड़ का, फल-फूल का.
बँटवारा करो जीव-जंतु का,
बँटवारा करो खान-पान का,
बँटवारा करो रहन-सहन का.
बँटवारा कभी न होता सूरज का.
बँटवारा कभी न होता कभी चाँद-तारों का.
बँटवारा कभी न होता आसमान का.
तो बँटवारा क्यों धरती माँ का?

मेरा देश, तेरा देश में माँ को बाँटना क्यों?
धरती माँ के लिए आपस में,

लड़ना-झगड़ना, कटना-मरना क्यों?
मेरा कम, तेरा ज्यादा ऐसा क्यों?
जब जाना है इस दुनिया से
धरती माँ में ही समाना है.
धरती माँ देती सब को दो गज भूमि,
सब को धरती माँ में ही मिल जाना है.
तो धरती माँ का बँटवारा क्यों?
मेरी धरती माँ का बँटवारा क्यों?

*****

भारत राष्ट्र प्रेम संस्कृति का ख़जाना है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

भारत राष्ट्र-प्रेम संस्कृति का ख़जाना है
यह कभी भी कम ना हो पाए.
घर-घर में जाकर भारतीय राष्ट्र-प्रेम
संस्कृति दिल से अपनाने का मंत्र दिलाएँ.

बच्चों युवाओं में भारतीय राष्ट्र-प्रेम
संस्कृति के प्रति प्रोत्साहन करवाएँ.
हमेशा याद दिलाएँ हम अपनी
विरासत की जड़ों को भूल न जाएँ

आओ साथ मिलकर राष्ट्र-प्रेम
का जन-जागरण कराएँ.
हमारी परम्पराओं सभ्यताओं
कलाकृतियों में आस्था दर्शाएँ.

डटकर लड़ना होगा हमें
पाश्चात्य संस्कृति से
ऐसा संकल्प करवाएँ.
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएँ.

पारंपरिक कला शैलियों को कायम रखने
हम ऐसा मिलकर रास्ता अपनाएँ.
बेहतर जिंदगी की तलाश में
हम अपनी जड़ों को भूल ना जाएँ.

हम देख रहे हैं कैसे शहरीकरण स्वदेशी
लोककला शैलियों को नुकसान पहुँचा रहे हैं.
बड़े बुजुर्गों की बातों को छोड़
पाश्चात्य संस्कृति अपना रहे हैं.

*****

प्यारी धूप

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

नन्ही-नन्ही प्यारी धूप,
खुशियों की फुलवारी धूप.

गर्मी के मौसम में देख,
कैसे शूल चुभाती धूप.

जाड़े के मौसम में लगे,
नरम गुलाबी प्यारी धूप.

बरखा आने पर देखना,
खेले छुपम-छुप्पाई धूप.

तितली फूलों संग खेलती,
हर मौसम में प्यारी धूप.

*****

पंचतंत्र की कथाएँ

बंदर और खरगोश

एक बड़े-से जंगल में एक बंदर और एक खरगोश बड़े प्यार से रहते थे. दोनों में इतनी अच्छी दोस्ती थी कि हमेशा एक साथ खेलते और अपना सुख-दुख बांटते थे.

एक दिन खेलते-खेलते बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, आज कोई नया खेल खेलते हैं.” खरगोश ने पूछा, “बताओ कौन-सा खेल खेलने का मन है तुम्हारा?”

बंदर बोला, “आज हम दोनों को आँख-मिचोली खेलनी चाहिए.” खरगोश हंसते हुए कहने लगा, “ठीक है, खेल लेते है. बड़ा मज़ा आएगा.” दोनों यह खेल शुरू करने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि जंगल के सारे पशु-पक्षी इधर-उधर भाग रहे हैं.

बंदर ने फ़ुर्ती दिखाते हुए पास से भाग रही लोमड़ी से पूछा, “अरे, ऐसा क्या हो गया है? क्यों सब भाग रहे हैं?” लोमड़ी ने जवाब दिया, “एक शिकारी जंगल में आया है, इसलिए हम सब अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं. तुम भी जल्दी भागो वरना वह तुम्हें पकड़ लेगा.” इतना बोलकर लोमड़ी तेज़ी से वहाँ से भाग गई.

शिकारी की बात सुनते ही बंदर और खरगोश भी डर कर भागने लगे. भागते-भागते दोनों उस जंगल से काफ़ी दूर निकल आए. तभी बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, सुबह से हम भाग रहे हैं. अब शाम हो चुकी है. चलो, थोड़ा आराम कर लेते हैं. मैं थक गया हूँ.”

खरगोश बोला, “हाँ, थकान ही नहीं, प्यास भी बहुत लगी है. थोड़ा पानी पी लेते हैं. फिर आराम करेंगे.”

बंदर ने कहा, “प्यास तो मुझे भी लगी है. चलो, पानी ढूंढते हैं.”

दोनों साथ में पानी ढूंढने के लिए निकले. कुछ ही देर में उन्हें पानी का एक मटका मिला. उसमें बहुत कम पानी था. अब खरगोश और बंदर दोनों के मन में हुआ कि अगर इस पानी को मैं पी लूंगा, तो मेरा दोस्त प्यासा ही रह जाएगा.

अब खरगोश कहने लगा, तुम पानी पी लो. मुझे ज़्यादा प्यास नहीं लगी है. तुमने उछल-कूद बहुत की है, इसलिए तुम्हें ज़्यादा प्यास लगी होगी.

फिर बंदर बोला, “मित्र, मुझे प्यास नहीं लगी है. तुम पानी पी लो. मुझे पता है, तुमको बहुत प्यास लगी है.”

दोनों इसी तरह बार-बार एक दूसरे को पानी पीने के लिए कह रहे थे. पास से ही गुज़र रहा हाथी थोड़ी देर के लिए रुका और उनकी बातें सुनने लगा.

कुछ देर बाद हंसते हुए हाथी ने पूछा, “तुम दोनों पानी क्यों नहीं पी रहे हो?”

खरगोश ने कहा, “देखो न हाथी भाई, मेरे दोस्त को प्यास लगी है, लेकिन वो पानी नहीं पी रहा है.”

बंदर बोला, “नहीं-नहीं भाई, खरगोश झूठ बोल रहा है. मुझे प्यास नहीं लगी है. इसको प्यास लगी है, लेकिन यह मुझे पानी पिलाने की ज़िद कर रहा है.”

हाथी यह दृश्य देखकर बोलने लगा, “तुम दोनों की दोस्ती बहुत गहरी है. हर किसी के लिए यह एक मिसाल है. तुम दोनों ही इस पानी को क्यों नहीं पी लेते हो. इस पानी को आधा-आधा करके तुम दोनों पी सकते हो.”

खरगोश और बंदर दोनों को हाथी का सुझाव अच्छा लगा. उन्होंने आधा-आधा करके पानी पी लिया और फिर थकान मिटाने के लिए आराम करने लगे.

*****

मेरी बगिया

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

सुन्दर सुन्दर प्यारे फूल,
बगिया में हैं न्यारे फूल.

हरे गुलाबी नीले लाल,
करते प्यारे फूल कमाल.

देते भीनी खुशबू फूल,
लेकिन शूल न जाना भूल.

फूलों संग तितली घूमे,
भौंरा फूलों संग झूमे.

फूल लुभाते सबका जिया,
लगे प्यारी मेरी बगिया.

*****

नदिया

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

नदिया प्यारी भाती है
अपने किस्से गाती है.

अपनी कलकल धारा से,
सबका मन हर्षाती है.

अपने मीठे पानी से,
सबकी प्यास बुझाती है.

खेतों को पानी देकर,
उनकी फसल बढ़ाती है.

मेले पिकनिक से नदिया,
सबको मौज कराती है.

*****

मोटू भैया

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

रंग जमाते मोटू भैया,
खूब हंसाते मोटू भैया.

कसरत करके बड़े सवेरे,
तोंद घटाते मोटू भैया.

देख समोसे लड्डू पेड़ा,
खुश हो जाते मोटू भैया.

थोड़े में ही वो थक जाते,
दौड़ न पाते मोटू भैया.

सब पूछे कब होगे पतले,
चुप हो जाते मोटू भैया.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

चींटी और टिड्डा

गर्मियों के दिन थे. एक मैदान में एक टिड्डा अपनी ही मस्ती में झूम-झूम कर गाना गा रहा था. तभी उधर से एक चींटी गुजरी. वह एक मक्के का दाना उठाकर अपने घर ले जा रही थी.

टिड्डे ने उसे बुलाया और कहा, “चींटी रानी, चींटी रानी, कहाँ जा रही हो? इतना अच्छा मौसम है... आओ बातें करें... मस्ती करें...”

चींटी ने कहा, “टिड्डे भाई, मैं सर्दियों के लिए भोजन इकट्ठा कर रही हूँ. बहुत काम पड़ा है... मुझे क्षमा कर दो, मैं बैठ नहीं सकती.”

टिड्डे ने फिर कहा, “अरे! सर्दियों की चिंता क्यों करती हो? अभी तो सर्दी आने में बहुत देर है...” पर चींटी मुस्कराकर चलती रही.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

गौरव पाटनवार 'कान्हा' कक्षा - दूसरी, ग्राम - बिटकुला, बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

फिर भी चींटी ने चलते चलते टिड्डा को समझाते हुए कहा, सुनो टिड्डा- ठंड का मौसम कुछ दिन बाद ही आने वाला है. तब खूब बर्फ गिरेगी. कहीं भी अनाज नहीं मिलेगा. मेरी सलाह है, अपने खाने का इंतजाम कर लो.

धीरे-धीरे गर्मी का मौसम खत्म हो गया. मस्ती में डूबे टिड्डे को पता ही नहीं चला कि गर्मी कब खत्म हो गई. बारिश के बाद ठंड आ गई. कोहरे और बर्फबारी की वजह से बमुश्किल सूरज के दर्शन हो रहे थे. टिड्डे ने अपने खाने के लिए बिल्कुल भी अनाज नहीं जुटाया था. हर ओर बर्फ की मोटी चादर पड़ी थी. भूख से टिड्डा तड़पने लगा.

टिड्डे के पास बर्फबारी और ठंड से बचने का भी इंतजाम नहीं था. तभी उसकी नजर चींटी पर पड़ी. अपनी बिल में चींटी मजे से जमा किए हुए अनाज खा रही थी. तब टिड्डे को एहसास हुआ कि समय को बर्बाद करने का उसे फल मिल चुका है. भूख और ठंड से तड़पते टिड्डे की फिर चींटी ने मदद की. खाने के लिए उसे कुछ अनाज दिए. चींटी ने ठंड से बचने के लिए खूब घास-फूस जुटाए थे. उसी से टिड्डे को भी अपना घर बनाने के लिए कहा.

कहानी से सीख : अपने काम को मेहनत और लगन के साथ करना चाहिए. उस वक्त भले ही लोग मजाक उड़ाएं, लेकिन बाद में वे ही तारीफ करेंगे.

<u>जिज्ञासा वर्मा, कक्षा 11 वीं, रतनपुर, जिला- बिलासपुर द्वारा पूरी की गई कहानी</u>

वक्त गुजरते देर न लगी कुछ दिन बाद ठंड का मौसम आ ही गया. अब टिड्डे का चेहरा मुरझाया हुआ था. क्योंकि उसने ठंड के लिए कोई तैयारी नहीं की थी. खेतो में बर्फ की चादर पड़ने से अब कुछ भी खाने को नहीं बचा था. भूख से मर रहे टिड्डे को अंत में उन चीटियों से खाना मांगना पड़ा जिन्हें वह कभी मस्ती करने का ज्ञान दे रहा था.

कहानी की सीख : अपने काम में मेहनत के साथ जुटा रहता है उसे आगे आने वाली मुश्किलों से लड़ने में आसानी होती है.

<u>सुधारानी शर्मा मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी</u>

एक चींटी अपना भोजन लेकर जा रही थी, रास्ते में उसे टिड्डा मिला,उसने चीटी से कहा कि तुम अभी से इतनी मेहनत क्यों कर रही हो, भोजन इकट्ठा क्यों कर रही हो, अभी तो सर्दी आने में बहुत देर है,

टिड्डे की बात सुनकर चींटी मुस्कुरा कर आगे बढ़ गई और टिड्डे की बात सोचने लगी,

चलते-चलते अचानक उसके दिमाग में यही बात गूंजने लगी,अभी तो बहुत समय है सर्दियां आने में मैं क्यों अभी से भोजन इकट्ठा कर रही हूं,

ऐसा सोचते सोचते, वह एक पेड़ के नीचे मक्के के दाने को रखकर बैठ गई, और सुस्ताने लगी उसके पीछे आने वाली चीटियों ने उसे देखा, और रुक कर पूछा क्या हुआ, चीटी ने कहा मैं अभी से भोजन क्यों इकट्ठा कर रही हूं अभी तो मुझे खेलना है,कूदना है, सर्दी आने में बहुत देर है, मैं अभी यह काम नहीं करूंगी,उसकी बात को सुनकर चीटियों में से कुछ ले उसके बाद तो सही कहा,कुछ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, और अपने काम ने लग गई और भोजन इकट्ठा ही करने लगी, परंतु उस चींटी की बात करी 20 25 चीटियो को सही लगी, और वे आपस में कहने लगी कि हां हां हम अपना समय अभी से भोजन इकट्ठा करने में क्यों लगाएं,क्यों ना हम खूब खेले कूदे,आधी चीटियों का ध्यान काम से पूरी तरह से हट गया, रोज वे टिडडे के पास जाने लगी,और टिड्डे से दोस्ती कर मिलकर रोज खेलने लगे,उनकी दिनचर्या यही हो गई थी, दिन भर खेलना कूदना.

समय बहुत तेजी से बीत गया सर्दियां आ गई कड़ाके की ठंड पड़ने लगी,ठंड इतनी ज्यादा कि किसी को कुछ भी करने का मन नहीं लगता था, ऐसा लगता था गर्म बिस्तर में दुबके रहे,जिन चीटियो ने सर्दियों के लिए भोजन इकट्ठा करके रखा था,वह निश्चित थी और अपने घर के अंदर आराम से रह रही थी और उनके पास भोजन था उसे भी वह खा रही थी, और जो चीटियां टिडडे की संगति में आलसी हो गई थी, उनके पास भोजन का पर्याप्त संग्रहण नहीं था, वे परेशान होने लगी,उनहे समझ मे आने लगा कि समय को उन्होने व्यर्थ मे बिता दिया,ऐसे समय मे भोजन पास मे रखना उनके लिए कितना जरूरी था

कड़ाके की ठंड में भोजन की तलाश में बाहर निकलने पर वह बीमार पड़ रही थी उसी समय उन्हें समझ में आया कि गलत संगति में पढ़ कर उन्होंने अपना कितना नुकसान कर लिया है.

वे सभी अफसोस करने लगी तब साथी चीटियों ने उनकी मदद की,उन्हें भोजन दिया,और उनको समझाया कि अपना काम समय पर कर लेना चाहिए नहीं तो बहुत परेशानी होती है साथी चीटियों को यह बात भी समझ में आ गई कि गलत संगति नहीं करनी चाहिए, वह मेहनतकश चीटियां थी लेकिन टिड्डे की संगति में रहकर,उसकी बात को सुनकर,मानकर उन्होंने अपना मूल काम खो दिया और आप मुसीबत का सामना करना पड़ा,अतः हमे हमेशा मेहनत करनी चाहिए और भले बुरे का ज्ञान होना चाहिए.

<u>अनन्या तंबोली कक्षा सातवीं द्वारा पूरी की गई कहानी</u>

चींटी जब मक्के का दाना लेकर चल रही थी और टिड्डे ने उसे आवाज दिया फिर भी चींटी मुस्कुरा कर चलती रही वह सोच रही थी टिड्डे को अपने और अपने परिवार की कोई चिंता नहीं है. इसे तो यह भी चिंता नहीं है कि इसके बच्चे क्या खाएंगे टिड्डे को कौन समझाए वह ना तो खुद मेहनत करता है और ना किसी और को मेहनत करते देख खुश होता है .दूसरों की मेहनत का ही फल खुद प्राप्त करना चाहता है .मैं

इसकी बातों में नहीं आऊंगी यह मेरा ही भोजन चट कर जाएगा और कहेगा अरे अगली बार से ऐसा नहीं होगा यह हमेशा ऐसा ही करता है स्वयं भोजन इकट्ठा नहीं करता दूसरों के इकट्ठा किए हुए भोजन को ही खाता है और पूरा समय इधर-उधर मस्ती में झूमता नाचता रहता है दूसरों को भी अपने साथ नचाता है खूब बातें करता है उसे किसी बात की कोई चिंता नहीं होती क्या सर्दी,गर्मी और बरसात उसके लिए सभी एक बराबर हैं खाने-पीने की उसे बिल्कुल भी चिंता नहीं होती.

मैं तो अपने अपनो की चिंता में लगी रहती हूं .यदि मैं खाना इकट्ठा नहीं करूंगी तो मेरे बच्चे क्या खाएंगे.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

चींटी मक्के के दाना को घर में रखकर वापस आ रही थी. तभी टिड्डे ने चींटी को छेड़ते हुए पुनः कहा-" चींटी रानी,चींटी रानी मौसम बहुत अच्छा है.आओ मिलकर गाना गाते हैं,मस्ती करते हैं."चींटी क्रोधित हुआ और कहा-अरे टिड्डा, तुम्हारे व्यवहार को देखकर मुझे 'तीन मछलियों ' की कहानी याद आती है जिसमें तीसरी मछली ने जाल में फंसकर, अपने किए पर बहुत पछताया था. टिड्डा कहानी का नाम सुनते ही खुश हो जाता है और प्यार से चींटी को कहा-चींटी बहन, कृप्या करके मुझे तीन मछलियाँ की कहानी बताइए? चींटी कहती है ठीक है टिड्डा भाई, कहानी को ध्यान पूर्वक सुनना.

एक तालाब में तीन मछलियाँ रहती थी,शाम को चारा की तलाश में घूम रही थी. तभी तलाब के पास बैठे बच्चों ने बात कर रहे थे. कल इस तालाब में जाल गिरेगा, यहाँ जो भी मछली होगी सभी मारी जाएगी. मछली ने उन बच्चों की बातों को सुनकर कान खड़े कर लिए और तीनों मछलियाँ आपस में बात करने लगी, देखो कल यहाँ जाल गिरने वाला है.उसके पहले इससे बचने का उपाय हम सबको कर लेना चाहिए. तभी पहली(छोटी) मछली ने कहा-मैं सोची हूँ कि जैसे ही रात होगा,पास के दूसरे तालाब में चली जाऊँगी और जाल में फँसने से बच जाऊँगी, उसकी बात को सुनकर दूसरी मछली कहती है-मैं भी विचार किया हूँ कि जाल जैसे ही मेरे पास आएगा मैं अपनी सिर को कीचड़ में घुसा लूँगी, जाल मेरे ऊपर से निकल जाएगा और मैं बच जाऊँगी. तभी तीसरी (बड़ी) मछली कहती है- तुम दोनों डरपोक हो, मुझे जाल में फँसने का कोई चिंता नहीं, जब जाल मेरे पास आएगा तो मैं उसी समय निर्णय लूँगी मुझे क्या करना है, अभी तो मुझे पानी में तैरने का आनंद लेना है और मस्ती करना है.

आगामी दिन सुबह होते ही तालाब में गाँव वालों ने जाल गिराया. पहली (छोटी) मछली तो योजना अनुसार पहले से ही रात होते ही दूसरे तालाब में चली गई थी,दूसरी मछली जैसे ही जाल उसके पास आया योजना अनुसार पूरा बल लगाकर कीचड़ में घुस गई और जाल उसके ऊपर से निकल गया. अब बारी आई थी तीसरी (बड़ी) मछली की, जैसे ही उसके पास जाल आया,वह घबराकर इधर-उधर डर से भागने लगी,उसके

पास जाल से बचने का कोई योजना नहीं था जिस कारण वह जाल में फँस गई. जाल में फँसे हुए मछली, मन ही मन सोच रही थी की मेरे दोनों साथी बच गई और मेरे पास कोई योजना नहीं था जिसके कारण जाल में फँस गई हूँ. अब मैं मारी जाऊँगी.

चींटी रानी की कहानी सुनते ही टिड्डे का होश उड़ गया और चींटी को कहने लगा,चिट्ठी बहन सही समय में कहानी सुना कर आपने मेरी आंखे खोल दिया है,मुझे क्षमा करना मैं अपने किए हुए कार्यों पर शर्मिंदा हूँ. मुझे भी विपत्ति आने के पहले उससे बचने का योजना बना लेना चाहिए ताकि मेरे ऊपर आए हुए समस्या का सामना कर सकूं.

यह कहकर चींटी रानी के साथ वह भी सर्दियों से बचने के लिए घर एवं खाने के लिए भोजन इकट्ठा करता है. सर्दियों के मौसम में टिड्डे का जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है और चींटी को धन्यवाद देता है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

न्याय

एक बार लोमड़ी और भेड़िए में किसी बात को लेकर भयंकर लड़ाई हो गई. लड़ाई अत्यधिक बढ़ जाने के कारण दोनों ने निर्णय लिया कि वे न्याय के लिए न्यायालय में जाएंगे.

दोनों ने न्यायालय पहुंचकर बंदर न्यायाधीश के सामने अपना-अपना पक्ष रखा.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

कृष्ण जन्म

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद

जन्म लिये जब कृष्ण,घना बादल था छाया.
बरसे पानी मेघ, देख मन भी घबराया.
टूटे बेड़ी हाथ, पाँव के बंधन खोले.
देख देवकी मात, तनिक कुछ भी नहिँ बोले.

बाल रूप में आज, प्रगट हो गये मुरारी.
दिखे साँवला रूप, कृष्ण मारे किलकारी.
मधुर-मधुर मुस्काय, देवकी मात निहारे.
अपने धुन में खेल, लगे हैं कितने प्यारे.

पकड़े वासुदेव, सूप में कृष्ण सुलाये.
गड़-गड़ गरजे मेघ, नन्द बाबा घर जाये.
करते यमुना पार, राह कठिनाई आये.
लेते प्रभु का नाम, राह को ईश दिखाये.

खुश होते हैं ग्वाल, सभी त्यौहार मनाते.
बजते ढ़ोलक ताल, गीत खुशियों के गाते.
खुशी-खुशी से, जलाते दीपक प्यारे-प्यारे.
कृष्ण जन्म में आज, मनाते उत्सव सारे.

*****

गाय

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर

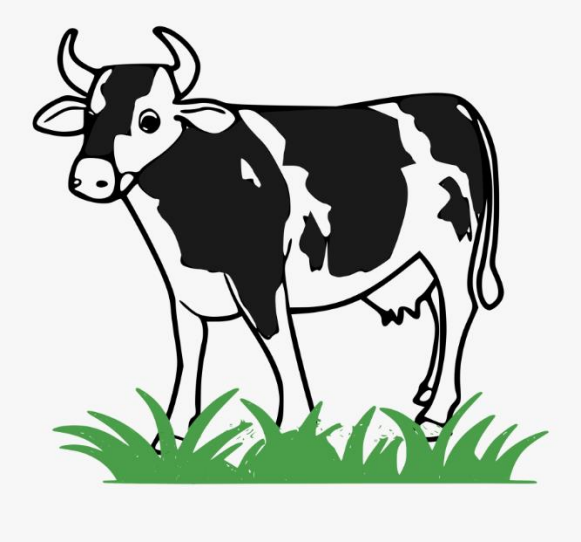

देखो मुझको मैं हूँ गाय,
सारे जग की मैं हूँ माँ.
लाल सफेद काली चितकबरी,
कई रंगों की होती हूँ.

अन्न घास दाना भूसा खाती
जंगल चरने जाती हूँ.
मेरा दूध बड़ा गुणकारी
बच्चे बड़ों को हितकारी.

दही मही मक्खन घी बनते,
इनको खाकर सेहत बनती.
गोबर से तुम खाद बनाते,
और खेत में फसल उगाते.

बायोगैस बनाकर इससे,
बिजली इंधन रोज जलाओ.

हो जाओगे मालामाल,
हटे रोज का दुख जंजाल.

बछड़ा मेरा हल जोतेगा,
गाड़ी पर वह धन ढोएगा.
सारा जीवन देते रहना
दुख-सुख चुप होकर सहना.

मर जाने पर मैं तुमको,
दे जाऊँगी ढेर सामान.
जूते चप्पल बटन बना लो,
और लगा लो अपने काम.

देखो मुझको मैं हूँ गाय
सारे जग की मैं हूँ माँ

*****

बादल

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर

घने घने काले बादल
आसमान पर छाए बादल.
तपन मिटाने आए बादल
बारिश बनकर आए बादल.

गरज-गरज और चमक-चमककर
ढोल नगाड़े बजाए बादल.
बिजली चमके चम-चम-चम
नाचे मोर छम-छम-छम.

मधुर गीत सुनाए बादल
टपक रही हैं बूंदें टप-टप.
बरखा की बौछारें छाई
चेहरे पर मुस्कान आ गई.

झरने बह रहे हैं झर-झर झर-झर
घने-घने हैं काले बादल.
आसमान पर छाए बादल
मंद-मंद मुस्कान बादल

*****

देश भक्त

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ती

एक समय की बात है, देश की सीमा से लगे एक गांव में आतंकवादी ने कब्जा कर लिया और वहां लूटपाट मचा दी. सैनिकों को सूचना मिलने पर सैनिक उनसे युद्ध के लिए तुरंत निकल पड़े.

सैनिकों के चलते - चलते घनघोर बरसात हुआ रास्ते पानी से लबालब हो गए. सैनिकों को आगे चलने में बड़ी मशक्कत का सामना करना पड़ा. सैनिकों को आगे नदी पार करके वहा गांव तक चलना था, लेकिन नदी में बाढ़ आने के कारण आगे जा नहीं पा रहे थे. उन्हें नदी पार करने के लिए कोई साधन नहीं मिल रहा था तथा उन्हें अपने हथियारों की भी सुरक्षा का ध्यान रखना था और पीछे भी नहीं लौट पा रहे थे. सैनिकों को अचानक घनघोर बरसात और काली रात्रि में एक आशा की किरण के रूप में सुनसान घर दिखाई दिया जहां सैनिक पहुंचे और वहां जाकर बूढ़ी औरत को रसोई घर में खाना बनाते देखा, बुढ़िया ने सैनिकों को बुलाया और आगमन का कारण पूछा सैनिकों ने बुढ़िया औरत से अपने आने का कारण बताया तब बूढ़ी औरत ने सैनिकों को अपने घर के छत का लकड़ी दिया जिससे सैनिक लकड़ी को नाव जैसा रूप देकर नदी पार कर लिया और आतंकवादी को उस गांव से खदेड़ दिया.

बूढ़ी औरत ने सिद्ध किया कि देश प्रेम और देश भक्ति से बड़ा कोई धर्म नहीं है देश है तो हम हैं, ऐसा मानकर देश की सेवा करना चाहिए. बूढ़ी औरत को ज्ञात था कि घर पुनः बनाया जा सकता है लेकिन उस गांव को उन आतंकवादियों से मुक्ति दिलाना बहुत ही आवश्यक था, इसलिए बूढ़ी औरत ने बिना देर किए अपने देशभक्ति का परिचय दिया.

*****

बुजुर्ग

रचनाकार- पृथ्वीसिंह बैनीवाल, हरियाणा

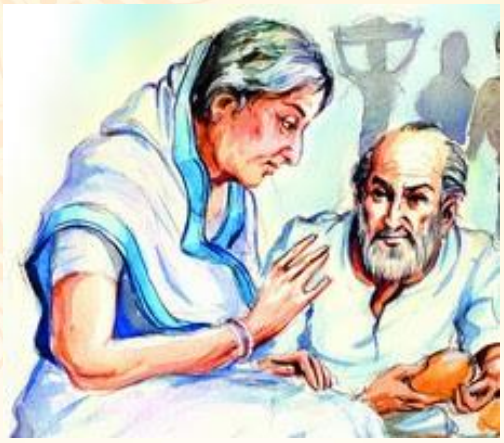

घर का मान
बुजुर्गों का सम्मान
जीवन ज्ञान.

दादा की याद
उनका आशीर्वाद
हम आबाद.

दादी सुकून
घर की शान रही
दुर्भाव नहीं.

है मात-पिता
हमारे भगवान
सदा महान.

उनसे चैन
हमारे है बेचैन
हमसे चैन.

मातृ आंचल
सुरक्षित है जीवन
सरजीवन.

देते आशीष
चाचा-चाची
देवे गारंटी.

बुजुर्ग हंसी
है जीवन की सीख
मिटादे झीख.

है पहचान
देती सुरक्षा ज्ञान
जीना आसान.

बिन बुजुर्ग
घर रहता सूना
है समझना.

न बीमार हो
कभी ना लाचार हो
वे ही सार हो.

माँ आए याद
उनका आशीर्वाद
सुखी हैं आज.

पूज्य पिताश्री
को मेरा है प्रणाम
बड़े महान.

जीवन में है
सफल कर दिया
आशीष दिया.

हम सबका
आधार परिवार
यही विचार.

है पृथ्वीसिंह
आपकी ही संतान
करूं प्रणाम.

*****

अमर दीप

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

सुमित्रा अपने घर की देहरी में बैठी किसी विचार में खोयी सी है.पिछले बार की दीपावली में उसका इकलौता बेटा विकास एक बड़ा सा बैग हाथों में थामे आज के ही दिन आया था.पूरे एक महीने की छुट्टी मिली थी.कितना चंचल और जिंदा दिल था विकास.पूरे गाँव के लोगों से उसे बहुत प्यार था.

एक महीने का समय कैसे निकल गया था, पता ही नहीं चला.अब एक एक दिन उसके बिना कटना मुश्किल है. शनिवार का दिन था.पता नहीं कैसे मन सुबह से बेचैन सा था.यहाँ से जाने के बाद उस दिन उसकी मुठभेड़ कश्मीर बार्डर पर आतंकवादियों से हुई थी.आखिरी साँस तक वह वीरता पूर्वक लड़ता रहा.दो आतंकवादियों को मार कर वह वीरगति को प्राप्त हुआ. सुमित्रा की आँखों से दो बूँद आँसुओं की छलक पड़ी.

अरी काकी !क्या दीपक नहीं जलाओगी. आज दीपावली है.सबके घर के दीपक जल गये हैं.

पड़ोस की नीलू ने आवाज दी.

सुमित्रा के विचारों की तंद्रा टूटी मानो वह सपना देख रही थी.

"मुझ अकेली का क्या है बिटिया ! एक ही तो दीपक था मेरे पास. जो अमरता का दीप बन कर भारत माँ के चरणों में आज भी प्रकाश बिखेर रहा है."

*****

विज्ञान हाइकु

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य, लखनऊ

जय विज्ञान
जय अनुसंधान
देश महान

जय विज्ञान
अवधारणाओं के
नए सोपान

वैदिक काल
वैज्ञानिक - खोजों से
है अभिभूत

विज्ञान उक्ति
दया, न्याय, सत्यता
जीवन मूल्य

रामानुज ने
परमसत्ता - शून्य
अनंत कहा

'कुछ नहीं ही'
अनंत निर्वात है
सृष्टि का हेतु

संपूरक है
विज्ञान और धर्म
एक दूजे का

तत्त्वों का योग
योगिक कहलाता
नया पदार्थ

प्रमुख भाग
भौतिक - रसायन
हैं विज्ञान के

नहीं मानते
भूत, प्रेत, चुड़ैलें
भौतिक वेत्ता

सभी पदार्थ
आकर्षित करते
एक - दूजे को

घटाने पर
अनंत से अनंत
शेष अनंत

एक हजार
दस की घात तीन
लिख सकते

जीव विकास
क्रमचय - संचय
निरंतर ही

विश्व को देन
दाशमिक प्रणाली
भारतीयों की

लोहे की छड़
भट्टी में तपकर
बदले रंग

गणित शास्त्र
विज्ञान की है कुंजी
पढ़ें गणित

कृष्ण विवर
प्रकाश को खींचतें
अपनी ओर

विश्व है ऋणी
शून्य की देन हेतु
भारतीयों का

ऊर्जा अजन्मी
ऊर्जा है अविनाशी
बदले रूप

ब्रह्मांड में हैं
हजारों द्वीप - विश्व
नीहारिका - से

पंचतत्व ही
पदार्थ के रूप में
है भगवान

*****

उपहार

रचनाकार- संगीता पाठक धमतरी

एक छह वर्षीय बालक चीकू अपनी मस्ती में गुनगुनाता हुआ घर के पास स्थित कपड़े की दुकान के पास ठिठक कर रुक जाता है. वह धीरे से कहता है" दोस्त तुम कितने सुंदर हो लेकिन तुम बोल नहीं सकते हो तुम्हारी ड्रेस बहुत सुंदर है. मैं तुम्हें लक्की नाम से बुलाऊंगा."

बालकों की दुनिया हम बड़ों से पृथक होती है. वे अपनी काल्पनिक दुनिया में उड़ान भरते हैं और खुशी से चहकते रहते हैं. कुछ दिनों से दुकान के सेठ किशोरी लाल उस पुतले के पीछे खड़े होकर चीकू की बात सुन कर मजा लेने लगे थे.

दीपावली का समय नजदीक था.लोगों के घर में साफ सफाई चल रही थी.दुकान के नौकर ग्राहकों को कपड़े दिखा रहे थे तभी किशोरी लाल की नजर बालक चीकू पर पड़ी वह उस गुड्डे से बात कर रहा था.

किशोरीलाल उसकी बात सुन ने लगे वह कह रहा था

लक्की -तुम आज इस नयी ड्रेस में कितने सुंदर दिख रहे हो. मेरी माँ इस दीपावली में मेरे लिये कपड़े नहीं खरीदेगी क्योंकि उनके पास पैसा नहीं है.

किशोरीलाल का दिल भर आया. दूसरे दिन जब वह बालक फिर उस गुड्डे के पास आया और बातें करने लगा.

चीकू-"लक्की! तुम ही तो हो जो मेरी सारी बातें सुनते हो.माँ से भी मैं जिद नहीं करता. वो सबके घर में बरतन माँजने जाती हैं. मेरे लिये वो खिलौना भी नहीं ले पाती हैं."

किशोरी लाल ने धीरे से कहा --"दोस्त ;मेरे पाँव के पास देखो ये गिफ्ट तुम्हारे लिये है."

चीकू ने नीचे देखा तो एक बड़ा सा डिब्बा रखा हुआ था.उसने थैंक्यू कहा और खुशी से उछलता हुआ घर चला गया.

किशोरी लाल उसे जाते हुये देख रहे थे. उस डिब्बे में पेंट शर्ट और कुछ खिलौने उन्होंने रख दिये थे.अगले दिन दीपावली थी. चीकू नयी ड्रेस पहन कर उसी गुड्डे के पास आया.किशोरी लाल ने पीछे छिपकर उसकी बातें सुनी.

चीकू "-दोस्त देखो मैं कैसा दिख रहा हूँ? मेरी माँ ने कहा है कि तुम अपने दोस्त को गिफ्ट के बदले थैक्यू बोलकर आना. थैक्य यू दोस्त तुम बहुत अच्छे हो"

पुतले के पीछे छिपे किशोरी लाल जी की आँखों में खुशी के आँसू आ गये.

*****

बेटी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य, लखनऊ

मुझे गर्व है बेटी पर,
बनेगी सेना में अफसर.

जाती है सैनिक स्कूल,
करेगी सपनों को पूरा.
जमकर मजा चखाएगी,
कभी शत्रु ने यदि घूरा.

दे रक्षा अकादमी परीक्षा,
पा जाएगी शुभ अवसर.

ज्ञान और व्यक्तित्व भरोसे,
योग्य - सफल कहलाएगी.
जीतेगी हर एक लड़ाई,
दुष्टों के दिल दहलाएगी.

सोच पुरानी बदलेगी वह,
देश बनेगा, अपना घर.

खुल जाएँगे द्वार गगन के,
जहाँ उड़ेगी पंख पसार.
तेज और ऊँची उड़ान से,
नवल हर्ष को मिले प्रसार.

बचकर सामाजिक दबाव से,
बनेगी पूर्ण सशक्त निडर.

संकल्पों की दिव्य मूर्ति है,
बेटी है कुटुंब की शान.
सेना में भर्ती होकर वह,
बढ़ा सकेगी निज अभिमान.

बेटी, बेटा से क्या कम है,
कभी न दोनों में अंतर,
मुझे गर्व है बेटी पर.

*****

बालकहानी : एहसान

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा, बालोद

दर्री तालाब में चीकू नामक एक मेंढक रहता था. वह सीधा-सादा और शांतिप्रिय था. उसे शोरगुल तनिक भी पसंद नहीं था. तालाब के किसी भी प्राणी से उसकी कोई दुश्मनी नहीं थी. उसे सभी से बहुत प्रेम था. तालाब के सभी प्राणी उसे बहुत चाहते थे.

एक बार चीकू तालाब के किनारे बैठा था. बरसात का मौसम था. रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा था. वह ठंडी-ठंडी हवा का मजा ले रहा था. फिर कहीं से एक बगुला आया. उस बगुले का नाम था सोनू. सोनू बगुले ने चीकू को पकड़ लिया. अब चीकू सोनू की चोंच में दबकर छटपटाते हुए विनती करने लगा- "बगुला भैया मुझे छोड़ दो. मुझ पर तरस खाओ. मैं आपके कभी न कभी काम आऊँगा." चीकू के नम्रतापूर्वक शब्दों से सोनू को उस पर दया आ गई. उसने चीकू को छोड़ दिया.

पानी में छप से कूदकर चीकू बोला- "भैया, मैं आपका यह एहसान कभी नहीं भुलूँगा. आप मुझे मुसीबत में याद कर लेना; शायद मैं आपके काम आ जाऊँ." फिर वह पानी में डूब गया. बेचारा भूखा सोनू बगुला भी वहाँ से उड़ गया.

लगभग सात-आठ महीने बीत गये. उसी तालाब के किनारे एक दिन सोनू बगुला अपना भोजन ढूँढ रहा था. तभी अचानक सोनू एक शिकारी के जाल में फँस गया. शायद शिकारी जाल को पहले से फैला कर कहीं चला गया था. बेचारा सोनू जाल में फँसा फड़फड़ाने लगा. उसे मौत का डर सताने लगा. वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा. उसके चिल्लाने की आवाज चीकू मेंढक को सुनाई दी. तालाब के किनारे जाकर देखा, तो वही सोनू बगुला था,जिसने कभी उसे जीवनदान दिया था.

चीकू बोला- "आप जाल में फँस गये हैं, लेकिन चिंता न करें. कोई आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकता. आखिर मैं आपकी मुसीबत में काम नहीं आऊँगा, तो कब काम आऊँगा."

चीकू की बात सुनकर सोनू बोला- "मेंढक भाई, कुछ भी करो, पर मुझे बचा लो; नहीं तो मैं मर जाऊँगा."

चीकू ने कहा- "ठीक है. डरो मत. मैं बिट्टू को बुला कर लाता हूँ." फिर चीकू अपने मित्र बिट्टू केकड़ा को बुलाने चला गया.

बिट्टू केकड़ा आया. सोनू के जाल को काटने लगा. सोनू जाल से मुक्त हो गया. इस तरह चीकू को एहसान चुकाते देख सोनू की आँखों से आँसू छलक पड़े. सोनू डबडबाई आँखों से कहने लगा- "भाई, तुम महान हो. तुमने मेरी जान बचाई."

"सोनू भैया, इसमें महानता की क्या बात है ? मैंने अपना फर्ज पूरा किया." चीकू बोला.

फिर सोनू ने बिट्टू को भी धन्यवाद दिया. तीनों बहुत प्रसन्न हुए. तीनों में दोस्ती हो गई.

*****

चाँद

रचनाकार- उमेश कुमार गुनी

हम झुके सदा आगे चाँद के,
चलो आज चाँद को झुकाया जाय.
रुलाती बहुत है बेदर्द ज़िन्दगी,
चलो आज इसे हँसाया जाय.
अरसों हुए,मिले,खुद को.
चलो आज खुद को खुद से मिलाया जाय.
हम झुके सदा आगे चाँद के,
चलो आज चाँद को झुकाया जाय.
लाने फिर से लबों पे हँसी,
बिछड़ों को अपनों से मिलाया जाय.
रुलाती बहुत बेदर्द ज़िन्दगी,
चलो आज इसे हँसाया जाय.
मुरझा चुके अरमानों पे,
आशा का जल बरसाया जाय.
बंज़र पड़ चुके ज़मीन को,
शीतल जल से नहलाया जाय.
हम झुके आगे हमेशा चाँद के,
आज चाँद को झुकाया जाय.
ना द्वेष हो जिसमें कोई,

ऐसा इक धर्म बनाया जाय.
त्यागकर ईर्ष्या और घृणा,
बस प्रेम ही प्रेम फैलाया जाय.
तरसे हैं अपनों के लिए,
उन्हें सीने से लगाया जाय.
बहुत रुलाती है बेदर्द ज़िन्दगी,
चलो आज इसे हँसाया जाय.

*****

कर लो दुनिया मुट्ठी में

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

जया कक्षा नवमी की छात्रा है.सुबह घड़ी आठ बजा रही है.

जया -"मम्मी,मेरी चोटी कर दीजिये ना."

मैं टिफीन पैक कर रही हूँ जया. दीदी से बोलो-मम्मी ने कहा.

भानु दी-"जया,इधर आओ.मैं तुम्हारी चोटी कर देती हूँ."

जया टिफीन बाक्स और बैग कंधे पर टाँग कर तेज कदमों से स्कूल की ओर भागती है.

सामाजिक विज्ञान का पीरियड शुरू हुआ. रत्ना मैडम बहुत तेज तर्रार शिक्षिका हैं. सभी बच्चे उनसे डरते हैं. वे द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के बारे में समझा रही थी.

अचानक उन्होंने जया को खड़ा किया. जया बताओ- "द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण क्या थे ??"

जया ने हिचकिचाते हुए एक लाइन उत्तर दिया और वह मैडम से आंख मिलते ही सब कुछ भूल गई.

मैडम-"जया, तुम अपना ध्यान कहां रखती हो ?"

उसका रहा सहा आत्मविश्वास मानो चूर-चूर हो गया.

इतनी बड़ी क्लास जिसमें लड़के भी बैठ ते हैं.अक्सर वह याद होते हुये भी सब कुछ भूल जाती है.

उस दिन वह घर आयी और सीधे अपने कमरे में चली गई. आइने के सामने खड़ी होकर वह फूट-फूट कर रोने लगी.

अपने प्रतिबिंब को उसने कहा- "आई हेट यू,आई हेट यू."

उसी समय मम्मी और दीदी आ गईं.

भानु दीदी जया से चार साल बड़ी हैं.

भानु दी - "ओ मेरी प्यारी बहना !कुछ हमें भी तो बताओ ना."

जया ने तकिये के नीचे अपना चेहरा छुपा लिया.

भानु दीदी ने तकिया हटा दिया.उसके आँसू पोंछ दिये.उसका सिर गोद में ले लिया.

भानु दीदी- "अब बोलो क्या हुआ ?किसी से झगड़ा हुआ है क्या ? "

जया ने सामाजिक विज्ञान के पीरियड की सारी बातें बताई.

भानु दीदी अक्सर ऐसा क्यों हो जाता है कि मैं बोलते बोलते अटक जाती हूं फिर पूरी क्लास हंसने लगती है.

भानु दीदी -"मैं क्या करूं?बताओ ना."

भानु दीदी - "तुम्हारी समस्या तो बहुत जल्दी हल हो जाएगी.इट्स सोल्यूशन इज वेरी इजी."

जया- "कैसे होगा प्यारी दीदी?"

भानु दीदी- "कल सुबह उठना,आईने के सामने सामने खड़ी हो जाना.अपने आपको गुड मॉर्निंग कहना फिर खूब सारी तारीफ करना.मैं सबसे अच्छा आंसर दे सकती हूं इसे बार-बार दोहराना.ठीक है रात में अध्ययन करना.

सुबह उठना, फिर कहना मैं धाराप्रवाह बोल सकती हूं.बोल सकती हूं."

जया की आंखें खुशी से चमकने लगी - "सच दीदी." अगले दिन से वह अपने पूरे पाठ अच्छी तरह से अध्ययन करके स्कूल गई.स्कूल में रत्ना मैम ने फिर प्रश्न पूछा तो उसने बहुत ही आत्मविश्वास के साथ पूरा उत्तर दिया.

रत्ना मैम बहुत प्रसन्न हो गई. उसकी खिल्ली उड़ाने वाली लड़कियां बगले झांकते नजर आईं.

स्कूल के नोटिस बोर्ड में भाषण प्रतियोगिता का बोर्ड लगा था. स्कूल के नोटिस बोर्ड में भाषण प्रतियोगिता की सूचना लगी थी.जया ने नोट कर लिया.नियमित रूप से वह कुछ त थ्यों को पढ़ती और स्मृति में रखने का प्रयास करने लगी.

प्रतियोगिता का वह दिन भी आ गया.पूरा हाल खचाखच भरा हुआ था.वह आत्मविश्वास के साथ मंच पर गई.प्राचार्य एवं विशिष्ट अतिथियों का अभिवादन करने के पश्चात मुख्य विषय पर बोलना शुरू की.

आज की नारी की दोहरी भूमिका विषय पर वह धारा प्रवाह बोलती चली जा रही थी,जब वह मंच से नीचे उतरी तो उसकी कक्षा की लड़कियों ने हर्षोल्लास के साथ उसे उठाकर उछाल दिया.

वह बहुत उत्साहित हो रही थी. उसकी सहेलियाँ बहुत प्रसन्न हो रही थीं.बार-बार वह सोचने लगी कि मैं तो बोल सकती हूँ.

भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार मिला.घर आकर वह मेडल दीदी के गले में पहना दी.सर्टिफिकेट भी दिखाने लगी.वह उनके कंधे में प्यार से झूल गई.दीदी ने उसके माथे को प्यार से चूम लिया.

भानु दीदी "-मेरी प्यारी गुड़िया तुम इसी प्रकार हमेशा हँसती रहो."

जया -"दीदी मेरी प्यारी दी, मैं तुम्हारी वजह से मैं प्रथम पुरस्कार जीती हूँ."

दीदी भी बहुत खुश हो गई.मम्मी पापा दादा, दादी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा.वह आइने के पास गयी.अपने प्रतिबिंब को निहारती रही फिर बोली -"मैं तुमसे प्यार करती हूँ.हाँ हाँ जया तुम सबसे सुंदर हो.

तुम बहुत अच्छी हो,तुम बहुत सुंदर हो."

परदे के पीछे भानु दीदी उसके आत्मविश्वास को देखकर मंद मंद मुस्कुराने लगी.

*****

खेलें खेल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य, लखनऊ

करें पढ़ाई, खेलें खेल.
रखें साथियों के सँग मेल.

पढ़ना-लिखना बहुत जरूरी
ज्ञान - बुद्धि को खूब बढ़ाएँ
समुचित शारीरिक विकास हित
खेलों में भी रुचि दर्शाएँ

बंद रहेंगे यदि कमरे में
तो घर लगने लगेगी जेल.

विद्यालय से वापस आकर
कहीं पार्क में दौड़ें - भागें
'आओ खेलें' ध्येय मान लें
तज आलस्य, नींद से जागें

हृष्ट-पुष्ट बलशाली बनकर
रोगों की हम कसें नकेल.

खेलों के भी बनें सितारे
अनुशासन - अभ्यास के बलपर
मिल सकती है बड़ी सफलता
जीत पास आएगी चलकर

नाम कमाएँ देश - विश्व में
घोर निराशा परे ढकेल.
करें पढ़ाई, खेलें खेल.

*****

केवट और मछली

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

एक नदी थी. उस नदी में एक जलपरी मछली रहती थी. एक दिन केवट जाल लेकर नदी के किनारे गया. केवट ने नदी में जाल फेंका. उस जाल में मछली फंस गई. मछली को देखकर केवट बहुत खुश हो गया. मछली ने केवट से कहा- 'मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं, मुझे छोड़ दो.' मछली की बात को सुनकर केवट को दया आ गई और उसने मछली को छोड़ दिया.

*****

ऐलोवेरा

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया रायपुर

क्या है मेरा क्या है तेरा,
करते हो तुम सबका फेरा.

चंपा, वृंदा और तारा,
सब पूछे हैं नाम तेरा.

ना होता नुकसान जरा,
औषध हो एकदम खरा.

सेहत रस तुममें भरा,
जठराग्नि से बचे उदरा.

शीतल तुमसे अग्निजेठा,
ग्वारपाठा ओ ग्वारपाठा.

सेवन करो सांझ सवेरा,
कहते तुमको ऐलोवेरा..

*****

देखो! मैने बेली रोटी

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव, विदिशा

यह सब मैने सीखा 'माँ' से
और सीखती भला कहाँ से!
अभी उम्र में, मैं हूँ छोटी
देखो! मैने बेली रोटी.

इस डंडे-जैसे बेलन से.
रोटी बेली बड़े जतन से.
आढ़ी-तिरछी छोटी-मोटी
देखो! मैने बेली रोटी.

पापा प्लीज जरा सुन लेना.
कल मुझको लाकर दे देना.
छोटा बेलन और चकोटी
देखो! मैने बेली रोटी.

*****

शिक्षक की शिक्षा

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद

शिक्षक शिक्षा देते हम को, जीवन ज्योति जलाते.
अज्ञानी को राह दिखाते, आगे उसे बढ़ाते.

इधर उधर की बातें छोड़ो, ईश्वर से मिलवाते.
उज्ज्वल भविष्य बनता सब का, ऊँचाई चढ़ जाते.
एक सभी बच्चों को रखते, ऐनक आँख लगाते.
ओजस्वी जीवन में लाते, अवसर भी दिलवाते.

अंकुर से वो वृक्ष बनाते, अहम कभी ना पाले.
दीपक बन कर जलते रहते, जग में करे उजाले.
कर्तव्यों का पालन करते, खुशियाँ भी फैलाते.
गगन चूमते जब भी बच्चे, घी के दीप जलाते.

चंचल मन रखते हैं शिक्षक, छल को दूर भगाते.
जीव जंतु से प्रेम सिखाते, झगड़ा शांत कराते.
टूट टूट कर खुद ही बिखरे, ठोकर भी वो खाते.
डटे रहे बच्चों के खातिर, शिक्षक वो कहलाते.

ढूँढ ढूँढकर देते उत्तर, पल में फल दिखलाते.
तोड़ भेद की सभी बेड़ियाँ, थोड़ा कष्ट उठाते.
दान धर्म है बहुत जरूरी, स्वर्ग नरक को जानें.
प्रतिदिन मिलकर करो प्रार्थना, मानव को पहचानें.

फल की चिंता कभी न करना, समय बहुत है होते.
भटक राह में हम हैं जाते, मंजिल पाने रोते.
यश को पाओ रौद्र छोड़ दो, लक्ष्य अगर है जाना.
वैभवशाली मानव बनना, अच्छी शिक्षा पाना.

षडयंत्रों को दूर भगाना, साहस भी दिखलाना.
हार कभी मन में जागे तो, क्षति कभी न पहुँचाना.
त्रस्त नहीं होते हैं शिक्षक, गुरू मंत्र दे जाते.
ऋषि मुनि सा तप करते रहते, नैया पार लगाते.

*****

कोयल और कौवा

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

एक जंगल था. उस जंगल में कोयल और कौवा रहते थे. दोनों ही पक्षी अपने लिए घोंसला नहीं बनाते थे. एक दिन उल्लू उड़ते-उड़ते उसी पेड़ पर आया जहां पर कोयल और कौवा बैठे हुए थे. उल्लू ने कहा- 'तुम लोग अपने लिए घोंसला क्यों नहीं बना रहे हो?' उल्लू की बात को सुनकर कौवा ने कहा- 'अभी मैं अंडे नहीं दे रही हूं. जब अंडे देने का समय आएगा तब मैं घोंसला बनाऊंगी.' कौवा की बात सुनकर कोयल ने कहा- 'मुझे तो घोंसला बनाने के लिए नहीं आता है. मैं हमेशा दूसरों के घोंसले पर ही अंडे देती हूं. मैं कौवा का इंतजार कर रही हूं कि कब वह घोंसला बनाएगा?' कोयल और कौवा की बात को सुनकर उल्लू हंस पड़ा. उल्लू दोनों पक्षियों को समझाते हुए कहा- जब तुम लोगों को प्यास लगती है तब कुआं खोदते हो अर्थात तुम लोग दूसरे का इंतजार करते रहते हो. अपने लिए और अपने बच्चों के लिए पहले से ही घोंसला तैयार करना चाहिए. इतना कह कर उल्लू वहां से उड़ जाता है. दोनों पक्षी अपने लिए घोंसला नहीं बनाते हैं एक दूसरे का मुंह ताकते रहते हैं.

*****

निराली चिड़िया

रचनाकार- परवीन बेबी दिवाकर "रवि" मुंगेली

चिड़िया की है बात निराली,
चिड़िया होती कई रंगों वाली.

हरी,नीली,पीली,काली,
चिड़ियों होती मधुर आवाजों वाली.

चिड़िया चहककर चहककर गाती,
फुदककर फुदककर नाच दिखाती.

बैठ पेड़ों की डाली पर,
झूले का आनंद उठाती.

चिड़िया होती बड़ी मतवाली
चिड़िया की बात निराली.

*****

गुरुवर जलते दीप से

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ', हरियाणा

दूर तिमिर को जो करें, बांटे सच्चा ज्ञान.
मिट्टी को जीवित करें, गुरुवर वो भगवान.

जब रिश्ते हैं टूटते, होते विफल विधान.
गुरुवर तब सम्बल बने, होते बड़े महान.

नानक, गौतम, द्रोण सँग, कौटिल्या, संदीप.
अपने- अपने दौर के, मानवता के दीप.

चाहत को पर दे यही, स्वप्न करे साकार.
शिक्षक अपने ज्ञान से, जीवन देत निखार.

शिक्षक तो अनमोल है, इसको कम मत तोल.
सच्ची इसकी साधना, कड़वे इसके बोल.

गागर में सागर भरें, बिखराये मुस्कान.
सौरभ जिसे गुरू मिले, ईश्वर का वरदान.

शिक्षा गुरुवर बांटते, जैसे तरुवर छाँव.
तभी कहे हर धाम से, पावन इनके पाँव.

अंधियारे, अज्ञान को, करे ज्ञान से दूर.
गुरुवर जलते दीप से, शिक्षा इनका नूर.

*****

बाल गणेश

रचनाकार- सोमेश देवांगन, पंडरिया कबीरधाम

गोल गोल हवय हाँथ गोड़,
चूक ले फबत ओखर सोड़.
करिया सुघ्हर घुँघरालु बाल,
ठुमुक ले रेंगय गौरी के लाल.
हाँथ मा लड्डू धर वो भागय,
माँ गौरी गन्नू कहि चिल्लाय.
लुका के मोदक गुप् ले खाय,
मुसवा बिचारा मुह चुचवाय.
बाल गणेश के लीला अपार,
दाई-ददा ल बता दिस संसार.

*****

शिक्षक होते हैं महान

रचनाकार- गौरव पाटनवार 'कान्हा', बिलासपुर

जिसने अ से लेकर ज्ञ तक
ए से जेड तक का कराया ज्ञान
वह सभी शिक्षक महान

जिसने दिखाया सपने हमें
सपनों से कराया पहचान
वे सभी शिक्षक महान

जिसने मोम की तरह जलकर
मेरे जीवन को किया उदीयमान
वे सभी शिक्षक महान

जिसने संस्कार को सिखाकर
बताया, सबका करना सम्मान
वे सभी शिक्षक महान

भूलकर न करना कभी अपमान
जीवन में करना सभी का सम्मान
क्योंकि सभी शिक्षक होते हैं महान

*****

शिक्षक दिवस पर समर्पित मेरी कलम से

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या", रायगढ़

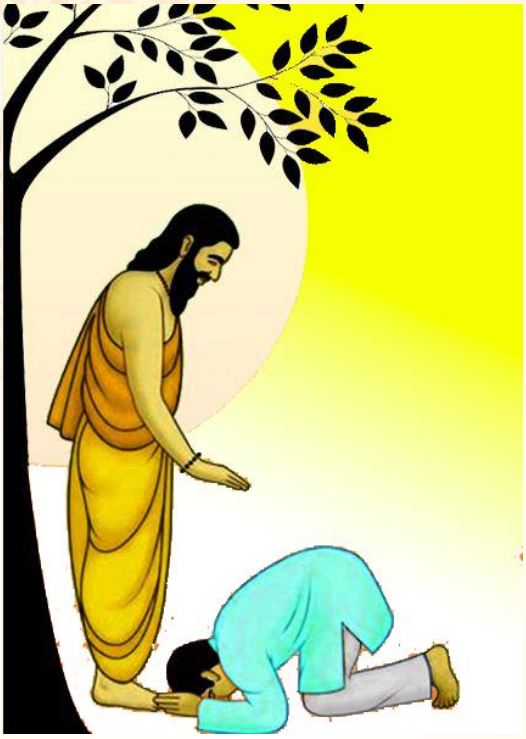

शिक्षक अपने ज्ञान से, देते शिक्षा दान.
अक्षर-अक्षर जोड़ कर, हमें सिखाते ज्ञान.
हमें सिखाते ज्ञान, देश के भाग्य विधाता.
त्याग भाव संसार, शिष्य के सच्चे दाता.
कह विद्या कर जोड़, सभी बच्चों के वीक्षक.
गुरुवर करूँ प्रणाम, ज्ञान के दाता शिक्षक.

शिक्षा देते हैं सदा, सकल जगत संसार.
शब्द सुमन से मिले, शिक्षा का आधार.
शिक्षा का आधार, ज्ञान गुरुवर से मिलता.
जीवन का वो मंत्र, पुष्प सम पावन खिलता.
कह विद्या कर जोड़, कर्म पथ पाकर दीक्षा.
भटक न जायें राह, यही सीखें हम शिक्षा.

शिक्षक जीवन ज्योति हैं, लौ सम जलकर दीप.
दिव्य ज्ञान है बाँटते, बनकर मोती सीप.
बनकर मोती सीप, जगत से तिमिर हटाते.
सर्वोपरि है ज्ञान, सदा अवसाद मिटाते.
सुन विद्या की बात, श्रेष्ठ गुरु बनें समीक्षक.
करती हूँ सम्मान, ज्योति सम हैं वो शिक्षक.

*****

शीश झुकाते

रचनाकार- सोमेश देवांगन, कबीरधाम

जल पीकर जो हल के लिए जल जाते,
सह जाता सबकुछ तब शिक्षक कहलाते.
अज्ञानता अंधकार कुरुप रूप धर आये,
ज्ञान के प्रकाश पुंज को गुरु तब फैलाते.
फैलाते रौशनी जब अपने देह को जलाते,
उन गुरुओं के सामने अपना शीश झुकाते.

बंजर सी धरती पर ज्ञान हरियाली उगाते,
सूखे सारंगो पर पकड़ सौरभ वो भर जाते.
दीपक बाती घृत तेल खुद बनकर वह तो,
प्रकाश फैला अपने नीचे अंधियारी लाते.
जो संस्कारों की मीठी टोकरी हमें दे जाते,
उन गुरुओं के सामने अपना शीश झुकाते.

पग पग पथ जब कठिन कठिनाइ है आते,
आस लगा अपने गुरुओं के पास है जाते.

वो कांटों पर बिछा देते अपनी हथेलियां,
काट के कठिन वो सरल रास्तें है बनाते.
खुद की खूबियां छोड़कर हम पे जा लुटाते,
उन गुरुओं के सामने अपना शीश झुकाते.

*****

कभी नहीं वे लड़ते

रचनाकार- विनय बंसल, आगरा

रोज सबेरे आँगन, छत पे,
चिड़ियाँ, तोते आते.
चूँ-चूँ, चीं-चीं, टें-टें, चें-चें,
गीत खुशी के गाते.

कोयल,बुलबुल,चिड़िया,तोते,
अपने सुर में गाते.
भाँति-भाँति की बोली सुनकर,
बच्चे नहीं अघाते.

बड़े ध्यान से देखें बच्चे,
जब ये चुगते जाते.
उड़ जाते सारे ही पक्षी,
सुन बच्चों की आवाजें.

सारे पक्षी पंख पसारे,
आसमान में उड़ते.
मिलजुलकर रहते आपस में,
कभी नहीं वे लड़ते.

*****

नादान बचपन

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

ओ नादान बचपन भी कितना प्यारा था.
ओ नादान बचपन भी कितना प्यारा था.
ना कोई गम, ना कोई जवाबदारी,
हर पल एक नया बहाना था.
हर पल एक नया बहाना था.
ओ नादान बचपन भी कितना प्यारा था.
सुबह से शाम तक था मौजों का ठिकाना
सुबह से शाम तक था मौजों का ठिकाना
बरसात के मौसम में पानी में भीगना
छपाक-छपाक गड्ढों में कूदना
गिरते पानी में बस्ता का छाता बनाना
ओ बचपन भी कितना प्यारा था.
ओ बचपन भी कितना प्यारा था.
कागज की कश्ती थी पानी का किनारा था
खेलने की मस्ती थी और कुछ नहीं सुझती थी.
स्कूल से भागने का बहाना
हो गया पूरा गीला आज मुझे

है जाना ऐसा तरह-तरह के बहाना.
दोस्तों के ऊपर कीचड़ छीटकाना,
लड़ना भी तो कीचड़ से लथपथ होकर
खेलना भी तो किचड़ में ही था
कितना मना करे न मानना था
ओ नादान बचपन भी कितना प्यारा था.
ओ नादान बचपन कितना प्यारा था.

*****

सतरंगी जीवों की आवाज

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा, रायपुर छत्तीसगढ़

बंदर करता ख़ौ -ख़ौ
कुत्ता करता भौं-भौं
कोयल करती कूं-कूं
चिड़िया करती चूँ - चूँ

कौआ बोले कांव-कांव
बिल्ली बोले म्याऊं - म्याऊं
हाथी चलता धम - धम
मोर नाचता छम-छम

तोता बोले टें -टें
बकरी बोले मे - मे
मक्खी बोले भिन-भिन
जुगनू करता टिम-टिम

मैना उड़ती फुर-फुर
भालू करता घूर-घूर
गैंडा भारी-भरकम
शेर दिखाता दम-खम.

*****

मैं मैं का विकार अज्ञान का ढारा है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोदिया महाराष्ट्र

मैं-मैं का विकार अज्ञान का ढारा है
नम्रता गहना ज्ञान का सहारा है
ज्ञानी को अज्ञानी से भी ज्ञान का
गुण लेना गुणवत्ता का सहारा है

बड़े बुजुर्गों के जीवन का हमें अटूट सहारा है
बड़े बुजुर्गों ने अहंकार पर तीर मारा है
कहावतों में ज्ञान बहुत सारा है
नीवां होके ग्रहण करो ज्ञान तुम्हारा है

बुजुर्गों ने कहा यह जीवन का सहारा है
सामने वाले से कहो तुम अज्ञानी नहीं हो
मैं ज्ञानी नहीं हूं जीत पल तुम्हारा है
नम्र बनके रहो खुशहाल पल तुम्हारा है

*****

सब पढ़े, सब बढ़े

रचनाकार- सोनल सिंह, दुर्ग

अज्ञानता के तिमिर में,
ज्ञान का प्रकाश हो.
दूर हो निरक्षरता,
साक्षरता का आभास हो.

साक्षरता हमें जगाती है,
शोषण से भी बचाती है.
देश को आगे बढ़ाती है,
जीवन सफल बनाती है.

जन जन तक पहुँचे शिक्षा,
आज ये संकल्प करें.
शिक्षा का कोई विकल्प नहीं,
इसे पाने का प्रण करें.

सब पढ़े सब बढ़े,
स्वप्न ये साकार हो.
साक्षर बने सारा समाज,
आओ इसका करें आगाज.

*****

बाल हाइकु

संकलित

1.

नीला जहान

खुला सा आसमान

नई उड़ान.

~ आकांक्षा जायसवाल (12 वीं)

SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

2.

चिड़िया होती

पंखों को फैला कर

मैं उड़ जाती.

~ उल्फी निराला (12 वीं)

SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

3.

नया सवेरा

हर दिन आता है

उमंगें नई.

~ फिरदौस खातुन (12 वीं)

SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

4.
जीवन तंग
कथन में सच्चाई
दुनिया दंग.
~ ताहीरा नाज (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

5.
उनसे मेरा
सार्थक है जीवन
वे मेरे मित्र.
~ माही अग्रवाल (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

6.
रौशन दिन
बता रहा सबको
उनका बिंब.
~ मनीष देवांगन (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

7.
शुभ सवेरा
प्रकृति कर रही
रौशन सारा.
~ लोकेश पटेल (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

8.
मात-पिता वो
जो प्रेम-ममता से
हैं परिपूर्ण.
~ तृप्ति पटेल (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

9.
अंधेरी रात
घने काले बादल
डराते स्याह.
~ रंजना भारद्वाज (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

10.
जीवन जीना
संघर्ष की राह में
खुशी का पर्व.
~ रश्मि पंकज (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

11.
विजन वन
घन करे गर्जन
बूँदें नर्तन.
~ रिमझिम अजय (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

12.
जीवन मेरा
सम्पूर्णता ले आयी
वह मेरी माँ.
~ अनु कच्छप (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

13.
नेक हो सोच
तो फिर किसी से क्यों
कैसा संकोच ?
~ लोकेश (12 वीं)
SAGES सारंगढ़ (छत्तीसगढ़)

14.

हवाएँ चली
सुमनों से सुगंध
गयी फैलती.

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक, सारंगढ़

*****

चल पहल कर

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

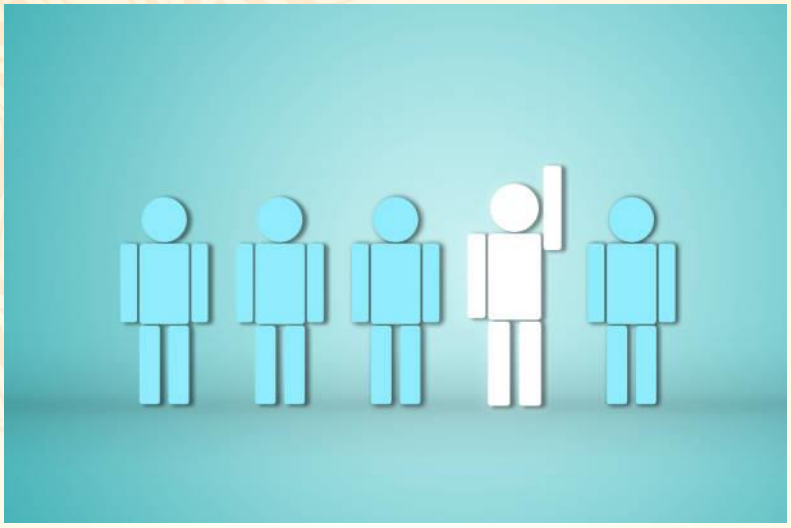

किसी के भरोसे क्यों रहना,
सब करें, उसके बाद क्यों करना.
भेड़ चाल क्यों जरूरी है चलना,
चल तू ही पहल कर,
किसी बात से तुझे नहीं डरना.

किसी की राह क्यों तकना,
बीतने के बाद क्यों समझना,
किसी के बाद में क्यों बनना.
चल तू ही पहल कर,
अनुभव से है क्यों डरना.

किसी के लिए क्यों ठहरना,
आलोचनाओं से क्यों बिखरना,
हर कदम पर जरूरी नहीं संभलना,
चल तू ही पहल कर.
जोखिम उठाने से ज्यादा क्या डरना.

क्यों अपने लक्ष्य से भटकना,
क्यों किसी की राह तकते हुए अटकना,
क्यों सटीक निर्णय करने से उलझना.
चल तू ही पहल कर.
खुद पर भरोसा तुझे है रखना.

क्यों बात बात पर एहसान जताना,
अस्थाई है सब,क्यों दिल लगाना,
पूरा हो ना हो तेरा सपना,
चल तू ही पहल कर.
तेरी योग्यता को तुझे है परखना.

सुन तेरी अंतरात्मा को, क्या है कहना
हर नई दिन के साथ तुझे है निखरना,
साहस के साथ तुझे है बढ़ना,
चल तू ही पहल कर.
समस्त गुणों से तुझे है संवरना.

*****

हम फरिश्ते से हो जाएं

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

फरिश्तों की तलाश क्यों आसमान में,
फरिश्ते तो है इसी जहान में,
जो भी मानवता भलाई के कार्य करें,
वह भी तो फरिश्तों सा ही महान है.

क्यों हम फरिश्तों को निकले ढूंढने,
क्यों ना हम खुद ही एक फरिश्ता बने,
नेकी, प्रेम और अच्छाई के साथ,
निकल जाए हम भी फरिश्ता बनने.

निगाहों में चमक फरिश्तों सी हो,
कर्मों में दमक फरिश्तों सी हो,
आसानी से नहीं मिलते हैं फरिश्ते,
स्वयं में बनने की ललक फरिश्ते सी हो.

सम्मान, समान और इमानदारी,
ज्ञानी, दयावान एवं जानकारी,

इन गुणों को हृदय से अपनाएं
करें आज से ही एक फरिश्ता बनने की तैयारी.

*****

कब तक को अभी मैं बदले।

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

कब तक कल पर छोड़ेंगे?
कब तक सपने तोड़ेंगे?
कब तक झूठी आस पर जिए?
कब तक जलाए उम्मीदों के दिए?

कब तक करेंगे नई शुरुआत?
कब तक रहेंगे यह हालात?
कब तक असफलताओं से डरे?
कब तक घुट घुट के मरे?

कब तक नहीं खुद पर भरोसा?
कब तक देंगे स्वयं को दिलासा?
कब तक हकीकत को नहीं अपनाए?
कब तक काबिलियत को ना आजमाए?

कब तक जीवन को हसीन ना बनाएं?
कब तक स्वयं को बेहतरीन ना बनाएं?

कब तक दूसरों की खामियां चुनेंगे?
कब तक आत्मा से यही सवाल पूछेंगे?

इस कब तक में जीवन ना निकल जाए,
आज से ही क्यों ना करके दिखाएं,
आज और अभी से ही संभले,
इस कब तक को अभी मैं बदले.

*****

वजह-बेवजह रूठना

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

वजह-बेवजह क्यों बार-बार रूठना,
छोटी-छोटी बातों पर बंधनों का टूटना,
क्यों ना जीवन में समझदारी दिखाएं,
शिष्टाचार, प्रेम और स्वाभिमान के साथ हो हमारा उठना.

जीवन में बहुत से कार्य और कर्म है,
जिम्मेदारियों के साथ जी रहे हम हैं,
क्यों हर बात पर शिकायत जताए,
यह जिंदगी तो सिर्फ एक भ्रम है.

खफा ना रहे हर वक्त अपनों के साथ,
आक्रोश में ना करें हर वक्त बात,
हर एक से शिकवा गिला रखकर
क्यों बिगाड़े हर पल के हालात.

बार-बार नाराजगी जताना बंद करें,
स्वयं की मानसिक तनाव से थोड़ा लड़े,
हर वक्त लोग और हालात बुरे नहीं होते,
कभी-कभी हम होते हैं खुशहाली से परे.

स्वीकृति अपने जीवन में लाएं,
सभी को दिल खोलकर अपनाएं,
कभी कभी रूठना मनाना चलता है,
हर बात पर आंसू ना बहाए
और बात बात पर आवेश में ना आए.

*****

चलो दशहरा का पर्व मनाएंगे

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

चलो दशहरा का पर्व मनाएंगे
दस कुप्रवृत्तियां हम मिटाएंगे
काम क्रोध मद लोभ सभी को
मोह माया मत्सर गर्व कुविचार
और हिंसा को भी हम त्यागेंगे
तभी हम दशहरा मना पाएंगे।
यह कुप्रवृत्तियां ही दशानन है
यही हम सब का बड़ा दुश्मन है
इन्ही दुश्मनों को दूर भगाकर
हमे विजय दशमी पर्व मनाना है
इन कुवृत्तियां से विजय पाना है
और शांति का रामराज्य लाना है
प्रभु राम की जयकारा लगाएंगे
इस धरा पर धर्म ध्वजा फहराएंगे
बुराई को धरती से दूर भगाएंगे
और अच्छाई का फूल खिलाएंगे

*****

लघु कथा मेरे दादा जी

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

मेरे दादाजी एक छोटे से गाँव में रहते थे. दादाजी अपने समय में कक्षा तीसरी तक पढ़े थे. दादाजी दो बार सरपंच, अनेक बार उपसरपंच या पंच हुआ करते थे. हमने जब से होश संभाला तब से दादाजी गाँव के मुखिया थे. हर जगह वे विवादों का फैसला करने जाते थे. हम जब पढ़ते थे तो हमने देखा कि हमारी शाला में 15 अगस्त और 26 जनवरी को हमारे दादाजी ही झंडा फहराया करते थे. दादाजी पंचायत भवन में भी झंडा फहराते, हमें बहुत अच्छा लगता था. हमारे दादा जी शाला प्रबंधन समिति के सदस्य भी थे. शाला की हर बैठक में दादाजी पहुँचते थे.

मेरे दादाजी मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे. गाँव में सभी उनका आदर करते थे. दादाजी वैद्य के रूप में भी कार्य करते थे. दादाजी के गाँव में सभी से अच्छे संबंध थे. दादाजी हम सब भाई बहनों को पढ़ाते और सिखाते और हमसे मौखिक गणित, तर्कशक्ति ,सामान्य ज्ञान और पहाड़ा पूछते थे. हमारे टेस्ट होते तब नंबर वे जरूर हमसे पूछते और अगली बार और अच्छा करने के लिए प्रेरित करते भी थे. हमारे लिए तरह - तरह के खिलौने मिट्टी लकड़ी और कपड़े के बनाते थे. हमने दादाजी से ही खिलौना बनाना सीखा था. कपड़ों की सिलाई ,बटन लगाना यह सब हमने दादा जी से ही सीखा था. दादाजी नदी से पत्थर लाकर उसे

जमीन पर घिसकर पेंसिल बनाते और हमें देते. हम उससे ही स्लेट पर लिखते थे. गर्मियों में पूरे मोहल्ले के बच्चे दादा जी के साथ गाँव की नदी में नहाने जाते. दादाजी हमें हर रोज नयी नयी कहानियाँ सुनाते. दादाजी से सुनी कहानियों को मैंने नया रूप देकर उन्हें अपने शब्दों में लिखकर एक पुस्तक का निर्माण किया और अपनी शाला में बच्चों को सुनाती हूँ. मेरे दादाजी हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे, हर समस्या का निराकरण भी करते थे.

दादाजी आज हम लोगों के बीच नहीं रहे पर उनकी यादें मन में आज भी समाहित है.

*****

साक्षर भारत सक्षम भारत

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

भारत साक्षर होगा
भारत सक्षम होगा.
विश्व साक्षरता का यह ध्येय है
सभी को पढ़ना–लिखना आए.
पढ़ना–लिखना बहुत कुछ कहता है
हम संस्कारवान बने सुसंकृत बने.
हम इस योग्य बने की
आत्मनिर्भर हो जाएं.
और यह भी कहता है की–
एकता भाईचारा और मानवीयता
की मिशाल पेश कर सकें.
हम राष्ट्रीय भावनाओं का सम्मान करें.

इसको आत्मसात करें.
तभी हमारा देश सही मायने में
साक्षर और सक्षम कहलाएगा.
मात्र पढ़ने लिखने से हमारा
ध्येय और लक्ष्य पूरा नहीं होगा.

ध्येय को पूरा करने के लिए
साक्षरता की महत्ता,उपयोगिता
को समझना होगा,जानना होगा.
साक्षरता अर्थात शिक्षा का विशेष महत्व.
राष्ट्र प्रगति करे,सामाजिक बदलाव आए.
चिंतन में, रहन–सहन में
आमूलचूल परिवर्तन आए.
लोगों के सोंच में बदलाव आए.
देश,समाज हित के लिए
सकारात्मक बदलाव आए.

*****

विद्या का मंदिर

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

विद्या का मंदिर ही मेरी शाला है
इसका पुजारी ही मेरा शिक्षक है.

मेरे शिक्षक, गुरुजन मार्गदर्शक है
मेरे जीवन का यही बड़ा सर्जक है.

यही ज्ञान कौशल का प्रदायक हैं
यही ज्ञान प्रज्ञा का बड़ा नायक है.

शाला ही अनुशासन का पर्याय है
यही तो सबक का नया अध्याय है.

शाला ही समता का पाठ पढ़ाती है
यही शाला ऊंच–नीच को मिटाती है.

मेरी शाला ही मानवता सिखाती है
यहीं नैतिकता मर्यादा बतलाती है.

मेरी शाला संस्कारों के गुण लाती है
यही आध्यात्मिकता को बतलाती है.

मेरी शाला जड़ता को दूर भगाती है
और यही ज्ञान के अलख जगाती है.

*****

मेरी शाला

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

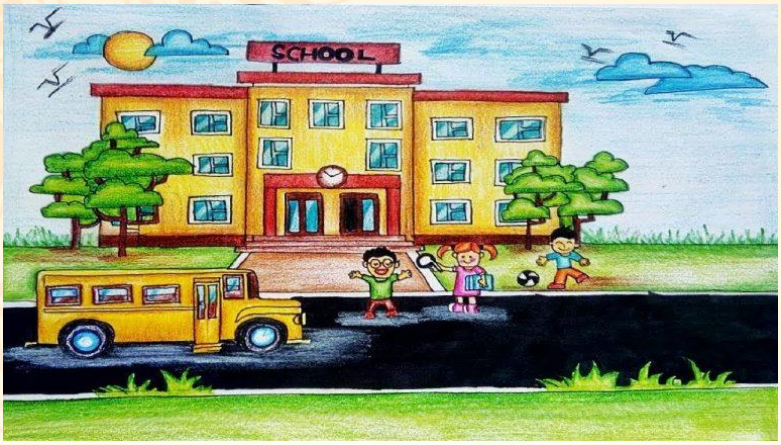

मेरी शाला विद्या का मंदिर है,
सफर यही से होती पाने मंजिल है.
गुरु को मैंने यही पहचाना है,
गुरु की महिमा को यही जाना है.
शाला ने मेरी पहचान करायी है,
शिक्षा, संस्कार इसी ने दिलायी है.
मेरी शाला का पुजारी मेरा गुरु है,
ज्ञान दीक्षा यही से करता शुरू है.
मेरी शाला ने मुझे बोध कराया है,
स्वावलम्बन से अवगत कराया है.
मेरी शाला ने समता का सूत्र बताया है,
ऊंच नीच छोटा बड़ा का भेद मिटाया है.
मेरी शाला ने मुझे ईमान-धर्म सिखाया है,
शुभ कर्म करने का नित राह दिखाया है.
मेरी शाला मुझे सदा प्रोत्साहित करती है,
मेरी शाला मुझे नित उत्साहित करती है.

*****

जीव दया

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", बालोद

पड़ोसी गांव के बच्चे साइकिल निकालकर प्रस्थान करने लगे. उनके जाने के बाद कमरों में ताला लगवा कर सभी शिक्षक भी निकलें, मैं भी घर वापसी हेतु निकला.

रास्ते में सड़क किनारे बड़े-बड़े घुरुवा के गड्ढे थे,जो कचरो से भरे हुए थे,और चारों तरफ बड़ा मैदान था जहां गांव की गायें चरने आई हुई थीं. गायों का झुंड आगे बढ़ गया था पर एक बहुत छोटा बछड़ा घुरूवा के दलदल में फंस गया था. चरवाहा ने भी ध्यान नहीं दिया.

बछड़ा निकलने का तो प्रयास कर रहा था पर असफल होकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था.

बच्चे छुट्टी के बाद अपने ही धुन में घर की ओर बढ़े चले जा रहे थे.किसी का ध्यान उस पर नहीं गया,पर कक्षा छठवीं के प्रतीक और अतीश नाम के दो बच्चों का ध्यान उस बछड़े पर गया.दोनों ने अपनी साइकिल बगल में खड़े की,और घुरुवा की बदबू, दलदल और अपने कपड़े की चिंता न करते हुए दलदल में घुस गए. और उस बछड़े को निकाल लिए.

बछड़ा खुशी से दौड़ते हुए अपनी मां से लिपट गया.मां उसे प्यार से चांटने लगी.बच्चों के इस सत्कर्म से मैं बहुत खुश हुआ और शुभकामना देकर उनके साथ हो गया.

*****

इठलाती हवा चली

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

स्कूल की घंटी बजी,
टन-टन-टन.
भागे दौड़े बच्चे,
दन-दन-दन.

इठलाती हवा चली,
सन-सन-सन.
बच्चों के बाल उड़े,
फर-फर-फर.

निश्छल हैं बच्चों का,
मन-मन-मन.
गुस्सा हो करते हैं,
तन-तन-तन.

नेकी कर और अच्छा
बन-बन-बन
खुशियों सा बरस बनकर
घन-घन-घन.

*****

ये लालटेन

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

तम को हरता
उजास लाता
दूरियाँ मिटाता
ये लालटेन.

विश्वास जगाता
नन्हा दीपक-
सूरज बन जाता
ये लालटेन.

कर्म सिखाता
शिक्षा की सदा
अलख जगाता
ये लालटेन.

निडर बनकर
डर को भगाता
बिंदास चलता
ये लालटेन.

खुद है जलकर
प्रकाश फैलाता
त्याग सिखाता
ये लालटेन.

हिम्मत दिखाता
आफतों से भी
खुद लड़ जाता
ये लालटेन.

चैन से हम सोते
वो है जागता
कब न घबराता
ये लालटेन.

जीवन जीने का
अर्थ समझाता
सदा मुस्काता
ये लालटेन.

*****

सच होंगे सपन

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

हौसले छूते गगन
मन में होती जब लगन
कद्र हो जब वक्त की
सच तभी होते सपन.

प्रेम के व्यवहार से
घुलता रिश्तों में अमन
मुस्कुराने से तेरे
खिलखिलाता ये चमन.

देख उनका हौसला
दिल से हम करते नमन.
सर कभी झुकने न दें
नलिन हम देते वचन.

*****

एक दीप उनके नाम

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

जो गुमनाम है
गुमराह है
बदनाम है
उनकी चौखट पर जलाएँ
एक दीप उम्मीद का.

जो अनाम है
बेदाम है
बेकाम है
उनकी चौखट पर जलाएँ
एक दीप विश्वास का.

जो बेबस है
लाचार है
निराश्रित है
उनकी चौखट पर जलाएँ
एक दीप प्यार का.

हम जिएँ
नन्हे दीपक का जीवन
और करें..
औरों की ज़िंदगियाँ रौशन.

*****

चिरैया

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

चिड़िया जब चीं चीं है करती
तो कितनी प्यारी है लगती
चिरैया के चहकने से ही
यह धरती सुंदर है बनती.

पेड़ पर करती है बसेरा
खूबसूरत इनसे सवेरा
कट रहें हैं ये दरख़्त बहुत
कहाँ डाले ये अपना डेरा.

गौरैया हैं मित्र हमारी
लगती वसुधा इनसे न्यारी
पास बुलाओ अपने इसको
समझो इसकी मुश्किल सारी.

नन्हे पर से सागर लांघे
कठिनाइयों से कभी न भागे

हिम्मत इसके संग चलती
आफत से ये कभी न डरती.

मीठे-मीठे गीत सुनाती
बहती नदी का पानी पीती
कितना मनोहर रंग इसका
धरती की ये रानी लगती.

*****

प्यारे बापू

रचनाकार- नलिन खोईवाल, इंदौर

कर्म का पाठ दुनिया को सिखाएंगे.
अहिंसा की राह चलकर दिखाएंगे.

सच्चाई के मार्ग से अब न हटेंगे.
नेकी की राह हम चलकर रहेंगे.

जीवन में अनुशासन को अपनाएंगे.
प्राणों से ज्यादा वचन हम निभाएंगे.

देश की खातिर हम मर मिट जाएंगे.
हँसते-हँसते ये जाँ फिदा कर जाएंगे.

वंदे मातरम का जयगान करेंगे.
गर्व से हम तिरंगा फहराएंगे.

भारत माँ के सपूत कहलाएंगे.
बापू का नाम रोशन कर जाएंगे.

एक देश एक भाषा हम बनाएंगे.
गर्व से शीष ऊँचा नलिन उठाएंगे.

*****

आ गया नवरात्रि

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

माँ दुर्गा की याद दिलाने,
आ गया नवरात्रि.
माँ दुर्गा की करो आराधना,
आ गया नवरात्रि.

जगह-जगह माँ दुर्गा,
प्रतिमा नजर आने लगी.
माँ का रुप मन को,
बहुत ही भाने लगी.

घर-घर में माँ दुर्गा की,
होने लगी पूजा पाठ.
माँ शेरा वाली की,
बहुत निराली ठाठ.

माँ के दर्शन करने,
सब नर-नारी आते.
चुनरी, नारियल, फूल, माला,
माँ को सब चढ़ाते.

*****

दशहरा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

राम की लीला दिखलाने,
आता है दशहरा.
बच्चों और बड़ो को,
भाता है दशहरा.

राम-रावण युद्ध को,
दिखलाता है दशहरा.
हर कोई मिल कर,
मनाता है दशहरा.

मेले में रावण का पुतला,
जलाने आता है दशहरा.
रावण पर विजय की खुशी,
मनाने आता है दशहरा.

*****

बंदरिया रानी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

एक बंदरिया आती है,
अपना नाच दिखाती है.
सब बच्चों का मन बहला कर,
पैसे खूब कमाती है.

एक मदारी वाला आता,
भालू का नाच दिखाता.
बच्चों को पास बुला कर,
डम-डम डमरु खूब बजाता.

हाथी दादा झूम-झूम कर,
केले खूब खाते हैं.
पीठ पर बैठा कर बच्चों को,
शहर खूब घुमाते हैं.

बिल्ली रानी म्याऊं-म्याऊं कह,
आंखें खूब दिखाती है.
चोरी कर के खाने से,
बाज नहीं आती है.

बैठ कर पिंजरे में तोता,
टाँय-टाँय चिल्लाता है.
घर वालों का नाम लेकर,
हर दिन रोज बुलाता है.

घर में मेरे रहती है,
प्यारी सी गौरैया.
आंगन में उतर कर,
खाना खाती है गौरैया.

*****

माँ सरस्वती माता

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

प्यार दो, प्यार दो,
माँ सरस्वती माता.
ढेर सारा ज्ञान दो,
माँ सरस्वती माता.

पढ़े-लिखें ज्ञानी बन जाएं,
ऐसा दो बरदान.
तेरी कृपा से हम,
बन जाएं खूब महान.

विद्या का हार दो,
मां सरस्वती माता
प्यार दो, प्यार दो,
मां सरस्वती माता.
ढेर सारा ज्ञान दो,
माँ सरस्वती माता.

श्वेत वस्त्र धारण करने वाली,
हंस की तेरी है सवारी.
तेरे हाथों में वीणा,
लगती बहुत प्यारी.

मिटा दो मेरे मन का अंधकार,
सरस्वती माता
प्यार दो, प्यार दो,
माँ सरस्वती माता.
ढेर सारा ज्ञान दो,
माँ सरस्वती माता.

पुस्तक प्रेमी माँ तू,
सबको बांटती रहती ज्ञान.
तेरी वंदना और पूजा,
करता है सारा जहान.

सबको देती मान सम्मान,
मां सरस्वती माता.
प्यार दो, प्यार दो ,
माँ सरस्वती माता.
ढेर सारा ज्ञान दो,
माँ सरस्वती माता.

*****

पी पी पी करती मोटर चली

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

पी पी पी करती मोटर चली
ले कर नानी के गांव चली.
शोर मच गया देखो
गांव की गली गली.

मैं बोली नानी से
हमें अपना बाग दिखाओ.
आम संतरा केला जामुन
हम सब को खिलाओ.

रोज रात को नानी मेरी
परियों की कहानी सुनाती.
सुना कर लोरी प्यारी प्यारी
हम सब को सुलाती.

ओम यीशु वैष्णवी रुद्राक्ष
सब के सब आ जाते.
नानी से ले कर रुपैया
वापस घर को आते.

*****

दादी तेरी मोरनी को मोर ले गया

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

दादी तेरी मोरनी को मोर ले गया
देखो उसको उसका चितचोर ले गया.

बात ले मेरी मान दादी
रोना धोना छोड़ दे.
जल्दी से तू थाने जा कर
थानेदार से बोल दे.

जो होना था वह हो गया

दादी तेरी मोरनी को मोर ले गया
देखो उसको उसका चितचोर ले गया.

चलो चलो हम दादी उसे ढूंढने चलते हैं
जंगल मे चल कर उसे खोजते हैं.
जंगल के राजा शेर से
सारी बात हम कहते हैं .

लगता है मोर मोरनी का दीवाना हो गया

दादी तेरी मोरनी को मोर ले गया
देखो उसका चितचोर ले गया.

देखो दादी अब तो कुछ न होने वाला है
लाख खोज लो जंगल में मोर न मिलने वाला है.
चलो चलें हम घर को वापस
बरसात होनै वाला है.
मोर मोरनी नहीं मिले सुबह से शाम हो गया

दादी तेरी मोरनी को मोर ले गया
देखो उसको उसका चितचोर ले गया.

*****

अखरोट

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

यह देखो प्यारा अखरोट
गोल गोल न्यारा अखरोट.
बहुत सख्त बहुत कड़ा है
पत्थर जैसा तगड़ा अखरोट.

फोड़ कर इसे खाते सब
ताकत देता है अखरोट.
कश्मीर की वादियों में
फलता फूलता है अखरोट.

सब डाईफ्रुटों में अपना
अलग रुप दिखलाता अखरोट.
जो इसकी खूबी को जानता
वही रोज खाता अखरोट.

गुदा टेढा मेढा होता
स्वाद भरा होता अखरोट.
बादाम से ज्यादा ताकत
सबको देता है अखरोट.

*****

चंदा मामा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

रोज रात को घर से निकल कर
खूब घुमते चंदा मामा.
रुस चीन जापान अमेरिका
खूब घुमते चंदा मामा.

आसमान की सैर सपाटा
जी भर करते चंदा मामा.
सारी दुनिया सो जाती है
मगर जागते चंदा मामा.

न कोई उड़न खटोला होता
न जहाज में बैठते चंदा मामा.
फ्री में सारी दुनिया
रोज घुमते चंदा मामा.

कभी अकेले नजर आते
कभी तारों को लाते चंदा मामा.
भारत में तो बच्चे सारे
कहते उनको चंदा मामा.

*****

कर्तव्य पथ पर चल

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

संकल्प लिये मन मे
हर पल नये जोश मे
कर्तव्य पथ पर चल

आशा,तृष्णा सब छोड़ कर
काम,वासना से परे डग पर
कर्तव्य पथ पर चल

ज्ञानदीप से हो उजियार
उज्जवल भविष्य निहार
कर्तव्य पथ पर चल

अस्मिता की रक्षा कर
जीवन पथ सुधार कर
कर्तव्य पथ पर चल

आत्मबल से लीन हो
समर्पित जब भाव हो
कर्तव्य पथ पर चल

तु बढ़ चले जतन से
तन मन और धन से
कर्तव्य पथ पर चल

कर्म ही प्रधान जब
करे सत्कर्म हम सब
कर्तव्य पथ पर चल

उमंग और बहार मे
आनंद की फुहार मे
कर्तव्य पथ पर चल

मानवता की राह मे
ठहराव और प्रवाह मे
कर्तव्य पथ पर चल

छोड़कर अभिमान सब
मानव है,तो मान अब
कर्तव्य पथ पर चल

*****

चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

कलियाँ ही खिल कर बनती है सुमन,
सुवासित होता है जिससे सदा चमन.
चलो फिर से कलियों को नया बाग दे,
चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे.

गुल मे खिलते ही रहेंगे सुमन सदा,
बादलो की बदलती रहे नित अदा.
अब हर मौसम को नया सुर-साज दे,
चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे.

बहारों मे कलरव करती है पंछिया,
गूंजती है जिससे प्रतिदिन वादिया.
चलो वादियों को नया आगाज दे,
चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे.

अब तो हर दिन एक नई बात हो,
अंधेरों के शहर में कभी प्रभात हो.
हर सुबह को एक नया आज दे,
चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे.

अब हर शहर में अमन का हो बसर,
खुशियों का जहाँ में होता रहे असर.
अमन का सदा जग को पैगाम दे,
चलो जिंदगी को नया अंदाज़ दे.

*****

शिक्षा और समाज

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

शिक्षा किसी देश की रीढ़ की हड्डी के समान होती है, जिसकी मजबूती उस देश को भी मजबूती प्रदान करती है. शिक्षा समाज की अनिवार्य आवश्यकता है. जिस प्रकार किसी देश के विकास के लिए वहां की अर्थव्यवस्था का मजबूत होना आवश्यक होता है और उसे मजबूत करने के लिए पूरा तंत्र कार्य करता है और लगातार अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की बात कही जाती है. अर्थव्यवस्था से ऊपर भी कोई तत्व है, तो वो है, शिक्षा ,जो कि देश के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है. शिक्षा के माध्यम से ही पूरे समाज का ताना-बाना बुना जाता है. कहते है किसी समाज में जिस प्रकार की शिक्षा दी जाती है उसी प्रकार से समाज का निर्माण होता है. यदि शिक्षा व्यवस्था बेहतर होगी तो बेहतर समाज का निर्माण होगा. शिक्षा कमजोर होगी तो कमजोर समाज का निर्माण होगा अर्थात समाज की उन्नति और पतन दोनों में ही शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है.

शिक्षा में जीवन जीने के सारे कौशल भी आते है जो कि स्वस्थ्य समाज निर्माण के लिए आवश्यक तत्व है. इसमें नैतिकता का ज्ञान,संस्कृति का संरक्षण,सम्मान का भाव समानता के भाव को विकसित किए जाने की आवश्यकता है. शिक्षा के माध्यम से मनुष्यों मे दयालुता ,मानवता के गुण भी विकसित किए जाते है.

इसके लिए शिक्षा के सभी केंद्रों को बेहतर और विकसित करने की आवश्यकता है, जिससे शिक्षण व्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सके और शिक्षा को उनके उचित आयामों तक पहुंचाया जा सके, जिससे शिक्षा बेहतर से बेहतरीन की ओर आगे बढ़ सके.

आइये शिक्षा प्रदान करने वाले केंद्रों की भी चर्चा करते है. सबसे पहले शासन द्वारा संचालित सभी शिक्षण केंद्रों का जिसमें प्राथमिक से लेकर उच्चतर शिक्षा, तदुपरांत महाविद्यालय शिक्षा केंद्रों का नाम आता है. सभी केंद्रों का नियंत्रण और कुशल संचालन सरकार द्वारा किया जाता है. उसके लिए पूरा सरकारी तंत्र विकसित किया गया है. इतनी सारी कवायदो के बावजूद शिक्षा का स्तर में आवश्यक सुधार और उन्नत समाज का निर्माण नहीं हो पा रहा है. इस पर गहन विचार करने की आवश्यकता है. कुछ अन्य पहलुओं पर बात करें जिसके माध्यम से शिक्षा को बच्चों तक कैसे आसानी से पहुंचाया जा सके और स्वस्थ समाज और सांस्कृतिक समाज का निर्माण किया जा सके.शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए शिक्षक, पालक और समुदाय का सहयोग जब तक नहीं मिलेगा तब तक शिक्षा में सफलता प्राप्त नहीं होगी. फिर स्वस्थ्य शिक्षा और स्वस्थ समाज की कल्पना करना केवल कोरी कल्पना ही होगी.

तमाम विसंगतियों के बावजूद भी शिक्षक, शिक्षा के लिए कृत संकल्पित होकर कार्य कर रहा है. परंतु अकेले शिक्षक के कार्य करने से ही शिक्षा में बेहतरी की कल्पना करना असंभव प्रतीत होता है. शिक्षा का लक्ष्य विराट है और शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्य जिसमें सारे लक्ष्यों को सार रूप मे सर्वांगीण विकास के नाम से जानते है. इसे प्राप्त करना अकेले शिक्षक के बस की बात नहीं है शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें समाज के साथ मिलकर कार्य करने की आवश्यकता होगी. इसमें पालक बालक और विद्यालय सब के सामूहिक सरोकार की आवश्यकता है.जिस प्रकार अच्छी फसल के लिए अनुकूल वातावरण और जलवायु आवश्यकता होती है उसी प्रकार शिक्षा के लिए भी अनुकूल वातावरण समाज के माध्यम से बनाने की अवश्यकता है. तभी शिक्षा को चरमोत्कर्ष की ओर ले जा सकेंगे. परंतु अफसोस, शिक्षा की व्यवस्था में कमी, या शिक्षा में कमी के लिए केवल शिक्षक को कमजोर मानते है.

शिक्षा में कमी के लिए केवल शिक्षक को जिम्मेदार ठहराना सर्वथा अनुपयुक्त प्रतीत होता है. शिक्षक निश्चित रूप से शिक्षा व्यवस्था की एक जिम्मेदार कड़ी है, फिर भी अकेले ही शिक्षा की सारे आयामों की प्राप्ति शिक्षक नहीं कर सकता. उसके लिए समाजिक सहयोग और अनुकूल वातावरण का होना भी अनिवार्य है.

शिक्षा की आवश्यकता को पूर्ण करना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है जिसे मिलकर निर्वहन करना चाहिए.

तभी शिक्षा अपने समय के साथ विकसित होकर विकास की ओर बढ़ेगी और पालक बालक और वातावरण के सामंजस्य के चलते शिक्षा के नए आयामों की प्राप्ति की जा सकेगी. शिक्षा के लिए बेहतर माहौल तैयार की जा सकेगी और फिर शिक्षा अपनी नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने हेतु निरंतर आगे बढ़ती जायेगी.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ऐसे ही कुछ सामाजिक सरोकार की बात करती है, जिसके माध्यम से समाज के लोगों को शिक्षा की मूल धारा से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा और शिक्षा को बेहतर करने के लिए और उनके

सारे आयामों को प्राप्त करने के लिए लगातार कवायद शुरू की जाएगी. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिपेक्ष्य में यदि हम देखें तो उसमे दिए गए बहुत सारे तथ्यों को अमलीजामा पहना दिया जाए तो शिक्षा की मूल धारा की ओर आसानी से बढ़ेंगे इसमें सामाजिक सरोकार की बात कही गई जिसमें पालक समुदाय और ग्रामीण जनों का शिक्षा में भागीदारी सुनिश्चित करने की भी मंशा है. शिक्षक दिवस के इस पावन पर्व पर शिक्षा की बात करना अति आवश्यक हो जाता है. शिक्षा से ही संस्कारों का उद्गम होता है गांव,देशऔर समाज का विकास होता है. आइए हम सब मिलकर शिक्षक दिवस पर आज संकल्प ले कि शिक्षा और शिक्षा के विकास के लिए समाज और सामाजिक सरोकार की ओर एक कदम आगे बढ़कर शिक्षा के बदलाव में अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुये हम सब मिलकर एक बेहतर शिक्षा की ओर आगे बढ़े, ताकि देश और दुनिया में भारत का नाम रोशन हो और हमारी भावी पीढ़ी पूर्ण जिम्मेदारी के साथ राष्ट्र निर्माण मे अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सके.

*****

आओ बच्चों दशहरा मनाएँ

रचनाकार- महेन्द्र साहू, बालोद

आओ बच्चो दशहरा मनाएँ
सदमार्ग को हम सब अपनाएँ.

बुराई पर हम विजय पाएँ
अच्छाई को हम गले लगाएँ.

झूमें, नाचें, गाएँ, इतराएँ
मिलकर सब खुशियाँ मनाएँ.

अच्छे संस्कार का प्रण लें
कुसंगति को शीघ्र तज दें.

कभी ना हम करें ईर्ष्या-द्वेष
मिलकर करें सभी उन्मेष.

असत्य का न दें साथ कभी
रखना सदा सत्य पर विश्वास.

मन में राम बसाये रखना
करना रावण का सर्वनाश.

(उन्मेष=विकास, प्रगति, उन्नति)

*****

दीपों का त्यौहार

रचनाकार- महेन्द्र साहू, बालोद

दीप जले हैं घर आँगन में
दीपों का त्यौहार है आया.

जगमग-जगमग घर आँगन
सबके मन खुशियाँ समाया.

नए-नए कपड़े पहनकर
बच्चों का मन इतराया.

देख पटाखें, फुलझड़ियाँ
बच्चों का मन हर्षाया.

खिल,बताशे, रसगुल्ले से
मुनिया का मन ललचाया.

दूर खड़े सोनू-मोनू भी
देख मिठाई दौड़े आए.

देख रहा हामीद दीवाली
उसके मन को भी भाया.

धूमधाम से मिलकर सबने
दीपावली त्यौहार मनाया.

*****

नदी की दुर्दशा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

कहाँ गये वो दिन अब सारे,
पास सभी जब आते थे.
कभी खुशी की बातें करते,
गम भी कभी सुनाते थे.

कलकल-कलकल बहती रहती,
दिखती सुंदर हरियाली.
फूल खिले जब रंग-बिरंगे,
झूमे पीपल की डाली.
जामुन अमुआ अमरुद इमली,
तोड़-तोड़ ले जाते थे.
कहाँ गये वो दिन अब सारे,
पास सभी जब आते थे.

मछली मेंढक सर्प केंचुआ,
मस्त मजे से रहते थे.
उछल-कूद करते थे मिलकर,
भाषा अपनी कहते थे.
स्वच्छ नीर की निर्मल-धारा,

अपनी प्यास बुझाते थे.
कहाँ गये वो दिन अब सारे,
पास सभी जब आते थे.

मानव जब भी गम में होते,
शांत सभी को करती थी.
ठंडी-ठंडी पवन चले जब,
तन में आहें भरती थी.
बैठ किनारे बातें करते,
हँसते और हँसाते थे.
कहाँ गये वो दिन अब सारे,
पास सभी जब आते थे.

सूखी-सूखी पड़ी अकेली,
अब मानव भी मुख मोड़े.
नीर बहाती रहती हूँ मैं,
जीव-जंतु मुझको छोड़े.
पहले जैसी नहीं रही मैं,
आकर गले लगाते थे.
कहाँ गये वो दिन अब सारे,
पास सभी जब आते थे.

*****

माता-पिता में ही गुरु समाया है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

मात-पिता में ही गुरु समाया
हजारों पुण्य फल उनकी सेवा में समाया
सारे तीरथ बार-बार के तुल्य
माता-पिता की सेवा एक बार

माता-पिता हर घर की शान है
उनके बिना सब निर्जन समान है
माता पिता है तो समाज में नाम है
हमारे लिए वे ईश्वर अल्लाह भगवान है

माता-पिता से ही अपनी पहचान है
दुनिया में यह दोनों अति महान है
नहीं चाहिए मुझे कुछ यें मेरे सब कुछ है
मैं उनसे और वे मुझसे बहुत खुश हैं

जानवर से बदतर हैं वे लोग
जिसने किया माता-पिता का अपमान है
किस्मत वाले हैं वे लोग जिनके ऊपर
अभी माता-पिता दृष्टि मान है

माता-पिता मेरे ईश्वर अल्लाह है
वे मेरी जमीन और आसमान हैं
वे ही मेरे खुदा और भगवान हैं
उनके चरणों में मेरा सारा जहान है

ईश्वर अल्लाह से विनती मेरी है
माता-पिता के साथ स्थिर रखना मेरे पल
समय का चक्र घूमता है पर कर दो इसे अचल
माता-पिता के चरणों में रखना
ना भटकूं आज ना कल.

*****

भारत का आर्थिक मोर्चे पर दमदार आगाज़

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का मजबूत, होना उस देश की स्थिति को सुदृढ़ और पूर्ण विकसित देशों में अपने दावेदारी के मानकों में वृद्धि करती है. स्वभाविक ही है कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उस देश की प्रतिष्ठा में जबरदस्त उछाल आता है. दुनियाभर के निवेशकों की नजरें उस देश में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित रहती है. दुनिया के निवेशकों का बहुत बड़ा भाग उस देश में निवेश करने आता है और अर्थव्यवस्था की सीढ़ी को ऊँचाई तक ले जाने वाले पहिए अपने आप बनते चले जाते हैं. आज ऐसी ही कुछ बात हमारे भारत देश के साथ होने की ओर अग्रसर है, क्योंकि भारत ने दुनिया की 5 टॉप इकोनामी में इंट्री ले ली है. भारत ने ब्रिटेन को पीछे छोड़कर तिमाही आधार पर यह स्थान हासिल किया है और भारत की ग्रोथ को देखते हुए भारत दुनिया की पाँचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा तथा यह स्थान स्थाई होगा और आगे चलकर जैसा कि हमारे विजन 2047 विजन 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था पर काम कर रहे हैं हम आर्थिक मोर्चे पर विश्व गुरु जरूर बनेंगे ऐसा मेरा मानना है.

इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड (आईएमएफ) के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था में लगातार मजबूती देखने को मिल रही है, जिसके कारण 2021 के आखिरी तीन महीनों में भारत ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए 5 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है. आईएमएफ के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था में यह ग्रोथ 2022-23 में भी जारी है, जिसके कारण भारत साल के आधार पर भी दुनिया का सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन सकता है.

कोरोना महामारी को मात देकर भारत की अर्थव्यवस्था ने तेजगति से अपना विस्तार किया है. एक अनुमान के मुताबिक, चालू वित्त वर्ष में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 13.5 फीसदी रही है.

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के सकल घरेलू उत्पाद के आँकड़ों के अनुसार, भारत ने पहली तिमाही में बढ़त हासिल कर ली है. अभी दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में अमेरिका है. जबकि दूसरे नंबर पर चीन फिर जापान और जर्मनी का नंबर है. एक दशक पहले भारत इस सूची में 11वें नंबर पर था और ब्रिटेन पाँचवें पायदान पर. भारत ने यह कारनामा दूसरी बार किया है. इससे पहले 2019 में भी ब्रिटेन को छठे स्थान पर धकेल दिया था.

भारत की वृद्धि दर की बात करें तो विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में दूसरे नंबर पर काबिज चीन आसपास भी नहीं है. अप्रैल-जून तिमाही में चीन की वृद्धि दर 0.4 प्रतिशत रही है. वहीं कई अन्य अनुमान बताते हैं कि सालाना आधार पर भी भारत के मुकाबले में चीन पीछे रह सकता है.

राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (एनएसओ) ने बीते दिनों आँकड़े जारी किए थे. इनके मुताबिक, अप्रैल-जून तिमाही में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर 17.6 फीसदी रही, जो इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 10.5 फीसदी रही थी. कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 4.5 फीसदी रही. 2021-22 की पहली तिमाही में 2.2 फीसदी रही थी.भारत ने हाल में चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के जीडीपी के आँकड़े जारी किए हैं. इसके मुताबिक भारत दुनिया में सबसे तेज आर्थिक वृद्धि वाली अर्थव्यवस्था है. चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी वृद्धि दर 13.5 फीसदी रही, जो पिछले एक साल में सबसे अधिक है. नकदी के संदर्भ में देखें तो भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार मार्च तिमाही में 854.7 अरब डॉलर है, जबकि ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था 816 अरब डॉलर की है.

बात अगर हम अर्थव्यवस्था के पाँचवी रैंकिंग पर आने के आम लोगों पर असर की करें तो भारत की अर्थव्यवस्था फिलहाल महंगाई, रुपये में गिरावट, महंगे कच्चे तेल, कमोडिटी कीमतों से जूझ रही है. और इन चुनौतियां का सामना सिर्फ भारत ही नहीं पूरा विश्व कर रहा है. यकीनन रैंकिंग बढ़ने का तुरंत ही कोई असर नहीं दिखेगा. क्योंकि महंगाई जैसी वजहें सारी अर्थव्यवस्थाओं पर हावी हैं और इसी वजह से अर्थव्यवस्थाओं का साइज घट बढ़ रहा है. हालांकि ऐसा नहीं है कि भारत के लिए ये उपलब्धि सिर्फ नाम की है. मध्यम से लंबी अवधि के बीच टॉप 5 में शामिल होना अर्थव्यवस्था के लिए न केवल सकारात्मक है साथ ही इसका प्रभाव आम लोगों की जिंदगी पर पड़ेगा.

*****

दादा-दादी दिवस

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, हरियाणा

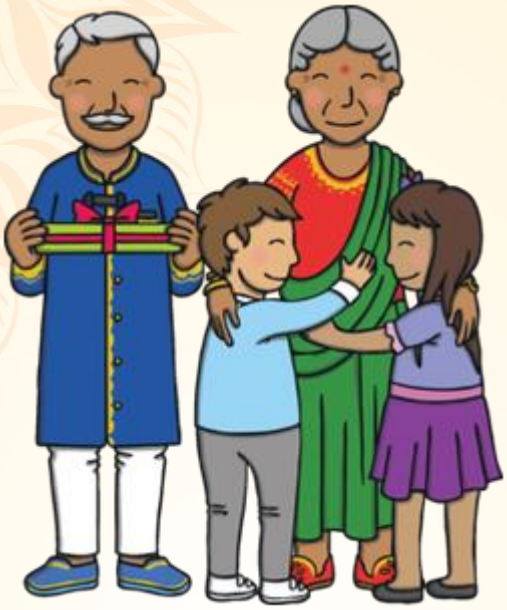

दादा-दादी अपने पोते-पोतियों के लिए वरदान हैं. वे अपने साथ वर्षों का अनुभव लेकर आते हैं जो उन्हें निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में मदद करता है. दादा-दादी भी परिवार में ढेर सारी खुशियाँ जोड़ते हैं, खासकर पारिवारिक समारोहों और विशेष अवसरों के दौरान. वे आज के परिवारों के बदलते चलन के साथ भी खूबसूरती से फिट बैठते हैं. अपने दादा-दादी के साथ रहने वाले किसी बच्चे से पूछें और वे आपको बताएँगे कि उन्हें अपने दादा और दादी के साथ दोस्ती करने में कितना मज़ा आता है. दादा-दादी की एक भव्यता होती है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है. वे निश्चित रूप से पिता की परवरिश की तुलना में अधिक खुशी देते हैं. हालाँकि, दादा-दादी की शैलियाँ परिवार से परिवार, संस्कृति से संस्कृति और राष्ट्र से राष्ट्र में भिन्न होती हैं. प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में दादा-दादी की भूमिका कम नहीं है. एक बच्चे की बढ़ती अवस्था महत्वपूर्ण होती है. यह तब होता है जब वह जीवन के बारे में सीखता है. अक्सर इस व्यस्त दुनिया में माता-पिता अपने बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम नहीं बिता पाते हैं. हालाँकि, बच्चे अपने दादा-दादी की उपस्थिति में नैतिकता और जीवन के मूल मूल्यों को सीखना शुरू करते हैं.

अपने दादा-दादी के साथ बातचीत से आप दुनिया का पता लगा सकते हैं. आप उनके जीवन को करीब से देखने को मिलते हैं. जब आप अपने दादा-दादी के करीब होते हैं तो आप साझा करने और देखभाल करने की आदतें पैदा करते हैं. आपके माता-पिता आपको डांट सकते हैं, लेकिन आपके दादा-दादी ऐसा कभी नहीं करेंगे. वे जीवन भर आपके सबसे बड़े समर्थक हैं. आजकल, एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति के साथ,

दादा-दादी आमतौर पर परिवार के साथ नहीं रहते हैं और कभी-कभार इलाज करने के लिए जाते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि अपने बच्चों को पालने में माता-पिता को सलाह देने या सलाह देने में बड़ी मात्रा में निवेश करें. वे वास्तव में पोते-पोतियों के साथ मस्ती के समय की तलाश कर रहे हैं और बड़े पैमाने पर अपने सुरक्षित आश्रय में रहते हैं. वे अधिक आराम से हैं और पोते-पोतियों की जिम्मेदारी लेने के बजाय, वे उनके समर्थक और दोस्त के रूप में कार्य करते हैं. फिर भी, उनके पास हमेशा बिना शर्त प्यार, देखभाल और स्नेह होता है, चाहे वे कितनी भी दूर क्यों न हों. दादा-दादी पारिवारिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो पूरे परिवार को छाया देने वाले पेड़ के रूप में कार्य करते हैं.

परिवार के बड़े सदस्य परिवार के सभी कर्तव्यों का वहन करते हैं. वे पूरे परिवार को अपना अविभाजित ध्यान और चिंता देते हैं. दादा-दादी का साथ होना सौभाग्य की बात है. हमारे दादा-दादी ने हमारे माता-पिता के जीवन को आकार दिया है, और हम उनके बिना जीवन के बारे में उतना नहीं जान पाते. यद्यपि वे शिक्षक नहीं हैं, पर वे हमें दैनिक आधार पर जीवन के बारे में पढ़ाते हैं. वे हमें विभिन्न कहानियाँ सुनाते हैं, जिनमें से प्रत्येक का अंत एक सुंदर नैतिकता के साथ होता है. कहानियाँ काल्पनिक हो सकती हैं, लेकिन वे जीवन को वैसे ही चित्रित करती हैं जैसा वह है. दादा-दादी बच्चों के सबसे अच्छे दोस्त होते हैं, जिनके साथ वे अपने रहस्यों को खुलकर साझा कर सकते हैं. दादा-दादी भगवान का एक उपहार है जिसे हमें संजोना चाहिए. हम आज की दुनिया में अपने दादा-दादी को भूल गए हैं क्योंकि हम सभी को एकल परिवारों की जरूरत है. हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि वे ईश्वर के अमूल्य उपहार हैं जो हमें दूसरों का सम्मान करना और भविष्य में एक सभ्य जीवन जीना सिखाते हैं. दादा-दादी जिम्मेदार व्यक्ति होते हैं जो हमें भविष्य में जिम्मेदार नागरिक बनना सिखाते हैं. हमारे जीवन में उनकी उपस्थिति के बिना, जीवन उतना शांत नहीं होता.

वे हमारे निर्णय लेने वाले हैं, जिनके बिना हमें कभी भी सर्वोत्तम विकल्प बनाने का अवसर नहीं मिलता. उनके पालन-पोषण के कारण ही हम अभी सही रास्ते पर हैं. दादा-दादी हमें गलतियाँ करना और सही दिशा में इशारा करना सिखा सकते हैं. इस प्रकार दादा-दादी एक परिवार के सबसे महत्वपूर्ण सदस्य होते हैं, जिनके बिना हमारा जीवन भयानक होता. इसलिए हमें अपने जीवन में उनके महत्व को महत्व देना चाहिए. जब वे बूढ़े हो जाते हैं, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनकी उचित देखभाल करें और उनके साथ कुछ क्वालिटी टाइम बिताएं. पिछले कुछ वर्षों में, सामाजिक परिवर्तन के कारण दादा-दादी पर अधिक जिम्मेदारियां देखी गई हैं. कई परिवारों में, जहाँ माता और पिता दोनों काम कर रहे हैं, बच्चों का पालन-पोषण दादा-दादी ही कर रहे हैं. यह आवश्यक है कि यह बदली हुई भूमिका वरिष्ठों को स्वीकार्य होनी चाहिए और उन्हें बेबी-सिटर्स के रूप में नहीं माना जाता है. हालांकि हर दादा-दादी, मुझे यकीन है, जब जरूरत की घड़ी में, विशेष रूप से गर्भधारण या त्योहार के समय में बुलाया जाता है, तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

करना पसंद करेंगे. मेरा दृढ़ विश्वास है कि बच्चों के जीवन में वरिष्ठों की एक विशेष भूमिका होती है, एक ऐसी भूमिका जिसे कोई नहीं बदल सकता.

दादा-दादी बच्चों को इतिहास, विरासत और पहचान की भावना हासिल करने में मदद करते हैं. वे अतीत से एक महत्वपूर्ण संबंध प्रदान करते हैं. दादा-दादी महत्वपूर्ण पारिवारिक परंपराओं और जीवन की कहानियों को पारित कर सकते हैं कि एक पोता न केवल युवा होने पर आनंदित होगा बल्कि समय के साथ और भी अधिक सराहना करेगा दादा-दादी एक मूल्यवान संसाधन हैं क्योंकि उनके पास साझा करने के लिए अपने स्वयं के जीवन से बहुत सारी कहानियां और अनुभव हैं. अक्सर बच्चे दादा-दादी की बात तब भी सुनते हैं, जब वे अपने माता-पिता या अन्य वयस्कों की बात नहीं सुन रहे होते हैं. दादा-दादी भी बच्चे की सांस्कृतिक विरासत और पारिवारिक इतिहास के लिए एक लिंक प्रदान करते हैं.

*****

हिंदी हृदय गान है

रचनाकार- सत्यवान 'सौरभ', हरियाणा

आन-बान सब शान है,और हमारा गर्व.
हिंदी से ही पर्व है, हिंदी सौरभ सर्व.

हिंदी हृदय गान है, मृदु गुणों की खान.
आखर-आखर प्रेम है,शब्द-शब्द है ज्ञान.

बिंदिया भारत भाल की, हिंदी एक पहचान.
सैर कराती विश्व की,बने किताबी यान.

प्रीत प्रेम की भूमि है, हिंदी निज अभिमान.
मिला कहाँ किसको कहीं, बिन भाषा सम्मान.

वन्दन, अभिनन्दन करें,ऐसा हो गुणगान.
ग्रंथन हिंदी का कर लो, तभी मिले सम्मान.

हिंदी भाषा रस भरी, रखती अलग पहचान.
हिंदी वेद पुराण है, हिंदी है हिन्दुस्तान.

हिंदी का मैं दास हूँ, करूँ मैं इसकी बात.
हिंदी मेरे उर बसे, हिंदी हो जज्बात.

निज भाषा का धनी जो, वही सही धनवान.
अपनी भाषा सीख कर, बनता व्यक्ति महान.

मौसम बदले रंग ज़ब, तब बदले परिवेश.
हो हिंदीमय स्वयं जब, तभी बदलता देश.

निज भाषा बिन ज्ञान का, होता कब उत्थान.
अपनी भाषा में रचे,सौरभ छंद सुजान.

एक दिवस में क्यों बंधे, हिन्दी का अभियान.
रचे बसे हर पल रहे, हिन्दी हिन्दुस्तान.

*****

हिन्दी माथे की बिंदी

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

गूँजे स्वर हिंदी जहाँ,आज देश परदेश.
चली हवा सदभाव की,गढ़ती सुंदर परिवेश.

हिंदी मात समान है, करें सभी है गर्व.
भाषा के उत्थान में,लगा देश है सर्व.

साहित्य जगत में सदा,बहे काव्य रसधार.
तुलसी कबीर ग्रंथ से,मिले ज्ञान भंडार.

हिंदी के विस्तार में,लगे सभी है जान.
विश्व गुरू हिंदी बने, सबका है अरमान.

हिंदी प्राणो में बसी,करते सब सम्मान.
भाषा की सरताज है,हिंदी बड़ी महान.

सरल सहज भाषा बडी, जीवन की आधार.
सबकी है ये लाडली,करे सभी है प्यार.

बोली इसकी है मधुर, कानों मिसरी धोल
बसे हृदय में है सदा, इसके मीठे बोल

जन जन की भाषा बने, आशा की है आस.
चमके बिंदी माथ पर, सबको हो आभास.

*****

साक्षरता

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

शासन की यह योजना, बड़ी सुखद है जान.
तीनों पीढ़ी बैठकर,एक साथ लें ज्ञान.

पढ़ेंगे-लिखेंगे जब सभी,होगा तभी विकास.
होगी दूर अज्ञानता, फैले सदा उजास.

साक्षरता माध्यम बनी,बढ़े देश का मान.
बड़ा नेक अभियान है, करें सभी सम्मान.

सभी लोग साक्षर बने,शासन का अरमान.
ज्ञान ज्योत जलती रहे, सबकी हो पहचान.

अनपढ़ कोई न रहे,हो सबका उत्थान.
साक्षरता सबसे बड़ा,बना इसका निदान.

*****

दीप

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

कभी न तम से हारे दीप.
फैलाते उजियारे दीप.

घर कर देते आलोकित
जल आँगन - चौबारे दीप.

दीवाली में भू पर ज्यों
आए उतर सितारे दीप.

डर प्रतिकूल हवाओं का
काँप रहे बेचारे दीप.

अपनाएँ सहकार भावना
लगा रहे हैं नारे दीप.

स्नेह और बाती के संग
जीवन - मूल्य सँवारे दीप .

रत है राष्ट्र - साधना में
रूप तपस्वी धारे दीप.

*****

आईएनएस विक्रांत

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

युद्ध कोई अपरिचित शब्द नहीं है. हजारों वर्ष पूर्व से ही युद्ध होते आ रहे हैं जो अधिकांशतः पारंपरिक, अंतरराज्यीय युद्ध हुआ करते थे, जिनमें तीर कमान, डंडे, बाण कुछ छोटे-मोटे अस्त्रों का प्रयोग किया जाता था और सैनिकों के वाहक घोड़े, हाथी आदि पशु हुआ करते थे. भारत में हम रामायण महाभारत इत्यादि सुनते आ रहे हैं. वर्तमान प्रौद्योगिकी युग में अस्त्रों शस्त्रों वाहनों का स्थान पूरी तरह प्रौद्योगिकी ने ले लिया है अब युद्ध के लिए भूगोल बाधा नहीं रह गया है जो हमने 9/11 की घटना के रूप में देखा. हिंसा अब वैश्विक रूप ले चुकी है. वर्तमान में यूक्रेन-रूस, ताइवान-चीन की स्थिति और उससे उत्पन्न तीसरे विश्वयुद्ध के खतरे की बातें हो रही है, इसीलिए आज हर देश अपनी सेना को प्रौद्योगिकी से मजबूत और आत्मनिर्भर बनने की राह पर चल पड़ा है, चूंकि आज किसी भी देश को रणनीतिक रूप से युद्ध में घेरने के लिए समुद्री क्षेत्र महत्वपूर्ण होता जा रहा है जिसका उदहारण हम चीन, अमेरिका और रूस की ताकत में देख रहे हैं. भारत ने भी अपने आत्मनिर्भर भारत की कड़ी में रक्षा क्षेत्र में कदम बढ़ाते हुए आई एन एस विक्रांत स्वदेशी भारतीय विमान वाहक युद्धपोत को भारतीय नौसेना में शामिल कर दिया है. अब भारत स्वदेशी युद्धपोत बना सकने वाले देशों के क्लब में शामिल हो गया है जो भारत के आत्मविश्वास और कौशल का प्रतीक है.

आईएनएस विक्रांत को 2 सितंबर 2022 को माननीय पीएम के द्वारा भारतीय नौसेना में शामिल किया गया है. पीआईबी के अनुसार भारत के पहले स्वदेशी विमानवाहक पोत चालू होना भारत की आजादी के अमृतकाल के दौरान देश के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है और यह देशके आत्मविश्वास और कौशल का प्रतीक भी है. यह स्वदेशी विमानवाहक पोत देश के तकनीकी एवं इंजीनियरिंग कौशल का प्रमाण है. विमानवाहक युद्धपोत बनाने में भारत की आत्मनिर्भरता का प्रदर्शन, देश के रक्षा स्वदेशीकरण कार्यक्रमों और 'मेक इन इंडिया' अभियान को सुदृढ़ करेगा. आईएनएस विक्रांत के चालू होने के साथ, हमारा देश विश्व

के उन विशिष्ट देशों के क्लब में प्रवेश कर गया है जो स्वयं अपने लिए विमान वाहक पोत बना सकते हैं और इस उत्कृष्ट इंजीनियरिंग का भागीदार बनना सेल के लिए बेहद खुशी की बात है.

सामरिक अनिश्चिता के इस युग में खतरों का पूर्वानुमान लगाना उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा है. अक्सर हमें कुछ ऐसे संवेदनशील क्षेत्रों का भी सामना करना पड़ता है जहाँ राजनैतिक उद्देश्यों के साथ आपराधिक मंशा और कृत्यों का भी समावेश होता है. हमारे देश के कुछ शत्रुओं की विशेषता उनका अदृश्य, विविध, वैश्विक, घातक और कट्टर स्वरूप है. इन खतरों का मुकाबला करने के लिए भारत को अपनी संपूर्ण राजनयिक, आर्थिक एवं सैन्य ताकत का उपयोग करना होगा. समुद्र में विस्तार वादी देश की दादागिरी पर लगाम लगाने और पड़ोसी मुल्कों के शैतानी मंसूबों को ध्वस्त करने के लिए भारतीय नौसेना ने समुद्र में तैरता एक दमदार और खतरनाक एयरफील्ड तैयार कर लिया है. भारत का पहला स्वदेशी विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत अब नौसेना में शामिल हो चुका है. इस एयरक्राफ्ट से विस्तारवादी देश को सबसे ज्यादा तकलीफ तो इस बात की है कि उसका 70 से 80 फीसदी एनर्जी ट्रेड भारतीय समुद्री सीमा से होकर गुजरता है, ऐसे में भारत जब चाहे उसे बाधित कर सकता है. वहीं पड़ोसी मुल्क से निपटने के लिए अरब सागर में भारतीय नौसेना का कैरियर बैटल ग्रुप तो तैनात है, लेकिन बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर के इलाके पर अपनी ताकत को बरकरार रखने के लिए जल्द ही एक और कैरियर बैटल ग्रुप तैनात होगा.

अगर हम आईएनएस विक्रांत की विराटता और क्षमता की बात करें तो, इस एयरक्राफ्ट कैरियर की विमानों को ले जाने की क्षमता और इसमें लगे हथियार इसे दुनिया के कुछ खतरनाक पोतों में शामिल करते हैं. नौसेना के मुताबिक, यह युद्धपोत एक बार में 30 एयरक्राफ्ट ले जा सकता है. इनमें मिग-29के फाइटर जेट्स के साथ-साथ कामोव-31 अर्ली वॉर्निंग हेलिकॉप्टर्स, एमएच -60 आर सीहॉक मल्टीरोलहेलिकॉप्टर और एचएएल द्वारा निर्मित एडवांस्ड लाइट हेलिकॉप्टर भी शामिल हैं. नौसेना के लिए भारत में निर्मित लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट - एलसीए तेजस भी इस एयरक्राफ्ट कैरियर से आसानी से उड़ान भर सकते हैं. मजेदार बात यह है कि भारत में बने पहले एयरक्राफ्ट कैरियर का नाम आईएनएस विक्रांत रखा गया है. जबकि इससे पहले ब्रिटेन से खरीदे गए भारत के पहले विमानवाहक पोत- एचएमएस हरक्यूलीस का नाम भी आईएनएस विक्रांत ही रखा गया था. बताया जाता है कि इसके पीछे भारत का पहले एयरक्राफ्ट कैरियर के प्रति प्यार और गौरव की भावना है. 1997 में सेवा से बाहर किए जाने से पहले आईएनएस विक्रांत ने पाकिस्तान के खिलाफ अलग-अलग मौकों पर भारतीय नौसेना को मजबूत रखने में अहम भूमिका निभाई थी.

आईएनएस विक्रांत के निर्माण से भारत दुनिया के उन छह चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है, जो 40 हजार टन का एयरक्राफ्ट कैरियर बनाने की क्षमता रखते हैं, बाकी पाँच देश हैं अमेरिका, रूस, चीन,

फ्रांस और इंग्लैंड. नौसेना के मुताबिक, आईएनएस विक्रांत के भारत के जंगी बेड़े में शामिल होने से इंडो-पैसेफिक क्षेत्र में शांति और स्थिरता कायम करने में मदद मिलेगी. हालांकि सबसे पहली और गौर करने वाली बात यह है कि भारत में बने आईएनएस विक्रांत में इस्तेमाल सभी चीजें स्वदेशी नहीं हैं. यानी कुछ कलपुर्जे विदेशों से भी मंगाए गए हैं. हालांकि, नौसेना के मुताबिक, पूरे प्रोजेक्ट का 76 फीसदी हिस्सा देश में मौजूद संसाधनों से ही बना हैं. भारतीय नौसेना को अब अपना पहला स्वदेशी एयरक्राफ्ट कैरियर 'आईएनएस विक्रांत' मिल गया जो माननीय पीएम ने इसे नौसेना को सौंपा हैं.

*****

बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने की जरूरत

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार (हरियाणा)

भाषाई जनगणना के अनुसार भारत में 19,500 भाषाएँ एवं बोलियाँ हैं, जिनमें से 121 भाषाएँ हमारे देश में 10,000 या उससे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं. 2020 में जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में क्षेत्रीय भाषा या मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने की पुरजोर वकालत की गई है. व्यक्ति के निर्माण में मातृभाषा का बहुत शक्तिशाली प्रभाव होता है. एक बच्चे की अपने आस-पास की दुनिया की पहली समझ, अवधारणाओं और कौशलों की शिक्षा और अस्तित्व की उसकी धारणा, उसकी मातृभाषा से शुरू होती है. जब कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा बोलता है, तो हृदय, मस्तिष्क और जीभ के बीच सीधा स्वाभाविक और सहज संबंध स्थापित हो जाता है.

जैसे-जैसे अधिक से अधिक भाषाएँ लुप्त होती जा रही हैं, भाषाई विविधता पर खतरा बढ़ता जा रहा है. विश्व स्तर पर लगभग 40 प्रतिशत आबादी के पास उस भाषा में शिक्षा तक पहुँच नहीं है जो वे बोलते या समझते हैं. हालाँकि, स्कूल और उच्च शिक्षा में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषाओं का उपयोग स्वतंत्रता-पूर्व से ही किया जाता रहा है, दुर्भाग्य से, अंग्रेजी में अध्ययन करने के इच्छुक लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है. इस स्थिति ने अंग्रेजी भाषा द्वारा शासित शिक्षण संस्थानों का दबदबा बढ़ा दिया है और एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहा है जो संवेदनशील और न्यायसंगत नहीं है. अन्य सभी मातृभाषाओं पर अंग्रेजी के प्रभुत्व की प्रकृति छात्रों की शक्ति, स्थिति और पहचान से जुड़ी है. विभिन्न मातृभाषाएँ बोलने वाले छात्र एक शैक्षिक संस्थान में अध्ययन करने के लिए एक साथ आते हैं जहाँ वे स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों स्तरों पर बिना किसी कठिनाई के एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं. फिर भी उन्हें एक विदेशी भाषा के माध्यम से एक भाषा में पढ़ाया जा रहा है जिससे सभी छात्र संबद्ध नहीं हो पाते हैं. पूरी प्रक्रिया ने मातृभाषाओं की अज्ञानता और छात्रों में अलगाव की भावना को जन्म दिया है.

नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशन, प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन के अनुसार, भारत में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या में 2003 और 2011 के बीच आश्चर्यजनक रूप से 273% की वृद्धि हुई है. माता-पिता सोचते हैं कि वे ठीक-ठीक जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं और क्यों? उनका मानना है कि अंग्रेजी का ज्ञान नौकरी की सुरक्षा और ऊर्ध्वगामी गतिशीलता की कुंजी है, और वे आश्वस्त हैं कि उनके बच्चों के अवसरों में उनकी अंग्रेजी शब्दावली के सीधे अनुपात में वृद्धि होगी. वे सही हैं, लेकिन उन्हें यह समझने की जरूरत है कि अंग्रेजी जानने से अच्छी नौकरी पाने में बहुत मदद मिलती है, लेकिन केवल तभी जब अंग्रेजी अर्थपूर्ण हो, अन्य सभी चीजों में समझ और बुनियादी ज्ञान के साथ बच्चे सीखने के लिए स्कूल जाते हैं. अधिकांश भारतीय स्कूलों में इस्तेमाल की जाने वाली अंग्रेजी किसी भी चीज़ को वास्तविक रूप से सीखने की क्षमता नहीं देती है.

भारत की प्राथमिक शिक्षा रटकर सीखने, खराब प्रशिक्षित शिक्षकों और धन की कमी के लिए कुख्यात है (भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का केवल 2.6% शिक्षा पर खर्च करता है; चीन 4.1% खर्च करता है और ब्राजील 5.7% पर भारत के दोगुने से अधिक है). शिक्षा की भाषा के रूप में अंग्रेजी इस स्थिति को बदतर बना देती है - विकास की दृष्टि से, यह एक आपदा है. बच्चे के दृष्टिकोण से स्कूल पर विचार करें. ज्यादातर बच्चे छोटे होते हैं जब वे घर से निकलते हैं. अपने जीवन में पहली बार, उन्हें कई घंटों के लिए एक अजीब वातावरण में बड़ी संख्या में अन्य बच्चों के साथ रहना पड़ता है जिन्हें वे नहीं जानते हैं. उन्हें शांत बैठना चाहिए, चुप रहना चाहिए और केवल आदेश पर ही बोलना चाहिए. शिक्षक, जो एक अजनबी भी है, उम्मीद करता है कि बच्चे पूरी तरह से नई अवधारणाओं में महारत हासिल करेंगे: पढ़ना और लिखना; जोड़ना और घटाना; प्रकाश संश्लेषण; एक शहर और राज्य और देश के बीच का अंतर. अन्य देश अपने बच्चों के साथ ऐसा नहीं करते - चीन, फ्रांस, जर्मनी, हॉलैंड या स्पेन आदि.

शिक्षा की भाषा बस एक वाहन, व्याकरण और शब्दों का एक सहज प्रवाह होना चाहिए, जिसे हर कोई अर्थ और परिभाषा के लिए सरलता से समझ सके. देश को अपनी अगली पीढ़ी के नायकों की जरूरत है ताकि वे अपने क्षेत्र में पूरी तरह से महारत हासिल कर सकें ताकि वे दवा का अभ्यास कर सकें, पुल बना सकें, प्लंबिंग लगा सकें और सोलर लाइटिंग सिस्टम डिजाइन कर सकें. बच्चे दूसरी, तीसरी और चौथी भाषाएँ सभी अच्छे समय में सीख सकते हैं. लेकिन यह तभी होगा जब वे युवा प्रेमपूर्ण भाषा के रूप में बड़े होंगे, उन्हें खतरा महसूस नहीं होगा और इससे उन्हें आंका जाएगा. हमें उनकी जरूरत है कविता और गीत और उपन्यास लिखने के लिए. हमें चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा पर गर्व महसूस करें, न कि क्षमाप्रार्थी और लज्जित हों जैसे कि उनकी सफलता इस बात पर आधारित है कि वे कितनी अंग्रेजी जानते हैं.

बुनियादी स्तर पर, शिक्षार्थियों द्वारा साक्षरता और संख्यात्मकता की समझ सुनिश्चित करना वाणिज्य की भाषा पर जोर देने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है. संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1953 में "शिक्षा में स्थानीय भाषाओं का उपयोग" शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में, दो पहलू सामने आए. एक, इसकी पुनरावृत्ति कि स्कूल की उम्र के हर बच्चे को स्कूल जाना चाहिए और शिक्षण का सबसे अच्छा माध्यम छात्र की मातृभाषा है. और दूसरा, इसका जोर इस बात पर है कि "सभी भाषाएँ, यहाँ तक कि तथाकथित आदिम भाषाएँ, स्कूली शिक्षा के लिए माध्यम बनने में सक्षम हैं; कुछ केवल दूसरी भाषा के लिए एक सेतु के रूप में, जबकि अन्य शिक्षा के सभी स्तरों पर.

प्रारंभिक वर्षों में स्कूलों में मातृभाषा का उपयोग पहुँच और ड्रॉप-आउट को रोकने के लिए आधारशिला है. भारत में 121 मातृभाषाएँ हैं, जिनमें से 22 भाषाएँ हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल हैं, और 96.72% भारतीयों की मातृभाषा है. राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों में शिक्षा के दो माध्यमों तक (उदाहरण के लिए, असमिया, बंगाली, बोडो, हिंदी, अंग्रेजी, मणिपुरी और गारो) शिक्षा के दो माध्यम हैं, जिनमें से एक राज्य की मुख्य रूप से बोली जाने वाली भाषा है और दूसरी अंग्रेजी/हिंदी. स्कूलों में शिक्षा के पहले माध्यम के रूप में 25 से अधिक भाषाएँ प्रचलित हैं. प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में प्राप्त करने वाले 95% छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में पीछे नहीं रहना चाहिए. इसलिए तकनीकी शिक्षा को मातृभाषा में भी सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है.

दुनिया में बोली जाने वाली प्रत्येक भाषा एक विशेष संस्कृति, माधुर्य, रंग का प्रतिनिधित्व करती है और एक संपत्ति है. कई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और शैक्षिक प्रयोगों ने साबित किया कि मातृभाषा के माध्यम से सीखना गहरा और अधिक प्रभावी है. एक बच्चे का भविष्य का अधिकांश सामाजिक और बौद्धिक विकास मातृभाषा के पर टिका होता है. अपूर्ण प्रथम भाषा कौशल अक्सर अन्य भाषाओं को सीखना अधिक कठिन बना देते हैं. अब यह साबित करने के लिए पर्याप्त शोध और सबूत उपलब्ध हैं कि यदि बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, विशेष रूप से मूलभूत वर्षों (उम्र 3 से 8) में, तो उच्च दक्षता और बेहतर परीक्षण स्कोर देखे जाते हैं. उपलब्ध संसाधनों को देखते हुए, द्विभाषी पाठ्य पुस्तकों और ई-सामग्री आदि की सहायता से द्विभाषी शिक्षण हमारे शिक्षार्थियों के भविष्य और उनकी क्षमताओं को सुरक्षित करने के लिए एक अच्छी शुरुआत हो सकती है.

*****

तितली

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी, बिलासपुर

रंग बिरंगी तितली रानी
लगती है वह बड़ी सयानी
फूल फूल पर मंडराती है.
फूल फूल से रंग लेती है
रंग से अपने पंख सजाती है
जब इसे जाओ पकड़ने
झट से वह उड़ जाती है
रंग बिरंगी प्यारी तितली
मन को कितनी लुभाती है
इधर उधर से डाल डाल पर
फूल फूल पर बैठ जाती है
फूलों का मीठा रस चुराकर
मीठी धुन सुनाती है

*****

चाह गई चिंता मिटी

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

वर्ष 1972 में अमर प्रेम फिल्म का आनंद बख्शी द्वारा लिखित गीत, कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना, छोड़ो बेकार की बातों में कहीं बीत ना जाए रैना तथा बड़े बुजुर्गों की कहावतों को व्यवहारिक जीवन में सटीक सिद्ध होते हुए हम कई बार सुनते, देखते और महसूस करते हैं परंतु फिर भी उनकी दी हुई सीख, प्रेरणा और मंत्रों का उपयोग नहीं करके अपनी परेशानी का सारा दोष अपने प्रतिद्वंदियों, आस-पड़ोस, और ईश्वर पर डाल देते हैं. मेरा मानना है कि यह हमारी सबसे बड़ी मूर्खता है. बड़े बुजुर्गों की कहावतें- आ बैल मुझे मार, दूर के ढोल सुहावने लगते हैं, एक उँगली दूसरे पर उठाते ही तीन उँगलियां खुद की तरफ उठती हैं, अपनी मस्ती में मस्त रहो सहित अनेक कहावतें जीवन में सटीक बैठती है क्योंकि हमारे दैनिक जीवन में अनेक साधारण बातें और संदेह हमारी दिनचर्या में परेशानी खड़ी करते हैं इसलिए उनसे बचने हमें बेपरवाही के मंत्र का उपयोग करना होगा.

लगातार चिंता और संदेह हमें प्रतिदिन परेशान कर सकते हैं और हमारे तनाव का स्तर भी बढ़ा सकते हैं. यह भावनाएँ और उच्च तनाव स्तर हमको कुछ भी करने से और अपनी पसंद की चीजों का आनंद लेने से बाधित कर सकती हैं. अपने मस्तिष्क का थोड़ा सा ध्यान रखिए कि निष्पक्षता भावनात्मक प्रतिबद्धता के समय ही सबसे अच्छी तरह से प्रदर्शित होती है. यह अपनी भावनाओं को छुपाने और लोगों को भयभीत न होने देने की सर्वश्रेष्ठ विधि है. यह आपको किसी मज़बूत तथा पाषाण जैसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित कर सकती है. लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहिए. बहुत अधिक बेपरवाही से लोगों को चोट पहुँच सकती है और वे आपसे दूर हो सकते हैं. दुर्भाग्यवश, यह आपके प्रिय को भी, यदि आप सावधान नहीं रहे

तो, आपसे दूर कर सकता है करके हम बेपरवाह बन सकते हैं और चीजों को स्वयं को परेशान नहीं करने दे सकते हैं. हम तो मज़बूत चीजों से बने हैं और हमको कुछ भी गिरा नहीं सकता है.

वे लोग जो उतने बेपरवाह नहीं हैं , अपने जीवन को दूसरों की कही गई विधि से बदलने में व्यस्त हैं. वे दूसरों के द्वारा स्वीकार किए जाने, और प्रेम किए जाने के लिए इतना कठोर प्रयास करते हैं ताकि सब कुछ बिल्कुल वैसा ही हो जाये. संक्षेप में, वे बहुत अधिक परवाह करते हैं, और वो भी उन चीज़ों के बारे में, जिनका कुछ अर्थ ही नहीं है. इस जीवन शैली की, और दूसरों के जीवन की हम नक़ल न करें, अपनी शैली से जीवन जिएँ. हमें दूसरों के कहने की तो परवाह तो बिल्कुल नहीं करना चाहिए- हमें वही करना चाहिए जिससे हमें प्रसन्नता मिले.

अपने हाव भाव का ध्यान रखिए: कभी कभी हम चाहे जितनी शांति और धैर्य की बातें करें, हमारे हाव भाव से रहस्य खुल जाता है. हमारी आवाज़ तो निकलती है, कोई बात नहीं. चिंता मत करिए, मगर हमारे कानों से धुआँ निकल रहा होता है और मुट्ठियाँ बँधी होती हैं. यह कोई छुपी बात नहीं होगी क्योंकि सभी लोग असलियत तो समझ ही जाएँगे. इसलिए जब हम बेपरवाही से बोल रहे हों, तब सुनिश्चित करें कि हमारा शरीर भी उसका समर्थन करे. हमारा शरीर कैसे स्थापित होगा, यह हमारी परिस्थिति पर निर्भर करेगा. जब तक हम चिंतित और परेशान (और बेपरवाह नहीं) होंगे तब मुख्य बात यह होगी कि हमारी मांसपेशियाँ तनी होंगी. यदि हम सोचते हैं कि हमारे हाव भाव से बात खुल जाएगी, तब अपने शरीर को ऊपर से नीचे तक देखिये और जानबूझ कर यह तय करिए कि हर भाग शांत रहे. यदि ऐसा नहीं हो, तब उसे ढीला करिए. मानसिक बेपरवाही यहीं से आएगी.

रहीम के दोहे और उसके अर्थ की बात करें तो

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बे परवाह.

जिनको कछू न चाहिए, वे साहन के साह.. इसका अर्थ है कि

चिंताओं का मूल है मन में नई-नई कामनाओं का पैदा होना. एक कामना पूरी होती है तो दूसरी कामना सिर उठाती है. कामनाओं को कैसे सिद्ध किया जाए, इसी चिंता में मनुष्य घुलता रहता है. वह जीवन को पूरी समग्रता से नहीं जी पाता. वह आजीवन कामनाओं का दास बना रहकर लोभ, मोह, माया, क्रोध व काम में फँसा रहता है. उसका एक पल भी शांतिपूर्वक व्यतीत नहीं होता. इसके विपरीत रहीम कहते हैं, यदि कामना न रहे, चाह का लोप हो जाए तो चिंता से मुक्ति मिल जाती है. सिर से सारा बोझ उतर जाता है और मन

निश्चिंत और लापरवाह हो जाता है. सच तो यह है कि जिनको कुछ नहीं चाहिए होता, जो कामना रहित होते हैं, वे शाहों के भी शाह होते हैं.

बात अगर हम बेपरवाह होने के अर्थ को स्वयं को गंभीरता से न लेने, हर स्थिति में हास्य खोजने की करें तो,स्वयं को (या किसी भी और चीज़ को) बहुत गंभीरता से न लें: सारा जीवन तब कहीं अधिक सरल हो जाता है जब हम इस निर्णय पर पहुँच जाते हैं कि कोई भी बात इतनी बड़ी नहीं है. हम सभी इस धरती पर एक रेत के कण के समान हैं और यदि सब कुछ हमारे हिसाब से ठीक नहीं हो रहा है, तब मान लीजिये कि ऐसा ही होना था. बुरी चीज़ें होंगी और अच्छी चीज़ें भी अवश्य ही होंगी. इसके बारे में परेशान क्यों हुआ जाये? हर स्थिति में हास्य खोजिए- बेपरवाह होने का अर्थ यह नहीं है कि आप प्रसन्न नहीं रहेंगे, इसका अर्थ है कि आप जल्दी ही परेशान, नाराज़, या तनावग्रस्त नहीं हो जाएंगे. और यह किया कैसे जाएगा? जब प्रत्येक वस्तु हास्यप्रद हो, तब यह अच्छी शुरुआत होगी. जिस प्रकार से हर बात में कुछ अच्छी बात अवश्य होती है, अधिकांश चीज़ों में हास्य का पुट भी होता ही है.अपनी ढेरों भावनाओं का प्रदर्शन मत करिए: बेपरवाह की परिभाषा ही है कि वह लगभग 24/7 धैर्यवान और शांत बने रहें. आप हल्की फुली रुचि या प्रसन्नता प्रदर्शित कर सकते हैं-या थोड़ी निराशा और परेशानी भी – परंतु अंदर से आपमें गहरी झील जैसी जैसी शांति बनी रहती है. इसका अर्थ यह नहीं है कि आप भावना रहित या ठंढे रहेंगे, यह तो शांत रहने की बात है. साथियों बात हम बेपरवाह होने पर ध्यान रखने वाली बातों की करें तो, निष्पक्षता भावनात्मक प्रतिबद्धता के समय ही सबसे अच्छी तरह से प्रदर्शित होती है. यह अपनी भावनाओं को छुपाने और लोगों को भयभीत न होने देने की सर्वश्रेष्ठ विधि है. यह हमको किसी मज़बूत तथा पाषाण जैसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित कर सकती है. लोगों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील रहिए. बहुत अधिक बेपरवाही से लोगों को चोट पहुँच सकती है और वे आपसे दूर हो सकते हैं. दुर्भाग्यवश, यह आपके प्रिय को भी, यदि आप सावधान नहीं रहे तो, आपसे दूर कर सकता है.

*****

शिक्षक दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

भारत में प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है. शिक्षक का नाम आते ही मस्तिष्क को आकार देने, उत्कुष्टता और प्रतिबद्धता दर्शाने की एक मूरत सामने उभर आती है. एक अच्छा शिक्षक एक मोमबत्ती की तरह होता है वह खुद प्रज्वलित होकर दूसरों को रास्ता दिखाता है. अज्ञानता दूर करके ज्ञान की ज्योति जलाता है. गलत राह पर भटकने से बचाता है और भटके हुए को सुधारता है. शिक्षक ही होता है जो वर्तमान समय में प्ले स्कूल से उच्च स्तर तक शिक्षा देकर, मानव मस्तिष्क को तराश कर, विद्या रूपी धन देकर जीवन सँवारता है. इसलिए बड़े बुजुर्गों ने कहा है कि यदि फल फूल रखो प्रभु के आगे तो प्रसाद बन जाता है, शिष्य झुके अगर गुरु के आगे तो इंसान बन जाता है.

हर व्यक्ति को सफलता के नए-नए आयामों तक पहुँचाने के मूल मुख्य स्त्रोतों में महत्वपूर्ण रोल एक शिक्षक, अध्यापक, प्राध्यापक या शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हर उस व्यक्ति का होता है जिसकी उँगली पकड़कर हमने शिक्षा के बड़े-बड़े आयामों को प्राप्त किया इसलिए आज हर एक व्यक्ति को एक शिक्षक को सैल्यूट कर उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए. भविष्य के युवाओं के साथ ही मस्तिष्क को आकार देने में शिक्षकों की उत्कृष्टता और प्रतिबद्धता को सैल्यूट. परंतु मेरा मानना है कि इसके साथ ही हर नागरिक को, स्वामी विवेकानंद की मानव-निर्माण शिक्षा, श्री अरबिंदो की एकात्म शिक्षा और महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा के वास्तविक सार को चित्रित करने वाली, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए आओ शिक्षा का दीप प्रज्वलित कर भारत को विश्व गुरु बनाने के यज्ञ में अपनी भागीदार रूपी आहुति प्रदान करें.

हमारे जीवन में शिक्षकों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि वे हमें न सिर्फ किताबी ज्ञान देते हैं, बल्कि वे प्रैक्टिकली आने वाली चुनौतियों के लिए हमें जागरूक और तैयार भी करते हैं. देखा जाए तो हर वह इंसान शिक्षक है जिससे आप नैतिक चीजें सीख पाते हैं. घर में माँ-बाप या बड़ा भाई, बहन या कोई अन्य, स्कूल में टीचर, कॉलेज में प्रोफेसर यहाँ तक कि आप अपने सहपाठी या सहकर्मी से भी आए दिन सीखते हैं, यह सभी शिक्षण का हिस्सा है. यह सीखने समझने की कला हजारों साल से चली आ रही है, ऐसे में हम हमेशा से शिक्षण या शिक्षक के आसपास रहे हैं.

शिक्षक दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की चर्चा करना सोने पर सुहागा साबित होगा क्योंकि इसका वाहक विशेष रूप से शिक्षक होते हैं, इसीलिए शिक्षक और हम सभी नागरिकों को संकल्प लेना होगा कि शिक्षा में भारत के विश्व गुरु बनने इस यज्ञ में सभी को सहभागिता रूपी आहुति देनी होगी.

2 सितंबर 2022 को केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया के साथ द्विपक्षीय बैठकों में शिक्षा और कौशल विकास में सहयोग मजबूत करने का आह्वान किया, बाद में उन्होंने कहा कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच उच्च शिक्षा, अनुसंधान और कौशल विकास में जीवंत सहयोग है. बचपन और स्कूली शिक्षा में गहन जुड़ाव हमारे दोनों देशों में बच्चों को जीवन भर सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए एक मजबूत आधार तैयार करेगा.

बात अगर हम माननीय केंद्रीय प्रौद्योगिकी मंत्री द्वारा 3 सितंबर 2022 को एक शिक्षा शिखर सम्मेलन 2022में संबोधन की करें जो पीआईबी के अनुसार उन्होंनेपीएचडीसीसीआई शिक्षा शिखर सम्मेलन, 2022 को संबोधित करते हुए कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से लेकर अब तक एनईपी भारत का सबसे बड़ा पथ-प्रदर्शक सुधार है क्योंकि नई शिक्षा नीति न केवल प्रगतिशील और दूरदर्शी है, बल्कि 21वीं सदी के भारत की उभरती आवश्यकताओं के अनुरूप भी है. उन्होंने कहा कि इसमें केवल डिग्री पर ध्यान केंद्रित नहीं किया गया है बल्कि छात्रों की आंतरिक प्रतिभा, ज्ञान, कौशल और योग्यता को भी उचित प्राथमिकता दी गई है. उन्होंने कहा कि यह समय-समय पर युवा विद्वानों और छात्रों को उनकी व्यक्तिगत योग्यता तथा परिस्थितियों के अनुसार अपने विकल्पों का निर्धारण करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है.

उन्होंने कहा एनईपी की शुरूआत एक बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाकर भारत की शिक्षा प्रणाली का रूपांतरण करने के लिए की गई थी. शिक्षा मंत्रालय की एक आंतरिक प्रगति रिपोर्ट के अनुसार, 29 जुलाई, 2022 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लागू होने के दो वर्ष पूरे होने के साथ, अबतक 28 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) में उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) में 2,774 अभिनव परिषदों की स्थापना की जा चुकी है. रिपोर्ट के अनुसार, उच्च शिक्षा में 2,000 संस्थानों को कौशल हब के रूप में परिवर्तित किया जा

रहा है और इनमें से 700 संस्थान कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के सामान्य पोर्टल पर अपना पंजीकरण करा चुके हैं.

हम जानते हैं कि भारत में शिक्षक दिवस हर साल 5 सितंबर को मनाया जाता है. इस तारीख के पीछे विशेष कारण है, इस दिन सन् 1888 को स्वतंत्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म हुआ था. वे दूसरे राष्ट्रपति होने के अलावा पहले उपराष्ट्रपति, एक दार्शनिक, प्रसिद्ध विद्वान, भारत रत्न प्राप्तकर्ता, भारतीय संस्कृति के संवाहक, शिक्षाविद और हिन्दू विचारक थे. उनका हमेशा से मानना था कि शिक्षा के प्रति सभी को समर्पित रहना चाहिए, निरंतर सीखने की प्रवृत्ति बनी रहनी चाहिए, जिस व्यक्ति के पास ज्ञान और कौशल दोनों हैं उसके सामने हमेशा कोई न कोई मार्ग खुला रहता है.

*****

हिंदी

रचनाकार- कु. सुषमा बग्गा, रायपुर

हमारी हिंदी
आपकी हिंदी
राष्ट्रभाषा है हिंदी
भारत की आशा है हिंदी
मजबूत धागा है हिंदी
जीवन की परिभाषा है हिंदी
हम सब की पहचान है हिंदी
हमारा मान,सम्मान,अभिमान है हिंदुस्तान के माथे की बिंदी है हिंदी
सबको एक सूत्र में पिरोने वाली डोर है हिंदी
गुलामी की जंजीर तोड़ने वाली थी हिंदी
वीर सपूतों की लाड़ली हिंदी
स्वतंत्रता की कहती कहानी हिंदी
पराई नहीं अपनी है हिंदी
मेरी हिंदी
आपकी हिंदी
सबकी हिंदी
राष्ट्र की हिंदी
हिंदी -हिंदी.

*****

मेरे पापा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

हर मुश्किल आसान बनाते मेरे पापा,
हर उलझन में राह दिखाते मेरे पापा.

उनसे ही मैंने जीवन जीना सीखा था,
यादों में हरदम हैं आते मेरे पापा.

मेरी सारी ख़ुशी देखके खुश हो जाते,
मेरी सब उलझन सुलझाते मेरे पापा.

जीवन में दुख और झमेले आते जाते,
दुख से मिलती सीख बताते मेरे पापा.

ख़ुशी बांटने से बढ़ जाती ख़ुशी हमेशा,
बातें सब अनमोल बताते मेरे पापा.

*****

ओजोन परत

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार (हरियाणा)

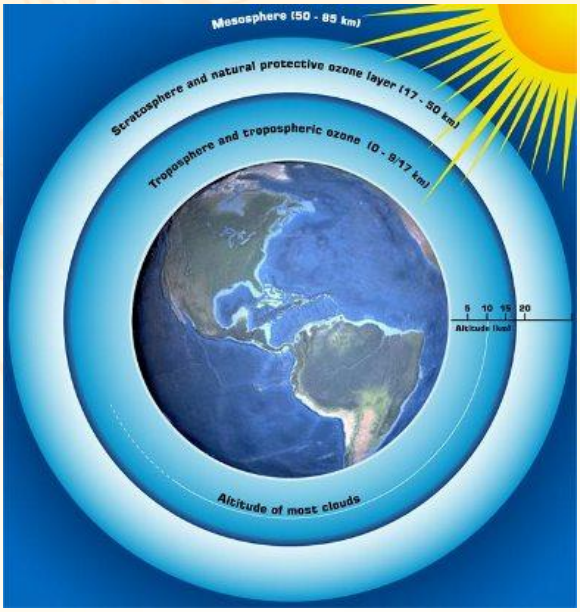

ओजोन एक प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला अणु है जो ऑक्सीजन के तीन परमाणुओं से बना होता है. ओजोन पृथ्वी के वायुमंडल के विभिन्न स्तरों में पाई जाती है. वायुमंडल में लगभग 90% ओजोन पृथ्वी की सतह (स्ट्रेटोस्फेरिक ओजोन) से 15 से 30 किलोमीटर के बीच केंद्रित है. यह जमीनी स्तर पर कम सांद्रता (ट्रोपोस्फेरिक ओजोन) में भी पाया जाता है. ओजोन एक प्रदूषक है जो शहरों में धुंध का एक प्रमुख हिस्सा है. ओजोन परत की खोज 1913 में फ्रांसीसी भौतिकविदों चार्ल्स फैब्री और हेनरी बुइसन ने की थी. ओजोन परत ओजोन की उच्च सांद्रता के लिए सामान्य शब्द है जो पृथ्वी की सतह से 15 से 30 किमी के बीच समताप मंडल में पाई जाती है. ओजोन परत सूर्य की मध्यम-आवृत्ति वाले पराबैंगनी प्रकाश (लगभग 200 एनएम से 315 एनएम तरंग दैर्ध्य) के 97 से 99 प्रतिशत को अवशोषित करती है, जो अन्यथा सतह के पास उजागर जीवन रूपों को संभावित रूप से नुकसान पहुंचाएगी.

ओजोन परत का क्षरण ऊपरी वायुमंडल में पृथ्वी की ओजोन परत का धीरे-धीरे पतला होना है, जो उद्योगों या अन्य मानवीय गतिविधियों से गैसीय ब्रोमीन या क्लोरीन युक्त रासायनिक यौगिकों के निकलने के कारण होता है. जब समताप मंडल में क्लोरीन और ब्रोमीन परमाणु ओजोन के संपर्क में आते हैं, तो वे ओजोन अणुओं को नष्ट कर देते हैं. समताप मंडल से हटाए जाने से पहले एक क्लोरीन परमाणु 100,000 से अधिक ओजोन अणुओं को नष्ट कर सकता है. समताप मंडल में तीव्र पराबैंगनी प्रकाश के संपर्क में आने पर कुछ यौगिक क्लोरीन या ब्रोमीन छोड़ते हैं. ये यौगिक ओजोन रिक्तीकरण में योगदान करते हैं, और इन्हें ओजोन-

क्षयकारी पदार्थ कहा जाता है. ओडीएस जो क्लोरीन छोड़ते हैं उनमें क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बन (एचसीएफसी), कार्बन टेट्राक्लोराइड और मिथाइल क्लोरोफॉर्म शामिल हैं. ओडीएस जो ब्रोमीन छोड़ते हैं उनमें हैलोन और मिथाइल ब्रोमाइड शामिल हैं. ओडीएस पृथ्वी की सतह पर उत्सर्जित होते हैं, अंततः उन्हें समताप मंडल में एक प्रक्रिया में ले जाया जाता है जिसमें दो से पांच साल तक का समय लग सकता है.

इसके अलावा प्राकृतिक प्रक्रिया, जैसे कि बड़े ज्वालामुखी विस्फोट एरोसोल नामक छोटे कणों के उत्पादन के साथ ओजोन के स्तर पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकते हैं. ये एरोसोल ओजोन को नष्ट करने में क्लोरीन की प्रभावशीलता को बढ़ाते हैं. समताप मंडल में एरोसोल एक सतह बनाते हैं जिस पर सीएफ़सी आधारित क्लोरीन ओजोन को नष्ट कर सकता है. हालांकि, ज्वालामुखियों से प्रभाव अल्पकालिक है, यह गंभीर कमी तथाकथित "ओजोन छेद" बनाती है जिसे अंटार्कटिक ओजोन की छवियों में देखा जा सकता है, जिसे उपग्रह अवलोकनों का उपयोग करके बनाया गया है. हालांकि उत्तरी गोलार्ध में ओजोन की हानि कम है, लेकिन आर्कटिक और यहाँ तक कि महाद्वीपीय यूरोप पर भी ओजोन परत का महत्वपूर्ण पतलापन देखा गया है.

ओजोन परत की कमी से पृथ्वी की सतह तक पहुँचने वाले पराबैंगनी विकिरण की मात्रा बढ़ जाती है. प्रयोगशाला और महामारी विज्ञान के अध्ययन से पता चलता है कि पराबैंगनी विकिरण गैर-मेलेनोमा त्वचा कैंसर का कारण बनता है और घातक मेलेनोमा विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है. इसके अलावा, इसे मोतियाबिंद के विकास से जोड़ा गया है, जो आँखों के लेंस का एक रोग है. यह विकिरण पौधों की शारीरिक और विकासात्मक प्रक्रियाओं को भी प्रभावित करता है. इन प्रभावों को कम करने या सुधारने के तंत्र और यूवी के बढ़े हुए स्तरों के अनुकूल होने की क्षमता के बावजूद, पौधों की वृद्धि सीधे विकिरण से प्रभावित हो सकती है.

सौर पराबैंगनी विकिरण के संपर्क के परिणामस्वरूप समुद्री जीवों के जीवित रहने की दर कम हो गई है. यह विकिरण मछली, झींगा, केकड़ा, उभयचर, और अन्य समुद्री जानवरों के विकास के प्रारंभिक चरणों को नुकसान पहुँचाता पाया गया है. सबसे गंभीर प्रभाव प्रजनन क्षमता में कमी और बिगड़ा हुआ लार्वा विकास है. पराबैंगनी विकिरण के जोखिम में छोटी वृद्धि के परिणामस्वरूप छोटे समुद्री जीवों की जनसंख्या में कमी हो सकती है, जिसका प्रभाव संपूर्ण समुद्री खाद्य श्रृंखला पर पड़ सकता है. विकिरण में वृद्धि स्थलीय और जलीय जैव-भू-रासायनिक चक्रों को प्रभावित कर सकती है, इस प्रकार ग्रीनहाउस और रासायनिक रूप से महत्वपूर्ण ट्रेस गैसों (जैसे, कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड, कार्बोनिल सल्फाइड, ओजोन

और संभवतः अन्य गैसों) के स्रोतों और सिंक दोनों को बदल सकती है. ये संभावित परिवर्तन बायोस्फीयर-वायुमंडल प्रतिक्रियाओं में योगदान देंगे जो इन गैसों के वायुमंडलीय सांद्रता को कम या बढ़ाएंगे.

भारत सरकार ने पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफ और सीसी) को ओजोन परत संरक्षण और पदार्थों पर ओजोन परत के मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन से संबंधित कार्य सौंपा है. मंत्रालय ने भारत में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल और इसके ओडीएस चरण-आउट कार्यक्रम के प्रभावी और समय पर कार्यान्वयन के लिए आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने के लिए एक राष्ट्रीय ओजोन इकाई (एनओयू) के रूप में एक ओजोन सेल की स्थापना की है. भारत ने 1 अगस्त, 2008 से अस्थमा और क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज (सीओपीडी) की बीमारियों के इलाज के लिए उपयोग किए जाने वाले मीटर्ड डोज इनहेलर्स (एमडीआई) में उपयोग को छोड़कर सीएफ़सी के उत्पादन और खपत को सक्रिय रूप से समाप्त कर दिया है. वर्तमान में, ओजोन सेल मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के अनुसार त्वरित चरण-आउट शेड्यूल के साथ अगली श्रेणी के रसायनों, हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बन (एचसीएफसी) के उत्पादन और खपत को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने में लगा हुआ है.

ओजोन परत की बहाली को जारी रखने के लिए विश्व स्तर पर कार्य आवश्यक हैं. यह सुनिश्चित करना भी जरुरी है कि ओजोन-क्षयकारी पदार्थों पर मौजूदा प्रतिबंधों को ठीक से लागू किया गया है और ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के वैश्विक उपयोग को कम करना जारी है. यह सुनिश्चित करना कि ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के अनुमत उपयोगों को अवैध उपयोगों की ओर न मोड़ा जाए. यह सुनिश्चित करना कि कोई नया रसायन या प्रौद्योगिकियाँ सामने न आएँ जो ओजोन परत के लिए नए खतरे पैदा कर सकती हैं.

*****

दीवाली है

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

करें घर की साफ़-सफाई दीवाली है,
करें थोड़ा रंग-पुताई दीवाली है.

काम बहुत करना है हमको मितवा जी
चल पहले से लिस्ट बना दीवाली है.

नए-नए कपड़े सिलवाना है हमको,
पहले लाएं हम कपड़े दीवाली है.

मम्मी से बनवा लें खूब मिठाई जी,
बाहर से नमकीन मंगा दीवाली है.

और पटाखें लाएंगे हम झोली भर,
फिर हंगामा करना है दीवाली है.

*****

सूरज

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

पूरब से जब उगता है सूरज,
लाल गेंद-सा दिखता सूरज.

पूरब पे छा जाती है लाली,
कितना सुन्दर दिखता सूरज.

दिन भर है अंगारे बरसाता,
कितना गुस्सा करता सूरज.

शाम ढले पश्चिम में जाता,
सरल सुहाना लगता सूरज.

फिर पश्चिम में छाती लाली,
सागर में फिर डूबे सूरज.

*****

चिड़िया और कौवा

रचनाकार- कु.अनामिका दिवाकर, कक्षा पांचवी, शासकीय प्राथमिक शाला दाबो, मुंगेली

एक जंगल में एक चिड़िया रहती थी. उसे सब लोग पसंद करते थे, क्योंकि वह सबकी की मदद करती थी. उस चिड़िया का नाम सोनम था. उसी जंगल में एक कौवा रहता था. वो दोनों लोग बहुत अच्छे थे. कौवा हमेशा सोनम के घर जाता था. एक दिन सोनम अपने घर से खाना की तलाश में इधर-उधर भटक रही थी. तभी उसने देखा कि एक कौवा का बच्चा रो रहा था. सोनम उस कौवा के बच्चा को अपने घर ले आयी. सोनम सोचने लगी कि यह बच्चा किसका होगा? कुछ देर बाद कौवा आता है और कहता है कि तुम्हें पता है क्या एक पेड़ में कौवा का घोंसला था? उस घोसला में कौवा का बच्चा रहता था. वह बच्चा खो गया है. सोनम कहती है मुझे एक कौवा का बच्चा मिला है. शायद यह वही बच्चा होगा. सोनम और कौवा, उस बच्चा को लेकर उसके माता-पिता के पास जाते हैं. उस कौवा के बच्चा को उन्हें सौंप देते हैं. नन्हें कौवा का माता पिता सोनम और कौवा को धन्यवाद देते हैं.

*****

हिंदी

रचनाकार- सुधारानी शर्मा, मुंगेली

हिन्दी राष्ट्रभाषा हो हमारी.
करे गर्व, हम भारतवासी
हिंदी, राष्ट्रभाषा हमारी है
भारत भूमि के कण-कण में
मृदुल मिठास पुरानी है
स्वर,व्यंजन, मात्रा से, सुसज्जित
शिक्षा की अलख जगाती है
अगुणित, अतुलित, अलौकिक, है
यह इसकी महिमा न्यारी है
भारत की शान अस्मिता है यह
एकता के पाठ पढ़ाती है
गौरवशाली हिंदी हमारी,
ऋषि मुनियों की वाणी है
संज्ञा, रस,छंद, अलंकार से
तन-मन इसका शोभित है
गीत, ग़ज़ल, दोहों में,उतरकर
सबके हृदय समाई है
वीरों के इतिहास समेटे
गौरव गाथा सुनाती है,

त्याग, तपस्या, बलिदानों से
रक्त रंजित इसकी भी एक कहानी है,
जनवाणी है यह कलयुग में,
मीठे झरने सी झरती है
है समृद्ध, सुसंस्कृत,सुंदर,
सरलता इसकी रवानी है
महादेवी, निराला, पंत की,
लेखनी में भी ये समाई हैं
कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक
सबकी मुंह जबानी है
सरगम के सप्त सुरो में पिरो कर
महिमा इसकी गानी है
सभ्यता,संस्कृति, साथ समाये
युगो युगो से रानी है

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

1. कार्तिक मावस का त्योहार
   उजियाले का दे उपहार
   सायं घर - घर दीपक जलते
   फुलझड़ी - अनार हैं चलते

2. दीवाली में आदर पाते
   जलकर तम को दूर भगाते
   रखें सँजोकर बाती - तेल
   सबसे कहते - रखना मेल

3. श्री धन्वंतरि जन्म - जयंती
   राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस है
   नई वस्तुएँ आज करें क्रय
   कार्तिक की कृष्णा तेरस है

4. कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी वाली
   आती है छोटी दीवाली

कृष्ण ने नरकासुर था मारा
पर्व कौन - सा होता न्यारा

5. कार्तिक शुक्ल प्रथमा तिथि आती
गायों की पूजा की जाती
कृष्ण ने वर्षा से था बचाया
बोलो कौन - सा पर्व कहाया

6. कार्तिक शुक्ल द्वितीया आती
बहिन, भ्रात के तिलक लगाती
भ्राता से पाती उपहार
कौन - सा बतलाओ त्योहार

7. पर्व प्रकाश का और न दूजा
की जाती भगवती की पूजा
दीवाली की रात सुहाती
धन की देवी कौन कहाती

8. बुद्धि देवता हैं कहलाते
सदा प्रथम हैं पूजे जाते
पार्वती माँ, पिता महेश
मूषक किसका वाहन विशेष

उत्तर - 1 दीपावली, 2 दीपक, 3 धनतेरस, 4 नरक चतुर्दशी, 5 गोवर्धन पूजा, 6 भैया दूज, 7 श्री लक्ष्मी, 8 श्री गणेश

*****

बस यूँ ही चलते चलते

रचनाकार- प्रशांत द्विवेदी

सन 1979 में पाकिस्तान के भौतिकविद डॉक्टर अब्दुस सलाम ने नोबेल प्राइज़ जीतने के बाद भारत सरकार से रिक्वेस्ट की कि उनके गुरु प्रोफ़ेसर अनिलेंद्र गांगुली को खोजने में उनकी मदद करे. प्रोफ़ेसर अनिलेंद्र गांगुली ने डॉक्टर अब्दुस सलाम को लाहौर के सनातन धर्म कॉलेज में गणित पढ़ाया था. प्रोफ़ेसर अनिलेंद्र गांगुली को खोजने के लिए डॉक्टर अब्दुस सलाम को 2 साल का इंतजार करना पड़ा और फ़ाइनली 19 जनवरी 1981 को कलकत्ता में उनकी मुलाकात प्रोफ़ेसर गांगुली से हुई.

प्रोफ़ेसर गांगुली विभाजन के पश्चात लाहौर छोड़कर कलकत्ता में शिफ्ट हो गए थे. जब डॉक्टर अब्दुस सलाम प्रोफ़ेसर गांगुली से मिलने उनके घर पहुंचे तो देखा कि वे बहुत वृद्ध और कमज़ोर हो चुके थे. यहाँ तक कि उठ कर बैठ भी नहीं सकते थे. उनसे मिलकर डॉक्टर अब्दुस सलाम ने अपना नोबेल मेडल निकाला और उनको देते हुए कहा कि सर यह मेडल आपकी टीचिंग और आप द्वारा मेरे अंदर भरे गए गणित के प्रति प्रेम का परिणाम है.

अब्दुस सलाम ने वह मेडल गांगुली के गले में डाल दिया और कहा सर यह आपका प्राइज़ है, मेरा नहीं. पाकिस्तान के भौतिकविद इस जेस्चर ने बताया कि भले ही देश विभाजित हो गया था लेकिन उसके मूल्य और उसकी आत्मा ज़िंदा थी.

किसी भी विभाजित सीमा के पार जाकर अपने गुरु को इस तरह से ट्रिब्यूट देना बताता है कि यही वह सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है जो एक गुरु अपने शिष्य से अपेक्षा कर सकता है.

*****

प्रेरक प्रसंग

स्रोत- संकलित

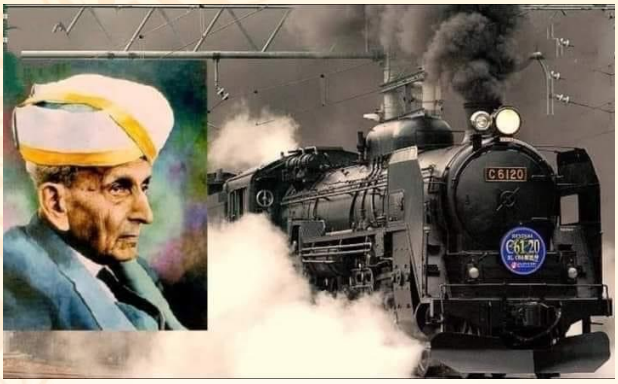

एक ट्रेन द्रुत गति से दौड़ रही थी. ट्रेन अंग्रेजों से भरी हुई थी. उसी ट्रेन के एक डिब्बे में अंग्रेजों के साथ एक भारतीय भी बैठा हुआ था.

डिब्बा अंग्रेजों से खचाखच भरा हुआ था. वे सभी उस भारतीय का मजाक उड़ाते जा रहे थे. कोई कह रहा था, देखो कौन नमूना ट्रेन में बैठ गया, तो कोई उनकी वेश-भूषा देखकर उन्हें गंवार कहकर हँस रहा था.कोई तो इतने गुस्से में था कि ट्रेन को कोसकर चिल्ला रहा था, एक भारतीय को ट्रेन मे चढ़ने क्यों दिया ? इसे डिब्बे से उतारो.

किंतु उस धोती-कुर्ता, काला कोट एवं सिर पर पगड़ी पहने शख्स पर इसका कोई प्रभाव नही पड़ा.वह शांत गम्भीर भाव लिये बैठा था, मानो किसी उधेड़-बुन मे लगा हो.

ट्रेन द्रुत गति से दौड़े जा रही थी औऱ अंग्रेजों का उस भारतीय का उपहास, अपमान भी उसी गति से जारी था.किन्तु यकायक वह शख्स सीट से उठा और जोर से चिल्लाया "ट्रेन रोको".कोई कुछ समझ पाता उसके पूर्व ही उसने ट्रेन की जंजीर खींच दी.ट्रेन रुक गई.

अब तो जैसे अंग्रेजों का गुस्सा फूट पड़ा.सभी उसको गालियां दे रहे थे.गंवार, जाहिल जितने भी शब्द शब्दकोश मे थे, बौछार कर रहे थे.किंतु वह शख्स गम्भीर मुद्रा में शांत खड़ा था. मानो उसपर किसी की बात का कोई असर न पड़ रहा हो. उसकी चुप्पी अंग्रेजों का गुस्सा और बढा रही थी.

ट्रेन का गार्ड दौड़ा-दौड़ा आया. कड़क आवाज में पूछा, "किसने ट्रेन रोकी".

कोई अंग्रेज बोलता उसके पहले ही, वह शख्स बोल उठा:- "मैंने रोकी श्रीमान".

पागल हो क्या ? पहली बार ट्रेन में बैठे हो ? तुम्हें पता है, अकारण ट्रेन रोकना अपराध हैं:- "गार्ड गुस्से में बोला"

हाँ श्रीमान ! ज्ञात है किंतु मैं ट्रेन न रोकता तो सैकड़ो लोगो की जान चली जाती.

उस शख्स की बात सुनकर सब जोर-जोर से हंसने लगे. किँतु उसने बिना विचलित हुये, पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा:- यहाँ से करीब एक फरलाँग की दूरी पर पटरी टूटी हुई हैं.आप चाहे तो चलकर देख सकते है.

गार्ड के साथ वह शख्स और कुछ अंग्रेज सवारी भी साथ चल दी. रास्ते भर भी अंग्रेज उस पर फब्तियां कसने मे कोई कोर-कसर नही रख रहे थे.

किँतु सबकी आँखें उस वक्त फ़टी की फटी रह गई जब वाक़ई, बताई गई दूरी के आस-पास पटरी टूटी हुई थी.नट-बोल्ट खुले हुए थे.अब गार्ड सहित वे सभी चेहरे जो उस भारतीय को गंवार, जाहिल, पागल कह रहे थे.वे उसकी और कौतूहलवश देखने लगे, मानो पूछ रहे हो आपको ये सब इतनी दूरी से कैसे पता चला ??..

गार्ड ने पूछा:- तुम्हें कैसे पता चला, पटरी टूटी हुई हैं?

उसने कहा:- श्रीमान लोग ट्रेन में अपने-अपने कार्यो मे व्यस्त थे.उस वक्त मेरा ध्यान ट्रेन की गति पर केंद्रित था. ट्रेन स्वाभाविक गति से चल रही थी. किन्तु अचानक पटरी की कम्पन से उसकी गति में परिवर्तन महसूस हुआ. ऐसा तब होता हैं, जब कुछ दूरी पर पटरी टूटी हुई हो. अतः मैंने बिना क्षण गंवाए, ट्रेन रोकने हेतु जंजीर खींच दी.

गार्ड औऱ वहाँ खड़े अंग्रेज दंग रह गये. गार्ड ने पूछा, इतना बारीक तकनीकी ज्ञान ! आप कोई साधारण व्यक्ति नही लगते.अपना परिचय दीजिये.

शख्स ने बड़ी शालीनता से जवाब दिया:- श्रीमान मैं भारतीय #इंजीनियर #मोक्षगुंडम_विश्वेश्वरैया...

जी हाँ ! वह असाधारण शख्स कोई और नही "डॉ विश्वेश्वरैया" थे.

*****

चप्पलें

रचनाकार- "टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद"

पाँव तले दबी चप्पलें.
सेवा में लगी चप्पलें.

किसी से कोई भेद नहीं,
ईर्ष्या-द्वेष भूली चप्पलें.

खुद घिसती रही ताउम्र,
जिंदगी जी ली चप्पलें.

उम्र के अंतिम पड़ाव में,
कबाड़ में पड़ी चप्पलें.

पर के खातिर मर-मिटती,
एक सीख देती चप्पलें.

*****

अनेकता में एकता हमारी शैली है

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

अनेकता में एकता
हमारी शैली है,
प्राकृतिक संपदा से
भरपूर हरियाली है.

भारतीय संस्कार
हमारे अनमोल मोती हैं,
प्रतिदिन माता-पिता के पावन
चरणस्पर्श से शुरुआत होती है.

उसके बाद वंदन कर
गुरु को नमन करते हैं,
बड़ों की सेवा में हम भारतीय
हमेशा से आगे रहते हैं.

श्रवण कुमार, गुरु गोविंद सिंह
महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी

अनेकों योद्धाओं बलवीरों
महावीरों की मां भारती है.

हम भारतवासी संयुक्त परिवार की
प्रथा श्रद्धा से कायम रखे हैं,
अतिथियों को देव तुल्य मानकर
भरपूर भाव से सेवा करते हैं.

सबको प्यार का मीठा प्यारा
राष्ट्र-सेवा का पाठ पढ़ाते हैं,
हम अपनी संस्कृति से
प्राणों से अधिक प्यार करते हैं.

*****

क्या खेल में जीतना ही सब कुछ है?

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार (हरियाणा)

असहिष्णुता से तात्पर्य किसी व्यक्ति द्वारा ऐसे परिणाम स्वीकार करने में असमर्थता से है जो उसकी अपेक्षा से अलग है. एशिया कप के दौरान खिलाड़ियों के साथ-साथ दर्शकों द्वारा तोड़फोड़ और नस्लीय और धार्मिक दुर्व्यवहार द्वारा खिलाड़ियों को निशाना बनाने के मामले बेहद चिंताजनक है. आमतौर पर क्रिकेट और फुटबॉल मैचों के दौरान सोशल मीडिया पर ऐसे मामले देखे जाते हैं. क्रोध और असहिष्णुता नकारात्मक भावनाएँ हैं जो प्रतिकूल उत्तेजना या किसी खतरे के जवाब में विकसित होती हैं. गांधीजी ने कहा, क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं, क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए और सहनशील होना चाहिए. सही समझ दूसरों की भावनाओं और विचारों की सराहना करने या उन्हें साझा करने का एक स्वभाव है. क्रोध और असहिष्णुता सही समझ की ऐसी क्षमता को कम कर देते हैं क्योंकि ये व्यक्ति को पक्षपाती और तर्कहीन बना देते हैं.

खेल मुख्य रूप से एक प्रतिस्पर्धी गतिविधि है जहाँ जीतना ही सब कुछ है. शायद इसीलिए, इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धी खेल के माहौल में, हम अक्सर अनैतिक व्यवहार के बारे में सुनते हैं जिसमें धोखाधड़ी, नियमों को झुकाना, डोपिंग, खाद्य पदार्थों का दुरुपयोग, शारीरिक और मौखिक हिंसा, उत्पीड़न, यौन शोषण और युवा खिलाड़ियों की तस्करी, भेदभाव शामिल हैं. शोषण, असमान अवसर, अनैतिक खेल व्यवहार, अनुचित साधन, अत्यधिक व्यावसायीकरण, खेलों में नशीली दवाओं का उपयोग और भ्रष्टाचार. ये कुछ उदाहरण हैं कि खेल में क्या गलत हो सकता है. इनका एक ही कारण नहीं है, समस्या का एक हिस्सा यह है कि लोग निर्णय लेते समय नैतिकता की उपेक्षा करते हैं. इस संदर्भ में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है.

बढ़ते दुर्व्यवहार और असहिष्णुता के लिए एक ही कारण को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, सामाजिक जागरूकता की कमी और खेल भावना की समझ में कमी, बढ़ती असहिष्णुता और नफरत इसके पीछे मुख्य कारण है. जब खेल को दो विरोधियों के बीच प्रतिद्वंद्विता के रूप में देखा जाता है, तो राष्ट्रवाद और धार्मिकता की मजबूत धारणा व्यक्तियों को धार्मिक दुर्व्यवहार के लिए प्रेरित कर सकती है. उदाहरण के लिए, भारत और पाकिस्तान क्रिकेट मैच का परिणाम अक्सर दोनों ओर से गाली-गलौज को आकर्षित करता है. हार को खेल के अंग के रूप में स्वीकार करने के लिए धैर्य और नैतिक शक्ति के गुणों का होना बहुत जरूरी है. हर संभव विकल्प का उपयोग करके जीतने के लिए तत्काल संतुष्टि और हताशा गलत परिणाम लाती है और खेल भावना को कलंकित करती है.

खेले गए मैचों के परिणाम और परिणाम खेल और खिलाड़ियों के समग्र विकास के साधन के बजाय अपने आप में एक अंत बन गए हैं.

सोशल मीडिया की व्यापक पहुँच ने लोगों के बुरे पक्ष को पनपने के लिए सही जमीन बनाने के लिए जनता को एक आवाज दी है. खिलाड़ियों के परिवारजनों को ऑनलाइन रेप की धमकी, परिणाम और प्राप्तकर्ता पर प्रभाव के बारे में सोचे बिना कार्रवाई करने के लिए लापरवाह रवैया. नफरत और गुस्से के निशाने पर आए खिलाड़ी सामाजिक दबाव के आगे झुक सकते हैं. डर की भावना पैदा कर सकता है, जो बदले में खेल में खिलाड़ी के प्रदर्शन से समझौता करेगा. प्रदर्शन के दबाव के कारण सिमोन बाइल्स ओलंपिक 2020 में हिस्सा भी नहीं ले सकीं.

ऐसा व्यवहार सामाजिक एकता के खिलाफ जाता है क्योंकि नस्लीय और धार्मिक दुर्व्यवहार बहु-धार्मिक समाज के बीच विभाजन पैदा करता है. हर बार जीतने का अनुचित दबाव खिलाड़ियों को धोखाधड़ी, बेईमानी और डोपिंग जैसे अनैतिक तरीकों में लिप्त होने के लिए उकसा सकता है. "क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं" दुर्व्यवहार में शामिल व्यक्तियों में तर्कसंगतता और खेल की सही समझ का अभाव होता है. गाली-गलौज और नफरत खेल नैतिकता और खेल भावना के खिलाफ है. खिलाडी ही नहीं दर्शकों के बीच नैतिक व्यवहार के लिए मूल्यों को विकसित करना महत्वपूर्ण है, खेल का सम्मान करने के लिए स्पष्ट अनिवार्यता न कि परिणाम और इस प्रकार दर्शकों के बीच नैतिक व्यवहार विकसित करना. बुनियादी मानवीय शालीनता और सम्मान के सिद्धांतों का पालन करना. तर्कसंगतता का अभ्यास करें और वैज्ञानिक स्वभाव और मानवतावाद को कर्तव्य के रूप में विकसित करें.

प्रतिकूल समय में खिलाड़ियों को प्यार और समर्थन खिलाड़ियों में खुद को सुधारने के लिए प्रेरणा और समर्पण की भावना को प्रज्वलित करेगा. सोशल मीडिया, सिनेमा और अन्य प्लेटफार्मों के माध्यम से समाज में एकता और भाईचारे की भावना, सामाजिक एकता सुनिश्चित करेगी. मूल्य आधारित शिक्षा और खेलकूद

के माध्यम से बच्चों में प्रशंसा और आत्म-सम्मान के मूल्यों का विकास करना. खिलाड़ियों को अपनी कमजोरियों और गलतियों को स्वीकार करने और व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमता में उत्कृष्टता की ओर प्रयास करने की आवश्यकता है ताकि राष्ट्र निरंतर प्रयास और उपलब्धि के उच्च स्तर तक पहुंचे. एक जिम्मेदार नागरिक और इंसान के रूप में हमें खेलों में अपने नायकों का सम्मान और समर्थन करना चाहिए.

तनाव का सामना होने पर खिलाडियों, लोगों और नेताओं का मन की स्थिरता खोना आम बात है. इस प्रकार, आज के विश्व में खिलाडियों और प्रशासकों को निष्पक्ष और निष्पक्ष तरीके से कार्य करने के लिए भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने की आवश्यकता है. सामाजिक प्रगति और खेलों के विकास के लिए संतुलित निर्णय लेना निष्पक्ष दिमाग से ही किया जा सकता है, जिसे क्रोध को नियंत्रित करके और सहिष्णु और खुले मन से प्राप्त किया जा सकता है.

*****

खुशियों की बारिश

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

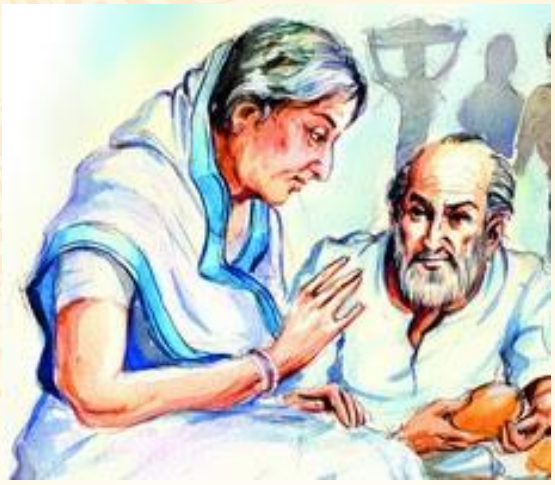

भारत सदा से बड़े बुजुर्गों माता पिता दादा-दादी नाना नानी वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान करता आया है, जिनकी गाथाओं से भारत का साहित्य, पुराण , रामायण, गीता आदि भरे हैं. श्रवणकुमार, भक्त प्रह्लाद इत्यादि अनेक महान विभूतियाँ भारत माता की गोद में अवतरित हुई है जो आज भी इस आस्था का सटीक प्रतीक हैं. 11 सितंबर 2022 को राष्ट्रीय ग्रैंड पेरेंट्स दिवस यानी दादा-दादी दिवस बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया, आज हम इस आर्टिकल में दादा-दादी के रूप में घर परिवार में खुशियों की बारिश पर चर्चा करेंगे.

खुश किस्मत है वह बच्चे जिनके दादा दादी नाना-नानी हैं. मेरा मानना है कि उनके पास अनमोल धरोहर है उनका सम्मान बहुत संजीदगी और शिद्दत के साथ करना चाहिए. दादा दादी बड़े बुजुर्ग हमारो छत्रछाया हैं, इनका स्थान बहुत ऊँचा है.

बच्चों को अपने दादा-दादी, नाना-नानी से एक अलग ही तरह का लगाव होता है, क्योंकि ये बुजुर्ग रिश्तों के बगीचे के माली होते हैं जो परिवार को सहेजते हैं. जब भी कहानियाँ सुनने का मन होता है दादा दादी, नाना-नानी की याद आती है. बच्चे पप्पा मम्मी के गुस्से से बचने के लिए भी इनकी शरण में चले जाते हैं. सही अर्थों में बुजुर्ग घर की छत्रछाया और शान होते हैं उनके द्वारा सुनाई गई कहानियों से मूल्यों के रूप में मोती रूपी ज्ञान बच्चों को मिलता है, जो उनके व्यक्तित्व निर्माण में नींव का काम करता है और भविष्य की सफलता में मील का पत्थर साबित होता है.

प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में मोबाइल, कंप्यूटर, किताबों से भरे बच्चों के स्कूल बैग और टेलीविजन पर कार्यक्रम की भरमार है परंतु यह सब दादा-दादी, नाना-नानी की कहानियों की अनमोल सीख से बहुत कम

हैं. यदि कहानी इस तरह शुरू होती है कि एक बरगद का पेड़ था, तो बच्चे के मन में पेड़ के आकार और स्थान की कल्पना शुरू हो जाती है और उनकी सोच का दायरा विस्तार पाता है. कहानी सुनते समय सभी इंद्रियाँ सक्रिय हो जाती है. इस बार राष्ट्रीय दादा-दादी दिवस 11 सितंबर रविवार को था, इसलिए कई स्कूलों कालेजों संस्थाओं ने एक दिन पहले ही इसका आयोजन किया. स्कूलों में दादा-दादी, नाना-नानी ने पहुँचकर बच्चों के साथ कार्यक्रम में भाग लिया. बुजुर्गों का स्वागत किया गया, उनका सम्मान किया गया. दादा-दादी ने बच्चों के साथ बच्चे बनकर बहुत मौज मस्ती की और खेलकूद में बच्चों का साथ दिया.

दादा-दादी ने बच्चों के जीवन में विशेष रूप से उनकी कम उम्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होती है. जब दादा-दादी और नाती-पोते साथ-साथ समय बिताते हैं तो यह दोनों को खुश रखने में मदद करता है. सेवानिवृत्ति की उम्र में दादा-दादी सभी कामों से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बुढ़ापे के कारण वे अपने जीवन का आनंद नहीं ले सकते हैं, इसलिए अपने पोते-पोतियों के साथ खेलना सबसे अधिक पसंद करते हैं.

बच्चे अपने पारिवारिक इतिहास के बारे में बुजुर्गों से बहुत कुछ सीखते हैं, वे अपने दादा-दादी से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं और स्नेह, सम्मान, सेवा और अपनों के प्रति लगाव जैसे मानवीय गुणों का विकास करते हैं. नतीजतन, बच्चे अधिक परिपक्व दिखाई देते हैं. ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वे अपने परिवार के इतिहास के बारे में जानते हैं, तो वे कठिनाइयों का सामना करना सीखते हैं. दादा-दादी का प्यार नाती-पोतो के लिए पर्याप्त हैं. बच्चों को पालने के लिए उन्हें आया की जरूरत नहीं है. क्योंकि दादा-दादी अपने पोते-पोतियों की अच्छी तरह देखभाल कर सकते हैं. वे न केवल बच्चों की परवरिश में मदद करते हैं बल्कि बच्चों की सुरक्षा भी करते हैं.

दादा-दादी, नाना-नानी एक पुस्तकालय हैं, हमारे निजी गेम सेंटर हैं, सर्वश्रेष्ठ रसोइए हैं, सर्वश्रेष्ठ समर्थन देने वाले व्यक्ति हैं, अच्छे शिक्षक हैं और प्यार से भरी दुनिया हैं. वे हमेशा हमारे लिए मदद के लिए तैयार रहते हैं. उनके चेहरे पर झुर्रियाँ इस बात का सबूत हैं कि वे घरों में सबसे अधिक अनुभवी लोग हैं. इसलिए बच्चों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि उनके साथ जुड़े, सीखें, जो वे हमें सिखाते हैं, उनके अनुभव से सीखें और फिर हमारे जीवन का निर्माण करें. अगर हम ऐसा करते हैं तो अधिक मजबूत होंगे.

*****

अज्ञात नहीं रखते

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

अच्छाई अपनाकर, खामियाँ भुलाकर,
हम किसी से शिकायत नहीं रखते.

उदारता की तो है कमी इस दुनिया में,
हम किसी से भेदभाव नहीं रखते.

परिंदों सी उड़ान, नम्रता की जुबान,
दोनों को हम मजबूती से हैं रखते.

खिली हुई मुस्कान, कामयाबी की शान,
हम चेहरे से हटाकर नहीं रखते.

एहसान और इंसानियत के काम का
हम कभी हिसाब नहीं रखते.

बर्दाश्त करने की हद, दिल में दर्द,
हम किसी को जताकर नहीं रखते.

किसी के निर्णय पर, अपने हृदय में,
किसी तरह का एतराज नहीं रखते.

मंजिल की तलाश और पाने की आस में,
खुद को खुदा से नाराज नहीं रखते.

खुदा पर यकीन कर, खुद को बेहतरीन कर,
अपनी रूह से खुद को अज्ञात नहीं रखते.

*****

पद और पैसा

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद

पद पैसा अब बड़ा हुआ है, दिखा रहे हैं रिश्तों में.
अहम भरा मानव के अंदर, टूट रहे हैं किस्तों में.

क्या लेकर आये हो जग में, क्या लेकर तुम जाओगे.
समय निकलते देर नहीं है, पीछे तो पछताओगे.

ज्ञात सभी अच्छे से सब कुछ, फिर भी देते हैं धोखा.
बाहर कितना उछल रहे हैं, अंदर से रहते खोखा.

बड़े आदमी बनकर बैठे, मुँह में रखते जो ताला.
मानवता का पाठ पढ़ाते, ढोंगी जपते हैं माला.

छुआछूत और भेदभाव की, पैदावार बढ़ाते हैं.
तुच्छ समझते हैं लोगों को, पैरों तले दबाते हैं.

कालचक्र भी घूम रहा है, ये तो वापस आता है.
जैसी करनी वैसी भरनी, जन-जन को बतलाता है.

नीमबीज तुम खुद हो डाले, आम कहाँ से पाओगे.
समय निकलते देर नहीं है, पीछे तो पछताओगे.

पद पैसे का लालच छोड़ो, धरती पर रह जायेगा.
अच्छा कर्म सभी कर डालो, शिव से यही मिलाएगा.

प्राण देह में जब तक है जी, तब तक ठोकर खाओगे.
अंत समय में मिले न पानी, तड़प-तड़प मर जाओगे.

*****

अटकेगा सो भटकेगा

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

अटकेगा सो भटकेगा,
अगर कार्य से पहले अत्यधिक सोचेगा,
दुविधा में जो तू पड़ेगा,
अधूरा कार्य तेरा हमेशा रहेगा.

एक लोकप्रिय कहावत है, अटकेगा सो भटकेगा! अक्सर मनुष्य, ज्यादा चाह की वजह से, या आत्मविश्वास न होने की वजह से दुविधा में रहता है. यह नकारात्मक प्रभावों से जुड़ा हुआ है, जिसके कारण सामाजिक कार्यकर्ताओं का बर्नआउट, प्रतिबद्धता की कमी, वेतन, सहकर्मियों और पर्यवेक्षकों के साथ कम संतुष्टि, खराब प्रदर्शन और कई अनुभवजन्य अध्ययनों में नौकरी का तनाव होता है.

सही समय पर सही परिणाम न मिल पाना. अपर्याप्त कौशल के माध्यम से उस इनपुट को समझने में असफल होना. यह समझने में असफल होना कि अतीत में काम करने वाली कोई चीज अब काम नहीं करेगी. यह जानने में असफल होना कि बिना सही जानकारी के निर्णय कब लेना है और कब अधिक सलाह की प्रतीक्षा करनी है. हमें इन सब के बारे में जानकारी लेनी चाहिए और कौशल होना चाहिए!

किसी कार्य के बारे में जानकारी न होना और उसमें कौशल ना होना हमारे जीवन में दुविधाओं का पहाड़ खड़ा कर देता है! अक्सर ज्यादा दुविधा और सोच में पड़ने के कारण, कार्य अधूरा ही रह जाता है इससे हमें हमारी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती है!

भ्रमित महसूस करना निराशाजनक और असहज हो सकता है, जिससे अक्सर लोग हार मान लेना चाहते हैं, दूर हो जाते हैं, और अंततः, ध्यान खो देते हैं. जबकि, जब आप नई चीजें सीख रहे होते हैं तो भ्रम होना तय है, ऐसे कई तरकीबें हैं जिनका उपयोग अपने भ्रम को दूर करने और भविष्य में भ्रम को रोकने में मदद के लिए कर सकते हैं.

ऐसी जगह बैठें जहां कोई अशांति न हो.

हर भ्रम को कागज पर उतारो. अपने डर को भी लिखें. एक बार जब विचार कागज पर आ जाएँगे तो वे आपको परेशान करना कम कर देंगे.

दिशाओं, प्रक्रियाओं और अपेक्षाओं को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करें.
मिश्रित संदेश देने से बचें.
समय सीमा तय करें.
संगठन के मिशन के साथ सभी गतिविधियों को संरेखित करें.
हमेशा ऐसे वक्त पर गहरी सांस लें और थोड़ा धीरज रखे.

यदि आप वास्तव में भ्रमित हैं, तो आपको केवल "मुझे नहीं पता" कहने से कभी नहीं डरना चाहिए, खासकर यदि आपसे इस समय होने वाली हर चीज को समझने की उम्मीद की जाती है. बस सुनिश्चित करें कि आप उस बारे में विशिष्ट हैं जिस पर आपको स्पष्टीकरण की आवश्यकता है.

अगर हम इन सब बातों का ध्यान रखें, तो हम दुविधा में नहीं पड़ेंगे, जो कार्य आसानी से हो सकते हैं, उनके बारे में अत्यधिक न सोचे वरना वह कार्य रह जाएगा! कभी-कभी आपने ऐसे दो दोस्तों को देखा होगा, जिनमें एक जो सोचता ही रह जाता है, दुविधा में जीता है और एक वक्त पर कार्य करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लेता है! तो चलिए आज ही से प्रण लेते हैं, किसी भी नेक कार्य को करने से पहले बहुत ज्यादा नहीं सोचेंगे और दुविधा मुक्त होने की कोशिश करेंगे कि हम भी सही समय पर अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर लें.

अटकना ना तू भटकना ना,
वक्त का महत्व तू जरूर समझना,
कार्य तू करते रहना,
दुविधा में ज्यादा उलझना ना.

*****

मार्ग स्वतः ही बनेगा

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान

प्रारंभ कर जीवन का सफर,
त्याग दे आलस का जहर,
बस एक बार आरंभ करना है जरूरी,
तेरे हित में है सफलता की हर एक लहर.

आजकल हममें से बहुत से लोग इस बात से परेशान है कि उन्हें जीवन में क्या करना है, अधिकतर तो कोई कार्य भी नहीं कर रहे हैं. हमें रुकना नहीं चाहिए और बहुत देर तक रुकना तो बिल्कुल भी नहीं चाहिए. अगर हम चलते जाएँगे तो हमें कोई न कोई उचित मार्ग अवश्य मिलेगा, रुकने पर तो कोई भी मार्ग मिलना संभव नहीं.

जब भी जीवन में हम दुविधा में पड़ें और अगर हमें कोई मार्ग नजर न आए, तो धीरे धीरे चलना सीखें, मार्ग स्वतः ही तैयार हो जाएगा. जब तक हम शुरुआत नहीं करेंगे, हमें कैसे पता चलेगा की हमारे अंदर क्या खूबियाँ हैं, हम किस कार्य को शिद्दत से कर सकते हैं, हमारी जिम्मेदारियाँ क्या हैं, हमें किस उद्देश्य से इस धरती पर भेजा गया है.

हो सकता है, हम एक वैज्ञानिक, शिक्षक, चिकित्सक या इंसानियत के फरिश्ते की तरह नजर आएँ पर इसके लिए हमारा जीवन में शुरुआत करना जरूरी है.

हमें अपनी शक्ति का आभास हमारा कार्य ही कराएगा, कुछ तो होगा हमारे अंदर जिसमें हमें बहुत प्रोत्साहन मिलेगा और हम उसे करना चाहेंगे.

मेरी पसंदीदा कहानी में से एक कहानी है,

एक छोटे से हाथी के पैर को जंजीर से बाँध दिया जाता है, वह बहुत कोशिश करता है उस जंजीर को तोड़ने की, पर उससे वह नहीं टूटती, अब यदि वह जिंदगी भर कोशिश न करे तो वह एक आलसी और परतंत्र बनकर एक ही जगह पर रह जाएगा. पर जब वह बड़ा हो जाता है, और बार-बार कोशिश करते रहने पर एक दिन जंजीर तोड़ ही देता है. शर्त यह हे कि वह प्रयास करे, जिंदगी भी कुछ ऐसी ही है, हमें शुरुआत करनी चाहिए, और चलते रहना चाहिए, मार्ग अपने आप मिलता जाएगा और प्रकृति आपसे वह जरूर कराएगी जिसे करने के लिए आपने इस धरती पर जन्म लिया है, अपने पसंदीदा कार्य को शिद्दत से करना चाहिए और करते करते ही कोई हमें भी जरूर प्रोत्साहन दे जाएगा या तो हमें अपनी शक्ति का आभास हो जाएगा.

जब तक तू ना चलेगा,
लक्ष्य तक कैसे पहुँचेगा,
भयभीत होकर बैठेगा,
जीवन में क्या फिर करेगा,
शुरुआत कर, चल पहल कर,
मार्ग स्वतः ही बनेगा..

*****

आलसी बेटा

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद

करे नहीं कुछ काम, रात-दिन घूमत रहिथे.
बाढ़े बेटा भार, ददा-दाई हर सहिथे.
समझाथे हर बार, बात ला नइ वो माने.
ददा पछीना राज, आज ले नइ तो जाने.

आलस देह भराय, काम हर कइसे होवय.
निकले बेरा हाथ, माथ ला धर के रोवय.
बाढ़े अब्बड़ बोझ, सबो बर गुस्सा आवय.
गरम रहे जब देह, अबड़ बेटा चिल्लावय.

बेरा बड़ अनमोल, जेन येखर सँग जाथे.
पूरा होथे लक्ष्य, सफलता वो हर पाथे.
आलस रहिथे दूर, जिंदगी आगू बढ़थे.
होथे जम्मो काज, शिखर मा तब्भे चढ़थे.

*****

हिंदी दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ संविधान के अनुसार बाईस अधिकृत भाषाएँ हैं, इसके अलावा हजारों भाषाएँ उपभाषाएँ हैं और बोलचाल की अलग-अलग , अपनी-अपनी बोलियाँ हैं. हालाँकि इनमें किसी भी भाषा का महत्व हिंदी से कम नहीं है परंतु राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के अलावा ऐसी कोई भाषा नहीं है जिसे सभी राज्यों में इलाकों को जोड़ने वाली भाषा का दर्जा प्राप्त हो. अतीत में भाषा को लेकर जिस तरह के विवाद हो चुके हैं उनको रेखांकित करते हुए हिंदी को बढ़ावा देते समय यह भी ध्यान रखना आवश्यक होगा कि दूसरी भाषाओं पर नकारात्मक प्रभाव ना पड़े. हमने पिछले वर्ष माननीय पूर्व राष्ट्रपति के अनेकों संबोधनों में सुना कि अपनी मातृभाषा को बढ़ाओ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृ भाषाओं पर बल दिया गया है. विभिन्न क्षेत्रों, राज्यों में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दी जाती है इसलिए हिंदी का विकास और विस्तार करने के लिए सबका साथ जरूरी है इसके लिए कुछ हद तक इसकी संभावना तलाशी जानी चाहिए कि भारत की सभी भाषाओं को जोड़ने के लिए सरकारी स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और कुछ मामलों में इसे अनिवार्य बनाने से हिंदी के विस्तार विकास और प्रसार की संभावनाएं बढ़ेगी ऐसा मेरा मानना है.

संविधान सभा में लम्बी चर्चा के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकारा गया. इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी. इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है. हिंदी भाषा में सभी भावों को भरने की अद्भुत क्षमता है. भारतीय संस्कृति में हिंदी को मातृ भाषा का दर्जा दिया गया है. यह महज भाषा नहीं बल्कि भारतीयों को एकता व अखंडता के सूत्र में पिरोती है. हिंदी को मन की भाषा कहा जाता है, जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी, संसद से लेकर सड़कों तक और साहित्य से लेकर सिनेमा

तक हर जगह संवाद का सबसे बड़ा पुल बनकर सामने आती है. हिंदी हमारे साहित्यकारों की संस्कृति थी. महात्मा गांधी ने भी एक बार कहा था कि, जिस प्रकार ब्रिटेन में अंग्रेजी बोली जाती है और सारे कामकाज अंग्रेजी में किए जाते हैं, ठीक उसी प्रकार हिंदी को हमारे देश में राष्ट्रभाषा का सम्मान मिलना चाहिए. लेकिन आज भी हम हिंदी को राष्ट्भाषा का दर्जा नहीं दिलवा पाए.

भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है, हिंदी एक राजभाषा है याने राज्य के कामकाज में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा. भारतीय संविधान में किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिला है. भारत में 22 भाषाओं को आधिकारिक दर्जा मिला हुआ है, जिसमें अंग्रेजी और हिंदी भी शामिल है. हिंदी को राजभाषा बनाने के प्रश्न पर हिंदी और अहिंदी भाषी तो लगभग तमाम वाद-विवाद के बाद सहमत हो गए थे लेकिन विवाद के केंद्र में हिंदी और रोमन अंकों के उपयोग का मसला ही था. अंत में अंग्रेजी अंकों के उपयोग पर सभी की सहमति के साथ राजभाषा का यह मसला 12 सितंबर से शुरू होकर 14 सितंबर 1949 की शाम को समाप्त हुआ था.

संविधान में भारत की केवल दो ऑफिशियल भाषाओं का जिक्र था. इसमें किसी राष्ट्रीय भाषा का जिक्र भी नहीं था, इनमें से ऑफिशियल भाषा के तौर पर अंग्रेजी का प्रयोग अगले पंद्रह सालों में कम करने का लक्ष्य था, ये पंद्रह साल संविधान लागू होने की तारीख (26 जनवरी, 1950) से अगले 15 साल यानें 26 जनवरी, 1965 को समाप्ति होने वाले थे. हिंदी समर्थक राजनेताओ नें अंग्रेजी को अपनाए जाने का विरोध किया था इस कदम को साम्राज्यवाद का अवशेष बताया था. हालाँकि केवल हिंदी को भारत की राष्ट्रीय भाषा बनाए जाने के लिए विरोध प्रदर्शन किए. उन्होंने इसके लिए कई प्रस्ताव रखे लेकिन कोई भी प्रयास सफल नहीं हो सका क्योंकि हिंदी अभी भी दक्षिण और पूर्वी भारत के राज्यों के लिए अनजान भाषा ही थी. 1965 में जब हिंदी को सभी जगहों पर आवश्यक बना दिया गया तो तमिलनाडु में हिंसक आंदोलन हुए.इसके बाद सरकार ने जो राजभाषा अधिनियम 1963 लागू किया था इसे 1967 में संशोधित किया गया, जिसके जरिए भारत ने एक द्विभाषीय पद्धति को अपना लिया, ये दोनों भाषाएँ पहले वाली ही थीं, अंग्रेजी और हिंदी.

विश्व हिंदी दिवस दुनिया भर में 10 जनवरी को मनाया जाता है. इसका मकसद वैश्विक स्तर पर हिंदी का प्रचार प्रसार करना है. वहीं 14 सितंबर को राष्ट्रीय हिंदी दिवस मनाया जाता है. आधिकारिक रूप से पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर, 1953 को मनाया गया था. हिंदी दिवस पर इससे जुड़े कई पुरस्कार भी दिए जाते हैं, जिसमें राष्ट्रभाषा कीर्ति पुरस्कार और राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार शामिल हैं. राष्ट्रभाषा गौरव पुरस्कार व्यक्तियों को दिया जाता है, वहीं राष्ट्रभाषा कीर्ति पुरस्कार किसी विभाग या समिति को दिया जाता है.

हिन्दी भाषा के उत्थान और भारत में राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने के लिए ही हिन्दी दिवस मनाया जाता है. हिन्दी दिवस पंद्रह दिनों तक मनाया जाता है, जिसे हिन्दी पखवाड़ा कहते हैं. इस दौरान स्कूलों से लेकर

ऑफिसों तक में कार्यक्रम किये जाते है. इसके तहत निबंध प्रतियोगिता भाषण, काव्य गोष्ठी, वाद-विवाद जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं. हिंदी दिवस के दिन लोगों को हिंदी के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए कई तरह के समारोह और सेमिनार का आयोजन किया जाता है. स्कूलों में प्रतियोगी कार्यक्रमों का आयोजन होता है.

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है. इसका उद्देश्य लोगों को हिंदी के महत्व व इतिहास के बारे में बताना है और अपनी मातृ भाषा के प्रति जागृत करना है. तथा हिंदी को न केवल देश के हर क्षेत्र में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रसारित करना है. भारत में हिंदी दिवस के लिए एक खास दिन तय है,भारत में 22 भाषाएं और उनकी 72507 लिपि हैं, एक ही देश में इतनी सारी भाषाओं और विविधताओं के बीच हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो हिंदुस्तान को जोड़ती है. देश के हर राज्य में बसे जनमानस को हिंदी के महत्व के बारे में समझाने और इसके प्रसार प्रचार के लिए भारत हिंदी दिवस मनाता है.इस दिन जो लोग हिंदी नहीं बोलते वह भी हिंदी को याद कर लेते हैं.

*****

कर्म से किस्मत लिखें हम

रचनाकार- प्रीतम साहू, कुशप्रीत, धमतरी

जंग अपनी थी जंग लड़े हम,
लड़ के खुद सम्हल गए हम.

दर्द था दिल में जताया नहीं,
अश्क आँखों से बहाया नहीं.

राहें अपनी खुद गढ़कर हम,
बाधाओं से खुद लड़कर हम.

लक्ष्य मार्ग पर बढ़कर हम,
सफल हुए मेहनत कर हम.

किस्मत पर भरोसा किए नहीं,
कर्म से किस्मत लिख दिए हम.

*****

भारत में बढ़ते साइबर अपराध और बुनियादी ढांचे में कमियां

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा ऑनलाइन बाजार है. यद्यपि प्रौद्योगिकी और इंटरनेट की प्रगति ने अपने साथ सभी संबंधित लाभ लाए हैं, लेकिन वैश्विक स्तर पर लोगों को प्रभावित करने वाले साइबर अपराध में भी वृद्धि हुई है. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के अनुसार साइबर अपराध के 2020 में 50,035 मामले दर्ज किए गए थे. भारत में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराध बढ़ रहा है. इसे एक अपराध के रूप में परिभाषित किया जाता है जहाँ एक कंप्यूटर अपराध करने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाता है. साइबर अपराध सर्वकालिक उच्च स्तर पर हैं, जो व्यक्तियों, व्यवसायों और देशों को प्रभावित कर रहे हैं.

साइबर अपराधों से निपटने के लिए बुनियादी ढाँचे में कमियाँ देखें तो इसके पीछे बहुत से कारक है, साइबर या कंप्यूटर से संबंधित अपराधों की जाँच के लिए कोई प्रक्रियात्मक कोड नहीं है. साइबर अपराधों से निपटने के लिए तकनीकी कर्मचारियों की भर्ती के लिए राज्यों द्वारा आधे-अधूरे प्रयास किए गए हैं. केवल तकनीकी रूप से योग्य कर्मचारी ही डिजिटल साक्ष्य प्राप्त कर सकता है और उनका विश्लेषण कर सकता है. सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम, 2000 इस बात पर जोर देता है कि अधिनियम के तहत दर्ज अपराधों की जाँच एक पुलिस अधिकारी द्वारा की जानी चाहिए जो एक निरीक्षक के पद से नीचे का न हो. जिलों में पुलिस निरीक्षकों की संख्या सीमित है, और अधिकांश क्षेत्र की जाँच उप-निरीक्षकों द्वारा की जाती है.

क्रिप्टोकरेंसी से संबंधित अपराध कम रिपोर्ट किए जाते हैं क्योंकि प्रयोगशालाओं के खराब स्तर के कारण ऐसे अपराधों को हल करने की क्षमता सीमित रहती है. अधिकांश साइबर अपराध प्रकृति में अंतर-क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार के साथ राष्ट्रीय हैं. पुलिस को अभी भी यू.एस. की गैर-लाभकारी एजेंसी, नेशनल सेंटर फॉर मिसिंग एंड एक्सप्लॉइटेड चिल्ड्रेन (एनसीएमईसी) से ऑनलाइन बाल यौन शोषण सामग्री (सीएसएएम) पर साइबर टिपलाइन रिपोर्ट मिलती है. अधिकांश उपकरण और प्रौद्योगिकी प्रणालियाँ किसी भी अन्य कनेक्टेड सिस्टम की तरह ही साइबर खतरों के प्रति संवेदनशील हैं. हालांकि सरकार ने नेशनल क्रिटिकल इंफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोटेक्शन सेंटर की स्थापना की है, फिर भी इसे महत्वपूर्ण सूचना बुनियादी ढाँचे की सुरक्षा के उपायों की पहचान करना और उन्हें लागू करना बाकी है.

राज्यों की साइबर फोरेंसिक प्रयोगशालाएँ नई प्रौद्योगिकियों के आगमन के साथ उन्नत नहीं है. क्रिप्टो-मुद्रा से संबंधित अपराध कम रिपोर्ट किए जाते हैं क्योंकि ऐसे अपराधों को हल करने की क्षमता सीमित रहती है. अधिकांश साइबर अपराध प्रकृति में ट्रांस-नेशनल हैं और अतिरिक्त-क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार के साथ हैं. भारत की क्रमशः 48 और 12 देशों के साथ प्रत्यर्पण संधियाँ और प्रत्यर्पण व्यवस्थाएँ हैं. साइबर कमियों से संबंधित समस्याओं की देखते हुए भारत के न्यायालयों ने संज्ञान भी लिए है जैसे- अर्जुन पंडित राव खोतकर बनाम कैलाश कुषाणराव गोरंट्याल और अन्य मामले में कोर्ट ने माना कि भारतीय साक्ष्य (आईई) अधिनियम की धारा 65 बी (4) के तहत एक प्रमाण पत्र (द्वितीयक) इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड की स्वीकार्यता के लिए एक अनिवार्य शर्त है यदि मूल रिकॉर्ड उत्पादित नहीं हो सका. नूपुर तलवार बनाम स्टेट ऑफ यू.पी. में इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने देखा कि भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सीईआरटी-आईएन) विशेषज्ञ को यह साबित करने के लिए इंटरनेट लॉग, राउटर लॉग और लैपटॉप लॉग का विवरण प्रदान नहीं किया गया था कि क्या उस घातक रात में इंटरनेट भौतिक रूप से संचालित था.

पुलिस' और 'सार्वजनिक व्यवस्था' राज्य सूची में होने के कारण, अपराध की जाँच करने और आवश्यक साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने का प्राथमिक दायित्व राज्यों का है. जैसा कि अप्रैल 2016 में उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों के सम्मेलन में हल किया गया था, जुलाई 2018 में मसौदा नियमों को तैयार करने के लिए एक पाँच न्यायाधीशों की समिति का गठन किया गया था जो डिजिटल साक्ष्य के स्वागत के लिए एक मॉडल के रूप में काम कर सकता था. चूँकि अब एक अत्याधुनिक नेशनल साइबर फोरेंसिक लैब और दिल्ली पुलिस का साइबर प्रिवेंशन, अवेयरनेस एंड डिटेक्शन सेंटर है, इसलिए राज्यों को उनकी प्रयोगशालाओं को अधिसूचित करने में पेशेवर मदद का विस्तार हो सकता है. अधिकांश सोशल मीडिया अपराधों में, आपत्तिजनक वेबसाइट या संदिग्ध के खाते को तुरंत ब्लॉक करने के अलावा, अन्य विवरण विदेशों में बड़ी आईटी फर्मों से जल्दी सामने नहीं आते हैं. इसलिए, 'डेटा स्थानीयकरण' को प्रस्तावित व्यक्तिगत डेटा संरक्षण कानून में शामिल किया जाना चाहिए. केंद्र और राज्यों को साइबर अपराध की जाँच

की सुविधा के लिए न केवल मिलकर काम करना चाहिए और वैधानिक दिशानिर्देश तैयार करना चाहिए, बल्कि बहुप्रतीक्षित और आवश्यक साइबर बुनियादी ढाँचे को विकसित करने के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता है.

राज्य सरकारों को साइबर अपराध से निपटने के लिए पर्याप्त क्षमता का निर्माण करना चाहिए, प्रत्येक जिले या रेंज में एक अलग साइबर पुलिस स्टेशन स्थापित करके या प्रत्येक पुलिस स्टेशन में तकनीकी रूप से योग्य कर्मचारी होने के द्वारा किया जा सकता है. सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम, २००० यह जोर देता है कि अधिनियम के तहत दर्ज अपराधों की जाँच एक पुलिस अधिकारी द्वारा की जानी चाहिए जो एक निरीक्षक के पद से नीचे का न हो. चूंकि जिलों में पुलिस निरीक्षकों की संख्या सीमित है, और अधिकांश क्षेत्र की जाँच उप-निरीक्षकों द्वारा की जाती है. इसलिए, अधिनियम की धारा 80 में एक उपयुक्त संशोधन पर विचार करना और उप-निरीक्षकों को साइबर अपराधों की जाँच करने के लिए योग्य बनाना व्यावहारिक होगा.

प्रत्येक जिले या रेंज में एक अलग साइबर-पुलिस स्टेशन स्थापित करना, या प्रत्येक पुलिस स्टेशन में तकनीकी रूप से योग्य कर्मचारी,

आवेदन, उपकरण और बुनियादी ढाँचे के परीक्षण के लिए क्षमताओं का निर्माण करने की तत्काल आवश्यकता है. 'डेटा स्थानीयकरण' को प्रस्तावित व्यक्तिगत डेटा संरक्षण कानून में शामिल किया जाना चाहिए ताकि प्रवर्तन एजेंसियों को संदिग्ध भारतीय नागरिकों के डेटा तक समय पर पहुँच प्राप्त हो सके.

*****

मनुष्य में अनमोल गुणों का भंडार

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

मानव इस सृष्टि में अनमोल हीरा है.मनुष्य में अनमोल गुणों का भंडार समाया हुआ है, परंतु हम अपनी शक्ति को पहचानने की कोशिश नहीं करते बल्कि हमेशा दूसरों की ताकझाँक करते रहते हैं. हर क्षेत्र में दूसरों से प्रतियोगिता करने पर उतारू हो जाते हैं, कुछ नया करने की नहीं सोचते. अपनी बुद्धि का सकारात्मक उपयोग करने पर अगर हम उतारू हो गए, तो हम सफलताओं का नया इतिहास रच सकते हैं क्योंकि इतनीं बुद्धि कुशलता हर भारतीय में समाई हुई है. बस, जरूरत है उसे पहचान कर निखारने की परंतु हम अपने ही बड़बोलेपन से घिरे रहते हैं, दूसरों की टाँग खींचने में हमें मजा आता है. किसी भी नकारात्मक विस्तारवादी बात का समाधान कर समाप्त करना जैसे हमने सीखा ही नहीं. जबकि भारत माता की मिट्टी में ही गुणों की खान समाई हुई है, जिसे हमें अपनाना है.

अगर हम चुप रहने की बात करें तो बड़े बुजुर्गों की इस पर दो कहावतें हैं पहली बोलत बोलत बड़े बिखात दूसरी अति का भला ना बोलना अति की भली न चुप, अति का भला न बरसना अति की भली न धूप याने पहली कहावत का भावार्थ है, अति बोलने से ही बातें बिगड़ती है झगड़े दंगे फसाद मारपीट हत्याएँ तक हो जाती है इसलिए चुप भली, दूसरी कहावत का भावार्थ अति चुप रहने को भी नकारा गया है याने अन्याय के खिलाफ चुप रहना हानिकारक है. परंतु हमें इसका निर्णय अपने समाज और राष्ट्र के फायदे को देखकर ही लेना है परंतु मेरा मानना है चुप रहने से कई फायदे हैं और सामने वाले को सटीक जवाब भी मिल जाता है बोलने से पहले हमें याद रखना होगा के

(1) बिना तथ्य के न बोले
(2) शब्दों से ठेस न पहुंचे

(3) पवित्र वस्तुओं सेवाओं का अपमान न करें
(4) क्रोध में चुप रहे
(5) मुद्दे से संबंध ना होने पर चुप रहें
(6) शब्दों से किसी को ठेस ना पहुँचे
(7) चिल्लाने से चुप भली
(8) अपमान से न बोलें
(9) जरूरत पड़ने पर सकारात्मक बोलें
(10) निंदा से बचें.

अगर हम चुप रहकर भी अपनी दिमागी ताकत से जवाब देने की बात करें तो, चुप रहना और कुछ समय तक खुद को स्थिर रखना हमको एक अच्छा श्रोता और समीक्षक बनाता है. ऐसा इसलिए क्योंकि जब हम चुप रहते हैं तो हम बोलने की बजाय अधिक से अधिक सुनते हैं और उसका विश्लेषण कर पाते हैं. इससे हम पूरे तर्क-वितर्क को जानने के बाद सही फैसला ले पाते हैं. हम सभी पक्षों को सुनते, समझते और निर्णय ले पाते हैं. चुप रहना हमारे दिमाग को शांत करता है और हमको अच्छा समीक्षक बनाता है हमारे चुप रहने से अनेक बार सामने वाले को सटीक जवाब भी मिल जाता है.

हमारे शरीर का सबसे जटिल हिस्सा दिमाग होता है. ये पूरे शरीर को चलाता है और हमारी भावनाओं को नियंत्रित करता है. ऐसे में जरूरी है कि हम अपने दिमाग को भी व्यायाम करवाएं. जिस तरह शरीर को मजबूत बनाने के लिए शारीरिक व्यायाम जरूरी है, उसी तरह दिमाग को मजबूत बनाने के लिए उसकी ताकत बढ़ाना जरूरी है. मौन रहना दिमाग के लिए एक व्यायाम जैसा ही है और इससे दिमाग की मांसपेशियां तंदुरुस्त रहती हैं. खुद को दुख पहुँचाने या धोखा देने वाले व्यक्ति को माफ करना सबसे कठिन काम है. हालाँकि, यदि हम किसी के साथ अपने संबंधों को सुधारना चाहते हैं, तो उस के लिए माफ करना सीखना भी ज़रूरी है या फिर सीधे तौर पर बीते हुए पलों को भुलाकर, आगे बढ़ने की कोशिश करें. नकारात्मक भावनाओं से निपटना सीखें, दुख पहुँचाने वाले व्यक्ति का सामना करें और अपने जीवन में आगे बढ़ते जाएँ. क्षमा करना पसंद करें, क्योंकि बड़े बुजुर्गों की कहावत भी है क्षमा दान महादान, क्षमा करके भी हम सामने वाले को एक यादगार सजा दे सकते हैं. क्षमा की भावना लेकर, हमको नकारात्मकता को अपने से दूर करने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सचेत और सक्रिय निर्णय करने की ज़रूरत है. यह भावना आसानी से नहीं पनपती. खुद के अंदर क्षमा की भावना उत्पन्न करने के लिए हमको ही इस दिशा में कार्य करने की ज़रूरत है.

लोग अक्सर इस तरह की बातें करते हैं, कि वे उस इंसान को नहीं भुला सकते, जिसने उन के साथ कुछ ग़लत किया है. वे ऐसा मानते हैं, कि अपने अंदर मौजूद दर्द और धोखा मिलने की भावना को भूलना उन के लिए असंभव है. लेकिन लोग इस बात को महसूस करने में नाकाम रह जाते हैं, कि क्षमा करना भले ही हमारी पसंद है, लेकिन अगर हम उस व्यक्ति को क्षमा करने का निर्णय लेते हैं, जिसने हमको कष्ट दिया हैं, तो यदि इस निर्णय से किसी को लाभ होता है, तो वो सिर्फ़ हम हैं और सामने वाले को हमेशा के लिए उस माफी के रूप में एक सजा और हमारा बड़प्पन.

*****

शिक्षक जी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य, लखनऊ

विद्यालय में हमें पढ़ाते शिक्षक जी,
नित्य हमारा ज्ञान बढ़ाते शिक्षक जी.

अच्छे सच्चे मित्र मार्गदर्शक बनकर,
उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ाते, शिक्षक जी.

अनुभव के हैं भरे खजाने शिक्षक जी.
सदाचार के ताने-बाने, शिक्षक जी.

किसी प्रश्न का छात्र न दे पाएँ उत्तर,
तब लगते हैं स्वयं बताने, शिक्षक जी.

हमसे ज्यादा हमें जानते शिक्षक जी,
हमको पुत्र समान मानते, शिक्षक जी.

किसकी रुचि किस विषय में और बढ़ानी है,
मन में अपनी बात ठानते, शिक्षक जी.

प्रेम से सबसे घुल मिल जाते शिक्षक जी,
मान और आदर हैं पाते, शिक्षक जी.

श्रम, अनुशासन, समय, लक्ष्य तक ले जाएँ,
जीवन का सन्मार्ग बताते, शिक्षक जी.

उच्च कार्यसंस्कृति अपनाएँ शिक्षक जी.
नवाचार शिक्षा में लाएँ, शिक्षक जी

ऑनलाइन शिक्षा देने में दक्ष बनें,
तकनीकी क्षमता दर्शाएँ, शिक्षक जी.

*****

विश्व जल सप्ताह

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

विश्व जल सप्ताह चौबीस अगस्त से एक सितंबर में
आर्थिक विकास के साथ-साथ नदी संरक्षण
के लिए नदी और लोगों को जोड़ना है.
अर्थ गंगा परियोजना को गतिशील बनाना है.

हमें शक्तिशाली राष्ट्रीय अभियान चलाना है,
सर्वशक्तिमान मनीषियों को चेताना है.
हमें अपनी नदियों तालाबों को अपनी,
जीवनदायिनी भावना से बचाना है.

नदियों तालाबों को सदैव ही उनकी
जीवनदायिनी शक्ति के लिए सम्मानित किया है.
उस सम्मान को हम मनुष्यों ने
जी तोड़ कोशिश कर बचाना है.

शहरीकरण और औद्योगीकरण है कारण इसका
आधुनिकीकरण और लालच ने सब गँवाया है.
इकोसिस्टम को नष्ट करके
मानवीय सुखचैन सब गँवाया है.

*****

परिवार

रचनाकार- संगीता पाठक धमतरी

भीषण संताप को परिवार हँसते मुस्कुराते झेल लेता है,
परिवार में ममता की छाँव तले बचपन बड़ा होता है.
दादा-दादी, नाना-नानी बच्चों पर जान छिड़कते हैं,
रुठते हैं बच्चे तो मीठी बातों से उन्हें मना लेते हैं.

चाचा-चाची भी आदर्श प्रेम की प्रतिमूर्ति होते हैं,
घर के सभी लोग बच्चों पर स्नेह की वर्षा करते है.
जिस घर में जेठानी-देवरानी एक साथ रसोई बनाती हैं,
उस घर में अन्नपूर्णा भोजन को भोग बनाती हैं.

हँसती खिलखिलाती दोनों एक थाली में खाना खाती हैं.
उस घर में हर रोज होली दीवाली मनायी जाती है.
ननद संग भाभी मजाक करती, छेड़खानी करती है,
बुआ-बुआ कहती गुड़ियारानी फूली नहीं समाती है.

तड़ित झंझावातों को परिवार के लोग सह लेते हैं,
संकट की घड़ी में हँसते मुस्कराते हौसला बढ़ाते हैं.
जिस परिवार में सभी लोग मिल जुलकर रहते हैं,
ऐसे सुंदर परिवार को लोग बैकुण्ठ धाम कहते हैं.

*****

तीजा तिहार

रचनाकार- प्रिया देवांगन, गरियाबंद

आवै मइके मा सबो, माने तीज तिहार.
बहिनी बेटी देख के, कुलकै अंगना द्वार.
कुलकै अँगना द्वार, हाँस के गोठ सुनाथे.
दाई बाबू संग, नवा लुगरा ल बिसाथे.
रोटी पीठा राँध, सुघर सब मिल के खावै.
महके घर परिवार, बहन मइके जब आवै.

करथे पूजा पाठ ला, निर्जल रहे उपास.
बाबा भोलेनाथ हा, हिरदै करे निवास.
हिरदै करे निवास, देव के आसिस पाथे.
जो माँगे वरदान, सफल ओहर हो जाथे.
अँचरा ला फैलाय, शिवा झोली ला भरथे.
बाढ़े पति के उम्र, आस पत्नी हा करथे.

कतरा भजिया अउ बरा, अम्मटहा के साग.
घर-घर मा येहर बने, जागे सब के भाग.

जागे सब के भाग, घरो घर बहिनी जावै.
घूम-घूम के आज, बरा भजिया ला खावै.
जादा खावै जेन, बढ़े ओखर जी खतरा.
तभो जीव ललचाय, खाय बर भजिया कतरा.

*****

मन की प्रसन्नता

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

इस अनमोल सृष्टि में रचनाकर्ता ने मानव में अनेक गुण-दोषों को शामिल किया है. इनका उपयोग करने के लिए बुद्धिमता भी मानव को दी है. अब मानव को अपनी बुद्धिमता का प्रयोग कर अपना जीवन सफल या असफल बनाने की जिम्मेदारी है. प्रसन्नता और सुख दुख भी बौद्धिक क्षमता के आधार पर मानव को खुद चुनना होता है. इसलिए आज हम मन की प्रसन्नता पर उसके गुणों, प्रक्रिया सुजन करने के तरीकों पर चर्चा करेंगे.

अगर हम प्रसन्नता की बात करें तो मन की प्रसन्नता खुद सृजित की हुई दवा के समान है, क्योंकि इसमें सब दुख तो नष्ट होते हैं,जीव अपने कर्म में असफल नहीं होता. बुद्धि स्थिर रहती है. सामाजिक प्रतिष्ठा और गुणों की सुगंध दूर तक जाती है एक अलग हँसमुख व्यक्तित्व की छाया अपने परिचितों सहयोगियों पर पड़ती है. प्रसन्नता ऐसा अनमोल खजाना है, जिसे जितना लूटाएँगे उतना ही बढ़ता जाएगा. खिलखिलाते चेहरे और प्रसन्नता की आँखों में चमक दुर्लभ पूंजी है, क्योंकि प्रसन्नता सुकून से जीने की कुंजी है. यह खजाना तब बढ़ता है जब हम दूसरों की खुशियों में अपनी खुशी को समाहित करते हैं.हमें छोटी-छोटी चीजों में प्रसन्नता, सुख ढूँढने की कोशिश करनी चाहिए, विश्वसनीय मन के भाव की खुशी का भाव अभूतपूर्व सफलता और दूरगामी सकारात्मक परिणाम होता है. आध्यात्मिकता,उदारता,परोपकार सहनशीलता, सहिष्णुता इत्यादि मन की प्रसन्नता के प्रमुख स्त्रोतों में से कुछ हैं, जिनको जीवन में अपनाने की जरूरत को रेखांकित किया जा सकता है.

अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर प्रसन्नता के मूल्यों की बात करें तो प्रसन्नता को मज़बूत टॉनिक माना जाता है. प्रसन्नता दिवस मनाया जाता है. अलग अलग देशों के प्रसन्नता से रहने के क्रमांक बताए जाते हैं, परंतु बहुत हैरानी की बात है प्रसन्नता इंडेक्स में अनेक पूर्ण विकसित देशों के साथ ही भारत भी पिछड़ा हुआ है जो रेखांकित करने वाली बात है. विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2022 में 146 देशों की रिपोर्ट केअनुसार फिनलैंड लगातार 5 वर्षों से प्रथम, डेनमार्क द्वितीय और आयरलैंड तृतीय स्थान पर है.जबकि इस रिपोर्ट में भारत

136 वी रैंक पर है. याने लास्ट टॉप टेन में. इतनी ख़राब हालात जो आज के डिजिटल इंडिया के लिए आश्चर्य की बात है.

प्रसन्नता व्यक्ति का मानसिक गुण है, जिसे व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन के अभ्यास में लाना होता है. प्रसन्नता व्यक्ति के अंतर्मन में छिपे उदासी, तृष्णा और कुंठाजनित मनोविकारों को सदा के लिए समाप्त कर देती है. वस्तुत: प्रसन्नता चुंबकीय शक्तिसंपन्न एक विशिष्ट गुण है.प्रसन्नता दैवी वरदान तो है ही, यह व्यक्ति के जीवन की साधना भी है. व्यक्ति प्रसन्न रहने के लिए एक खिलाड़ी की भाँति अपनी जीवन-शैली और दृष्टिकोण को अपना लेता है. उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता असफलता, जय-पराजय, और सुख-दुख उसके चिंतन का विषय नहीं होता. वह तो अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है. प्रसन्नता मानवों में पाई जाने वाली भावनाओं में सबसे सकारात्मक भावना है. इसके होने के विभिन्न कारण हो सकते हैं: अपनी इच्छाओं की पूर्ति से संतुष्ट होना. अपने दिन-रात के जीवन की गतिविधियों को अपनी इच्छाओं के अनुकूल पाना.किसी अचानक लाभ से लाभान्वित होना. किसी जटिल समस्या का समाधान प्राप्त होना.

प्रसन्नता के बल पर लक्ष्यों की प्राप्ति की बात करें तो, प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है. यदि वह असफल भी हो जाता है तो निराश होने और अपनी विफलता के लिए दूसरों को दोष देने की अपेक्षा अपनी चूक के लिए आत्मनिरीक्षण करना ही उचित समझता है. ज्ञानीजन और अनुभवी बताते हैं कि प्रसन्नता जैसे दैवीय-वरदान से कुतर्की और षड्यंत्रकारी लोग सदैव वंचित रह जाते हैं. प्रसन्न व्यक्ति स्वयं को प्रसन्न रखकर दूसरों को भी प्रसन्न रखने की अद्भुत सामर्थ्य रखता है. प्रसन्नता को प्रभु-प्रदत्त संपदा समझने वाले व्यक्ति ही सदैव सुखी रहते हुए यशस्वी, मनस्वी, महान और पराक्रमी बनकर समाज और राष्ट्र के लिए आदर्श स्थापित करने में सक्षम हो सकते हैं. प्रसन्नता ही सुखी जीवन का मूल मंत्र है. प्रसन्नता अनमोल खजाना है. प्रसन्नता ज़रूर लुटाइए फ़िर देखिए, उसका खजाना अपने आप बढ़ता चला जाएगा. भलाई करना कर्त्तव्य नहीं, आनन्द है. क्योंकि वह प्रसन्नता को पोषित करता है. सबको प्रसन्न करने की शक्ति सब में नहीं होती. प्रसन्नता आत्मा को शक्ति प्रदान करती है. प्रसन्नतापूर्वक उठाया गया बोझ हल्का महसूस होता है. प्रसन्नता शब्द का प्रयोग मानसिक या भावनात्मक अवस्थाओं के संदर्भ में किया जाता है, जिसमें संतोष से लेकर तीव्र आनंद तक की सकारात्मक या सुखद भावनाएँ शामिल हैं. इसका उपयोग जीवन संतुष्टि, व्यक्तिपरक कल्याण, यूडिमोनिया, उत्कर्ष और कल्याण के संदर्भ में भी किया जाता है इसलिए हर व्यक्ति ने इस गुण को अपने में समाहित कर जीवन को सफल बनाने के मंत्र को अपनाना चाहिए.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

आकाश रोते हुए अपने दादा के पास आता है और कहता है- दादाजी-दादाजी, मैं जब भी अपने साथियों से खेलता हूँ और रोज हार जाता हूँ. मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगतातभी दादाजी कहता है-मैंने भी तुम्हें खेलते हुए देखा है तूने बिल्कुल मन लगाकर नहीं खेला है.

क्या फायदा दादा जी? वैसे भी हमारे टीम हारने ही वाला था.

नहीं, तुम्हें आखिरी ओवर में बारह रन बनाने थे. अगर तुम कोशिश किए होते तो निश्चित ही सफलता मिलती.

फिर आकाश कहता है-नहीं दादा जी, वह बिल्कुल नामुकिन था,

लेकिन तुमने हार मान ली यह गलत बात है बेटा,तुमने मुझे उन चीटियों की याद दिला दी.

कौन सी चीटियाँ दादाजी.

हाँ, क्या तुम उन चीटियों की कहानी सुनना चाहोगे आकाश कहता है- हाँ दादा जी कहानी सुनाओ-

बहुत समय पहले एक चीटियों का झुंड एक नदी के पास पहाड़ में रहता था.

यह बहुत बड़ा झुंड था,उसमें कई सौ चीटियाँ एक साथ रहते थे. लेकिन आपस में मतभेद होने के कारण उसके द्वारा बनाए हुए घर,इकट्ठा किए हुए भोजन एवं उनके बच्चों को सांप खा जाता था,सभी चिट्टियाँ परेशान हो जाते थे.उनसे बचने के लिए बार-बार अपना घर बदलते थे लेकिन वहाँ पर भी सांप पहुँचकर चीटियों को हानि पहुँचाता था.उससे परेशान होकर चीटियों की रानी,एक दिन सभी चीटियों का बैठक बुलाकर सभी से कहती है-" भाइयों हम सबके आपसी मतभेद का फायदा उठाकर सांप हमारे घर,इकट्ठा किए हुए भोजन एवं हमारे बच्चों को खा जाता है और हमारे इतने अधिक संख्या होते हुए भी हम देखते रहते हैं,रोने के सिवाय हमारे पास कुछ रास्ता नहीं है.इस कारण हम सबको, आपसी मतभेद भुलकर अपने घर, इकट्ठा किए हुए भोजन एवं बच्चों की रक्षा करनी है आप सबको एक टीम की भांति योजना बनाकर, एक साथ मिलकर सांप का मुकाबला करेंगे तो निश्चित ही हमारे कोशिश से सांप से छुटकारा मिल सकेगा, सभी चीटियां साथी रानी चींटी का सम्मान करते हुए आपसी मतभेद को भुलाकर काम करने का निर्णय लेते हैं.

रानी चींटी के निर्देशानुसार सभी चीटियाँ दल बनाकर बिल में बैठे हुए सांप को चारों ओर से घेर लेते हैं और एक साथ उसके ऊपर सभी चीटियाँ हमला करते हैं,सांप चीटियों के झुंड देखकर किसी तरह जान बचाकर भागता है. सांप को भागते हुए देखकर सभी चीटियाँ खुशी से उछलने लगते हैं अब वह सांप कभी भी चीटियों के बिल के पास नहीं आता,सभी चीटियाँ रानी को धन्यवाद देते हैं जिनके कारण उनकी रक्षा हुई.

बच्चों हमने कहानी के माध्यम से देखा चींटियों की तरह खेल या अन्य कार्यों में,अपने टीम के साथ मिलकर हार का ध्यान नहीं रखते हुए,हिम्मत से कोशिश करेंगे तो निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है. आकाश, दादा जी के कहानी को सुनकर प्रेरणा लेता है और आगामी दिन वह हार की चिंता न करते हुए अपने टीम के साथ आत्मविश्वास से आखरी समय तक खेलते हुए जीत हासिल करता है.

अनन्या तंबोली कक्षा सातवीं द्वारा भेजी गई कहानी

एक बार की बात है एक चींटी का परिवार सैर के लिए निकले थे परिवार में 4 लोग रहते थे मम्मी चींटी, पापा चींटी, बेबी चींटी ,और उसका भाई रोज की तरह वे नदी पार कर रहे थे तब नदी में कम पानी था तो मम्मी चींटी, पापा चींटी और बेबी चींटी ने पार कर लिया लेकिन जब उसका भाई नदी पार करने ही जा रहा था तब पानी बढ़ गया पानी का बहाव ज्यादा हो गया जिसकी वजह से वह बहुत घबरा गया वह रो रहा था तब पापा चींटी ने कहा रो मत बेटा मेरे पास एक उपाय है तुम अपने बगल वाले पेड़ से एक पट्टी तोड़ो और उसे

नाव बनाकर नदी पार कर लो लेकिन वह बहुत घबराया हुआ था तो वह बहुत डर रहा था. जब बहुत देर हो गया तो पापा चींटी ने फिर से कहा मेरी बात मान लो बेटा फिर वह पेड़ से पत्ता तोड़ कर उसे नाव बनाकर नदी पार कर लिया. वह अपने परिवार के पास पहुंच गया पूरा परिवार बहुत खुश हुआ और अपने घर की ओर चले गए. संकट के समय हमें सूझबूझ के साथ काम लेना चाहिए हमें घबराना नहीं चाहिए हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए क्योंकि कोशिश करने से ही सफलता प्राप्त होती है जैसे चींटी ने पत्ते की नाव बनाकर अपने आप को नदी पार करा लिया.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

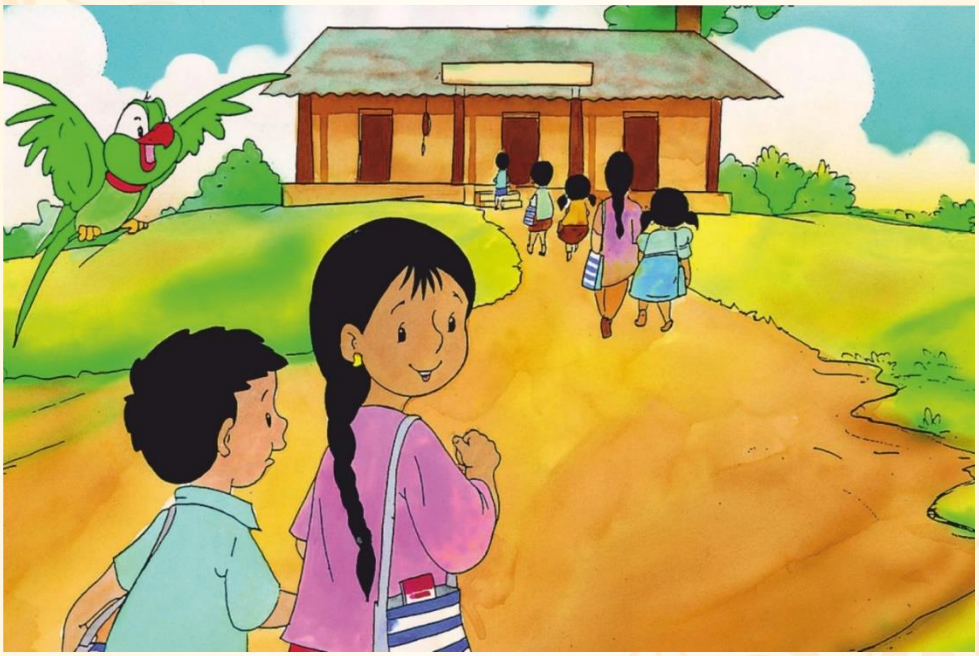

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 र	2		3			4 क			5
6									
					7 स		8		
9 म			10 ती						
		11 अ			12 जा	13		14	
		15							
				16		17 म			
	18 न								
19				20 की			21 प		

बाएँ से दाएँ

1. छत्तीसगढ़ की प्राचीन राजधानी 4. कमरबंध 6. गया 7. स्वर्ग, आकाश 9. माता, मुख्य 10. त्यौहार 12. जांजगीर- चाम्पा जिला किस नगरी के नाम से प्रसिद्ध है 15. समय, सूरज 17. शहद 18. दसगात्र 19. बड़ा 20. कीड़ा 21. मुख्य छत के नीचे अन्न इत्यादि सामग्री रखने लकड़ी का छत/छज्जा

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 द	र	चु	रा		2 त	3 भो		4 स	त
र				5 त		र		र	
6 मी	ता	7 न		8 री	स	हा		9 ल	10 क
		11 र	थि	या			12 पो	ग	री
13 घु	रु	वा			14 ख	खो	री		या
ड़			15 गें	रु	वा		स		
सा			वा			16 ह	भ	क	17 हा
18 र	19 ख	वा	र		20 माँ	द	र		ना
	र		21 से	थीं		र		22 पा	
23 ब	ही		मी			24 क	र	छु	ल

ऊपर से नीचे

1. बादल छटने, धुप 2. खीर 3. खानदानी 4. सदाबहार खेत 5. नर्तक 7. मैनपाट किस जिले मे है 8. भारी, वजनी 9. शमशान घाट 11. विलम्ब 13. प्रसिद्ध धार्मिक स्थल 14. प्रसिद्ध जलप्रपात 16. चांवल का छोटा-छोटा टुकड़ा/कण 18. बिगड़, ख़राब